भूमिका ।

आजकल जगत्मे लड़का होनेकी आशासे बहुतसी माता अपने लड़के का और बहुतसी सती स्त्रियाँ अपने स्वामीका दूसरा विवाह कराके अपने ऊपर आफत लाती है । इसमें भी उसीका एक उपदेशपूर्ण आख्यान है । इसको पढ़कर ऐसे अनर्थ करनेवालोमेंसे कुछ भी सुधरेंगे तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे ।

१-८-११ } गोपालराम गहमरनिवासी.

श्रीगणेशाय नमः ।

डबल बीबी ।

पहिला अध्याय ।

इतना करके भी गिरजा सासको खुश न करसकी । उमरमें गिरजा छब्बीस बरसकी थी, लेकिन् देखनेसे कोई उसे बीससे आगेका नहीं कहसकता । गाँवकी बहुतसी सुन्दरियाँ गिरजाके रूपसे डाह करती थीं । टोला महल्लाकी रमणीमण्डलीमे गिरजाकी सुघराई बखानी जाती थी । सर्वत्र इसके रूपकी बड़ी समालोचना हुआ करती थी । लेकिन् इस बड़ी समालोचनासे गिरिजाका रूप मलीन नहीं वरन् और उज्ज्वल होताजाता था ।

गिरजा सिर्फ रूपवतीही नहीं थी। उसकी ऐसी गुणवती नारी भी संसारमे दुर्लभ है । गिरजा घरका काम काज अकेले करती है। जगत्मे नारी जातिको जो कुछ जानना चाहिये गिरजा सब जानती है । केवल झगड़ा कलह किसको कहतेहैं यह गिरजाको नही मालूम था ।

देवता, ब्राह्मण और गुरुजनोंमें गिरजाकी अचला भक्ति थी । उसका स्नेह और दया इतनी असाधारण थी कि, कभी कभी वह अयोग्य पात्रमे भी पडजाती थी । गरज कि, गिरजा रूपमे लक्ष्मी, गुणमे सरस्वती, पतिभक्तिमे सावित्री, भोजनकार्यमे अन्नपूर्णा थी । लेकिन् हम पहलेही कह आयेहैं इतने गुण होते भी वह सास महारानीको खुश नहीं करसकती । इसका सबब यह कि, गिरजा वन्ध्या थी उसको लडका बच्चा नहीं होता था।

गिरजाके स्वामीका नाम था रामप्रसाद-नारायणसिंह । यह एक कुलीन क्षत्री थे इलाहावादमे इनहार्ट कम्पनीके यहाँ इनको नौकरी थी अस्सी रुपये तनख्वाहपर किरानीका काम करतेथे । अपने गाँवमे इनको कुछ जरजमीदारीभी थी, घरमे खरचवर-चकी कुछ तङ्गी थी नहीं, संसारका सब काम काज सुखसे चला-जाता था यदि गिरजा यथासमय पुत्रवती होजाती ।

पुत्रकेलिये रामप्रसाद उतने लालायित नहीं थे जितनी उनकी माताने इसकेलिये देवी देव मनाये थे, कितने देवालयों और मन्दिरोमे नकदरियाँ की थीं, कितने भँडेरिये और ज्योतिषियोंके पास ठगीगयी थी, गिरजाको कितने साधु, फकीर और संन्या-सियोंकी खाक भभूत खिलायी थी, इसका हिसाव नहीं था लेकिन् जव इतना करकेभी कुछ फल नहीं हुआ तव माताका सव कोप उसी आदरकी पतोहूपर झडने लगा । वेटेका स्नेह सव भूलकर वह पतोहूपरही तरहतरहके तानेवाने और कटूक्ति करने-लगी । यहाँतक कि, वेटेका दूसरा व्याह करनेकी वातभी उठायी।

वेटा रामप्रसाद-नारायण अंग्रेजी पढे है फिर वह अपनी प्यारी गिरजाको प्राणसेभी अधिक चाहतेहैं इस कारण वह माताकी वातपर किसीतरह राजी नही हुए इसवातपर अकसर मा वेटेमे झगडा कलह और कहासुनी होनेलगी ।

रामप्रसादका मकान इलाहावादके पासही करचना स्टेशनके नजदीक एक गाँवमें था । घर पासहोनेके कारण वह सदा रोटी खाकर आफिस जाते और आफिस बन्द होने पर शामको चले आते थे । एक दिन रविवारको सन्ध्यासमय वह घरमें वैठे थे । न जाने उनकी मा कहांसे आकर कहने लगी-"अहारे! उस महल्लेके रावसाहवकी छोटी पतोहूको कैसा सुन्दर लडका हुआहै कि, देखेसे आँख जुडजाती हैं । एक हमारा कर्म है कि, पतोहू बूढी वहिला होगयी

नातीका मुहँ देखनाही नसीब नहीं हुवा, ऐसी बांझके साथ बेटाका हमने व्याह किया कि, एक भी साध नहीं पूजी । यह बँझेलवा मरती भी नहीं कि, बेटाका दूसरा व्याह करके साध मिटाती। अरे फाँसी लगाके काहे नहीं मरजाती रे बँझिया ! फाँसी लगाके मर जा नहीं जहर खाके मर जा।"

इसी तरह मुँह बनाबनाकर पतोहूपर वचनबाण बरसाने लगी ऐसी वरसा बहुधा अब रामप्रसादके आगे ही हुआ करती है। रामप्रसादने बहुत सहा है लेकिन् सहनेकी भी एक सीमा होती है। आज न जाने क्यों रामप्रसादकी सहनशीलताकी सीमासे बात बाहर होपडी। और जलकर बोले—"अरे माई! यह तेरी कैसी अक्ल है। अगर वह बाँझ है तो इसमें उसका क्या गुनह है? इसके वास्ते उसको इसतरह बार बार गाली देना अच्छा नहीं है। अगर उसका कुछ कसूर हो तो उसे गाली दे लेकिन् बेगुनाह नाहक किसीको गाली आली देना क्या?"

रामप्रसादने इसके पहले स्त्रीकी ओरसे माताको जाहिरातकी बात नहीं कहीथी आज अकस्मात् बेटेके मुहँसे ऐसी बात सुनकर मा पहिले कुछ देरतक चुप रहीं। लेकिन् थोडीही देरपर पतोहूको छोड बडे गरजसे बेटेपर पडी। बेटेने जहाँतक बना माताका मान रखनेकी तदबीर की। मातासे जितना बना बेटेकेलिये खूब कुवचन कहे। लेकिन् उससेभी माका कोप नहीं गया अन्तमे अपना सब रक्खा हुआ रुपया पैसा गरम कपड़ा लेकर उसी शामको अपने मायके जानेको तैयार हुई। गिरजाने सासका पाँव पकड़ कर बहुत रोका और रोरोकर मुआफी माँगी, लेकिन् उनकी गरमी नहीं गई वह सब कुछ लेकर बाहर होगयी। गिरजा उनके पीछे २ कुछ दूरतक गयी लेकिन् सासको तोभी लौटा न सकी तब जल्दीसे घर लौटकर स्वामीको कहा "बैठनेसे नहीं

बनेगा जल्दी जाव, गुस्सा होनेपर माजीका चित्त ठिकाने नहीं रहता यह बात तो जानतेहीहो ?"

रामप्रसादने कहा-" सब जानते है लेकिन् हमको अब यह बाते अच्छी नहीं लगतीं फिर इस शामको वह जावेगीही कहाँ ?"

गिरजा-"रात होनेहीसे ऐसा समझकर चुप नहीं रहा जाता हजार हुआ मा ही तो है। तुम जल्दी जाव देर नही करो।"

निदान रामप्रसाद माकी तलासमें चले, यहाँ गिरजा बैठे २ न जाने क्या सोचनेलगी। सोचते सोचते न जाने कहाँसे अन्धकारने आकर उसके हृदयमें घर किया। इधर घरमेंभी धीरे २ अन्धकार बढनेलगा लेकिन् गिरजाका इन बातोंकी ओर खयाल नहीं था, वह दुःखी मनसे अपने नसीबकी बात सोचरही थी। इतनेमें ठाकुरबाड़ीकी आरतीकी आवाज आयी। गिरजा चौंक उठी। अबतक उसके घरमें सँझवत नहीं दीगई थी। दो बूँद आँसू गिराकर गिरजा सँझवत देनेचली।

चिराग जलाने पीछे रामप्रसाद लौट आये। उन्होंने आतेही कहा "वह हमारे कहनेसे नहीं लौटी। हमने बहुत मनाया जोनाया वह किसी तरह नहीं मानती।"

गिरजाने आग्रहसे पूछा-" तो क्या इसीरातको वह मायके चलीगयीं ?"

रामप्रसाद-"नहीं, वहाँ नहीं गयीं। रेखा फूआके यहां ठहरीहै।"

यह "रेखा फूआ" रासरेखा मिसराइनका अपभ्रंश है, यह एक मिश्रवंशकी विधवा बुढ़िया है इनको गाँवके सबलोग रेखा फूआ कहके पुकारते है, उनका मकान रामप्रसादके मकानसे थोड़ी दूर था। इसीकारण गिरजा कुछ वेफिक्रसी होकर सांसारिक काममें लगी।

दूसरा अध्याय ।

रातको नव बजते २ गिरजाने स्वामीको भोजन करादिया । रामप्रसाद बिछौनेपर लेटकर गुड़गुड़ी बजाने लगे । माताके साथ कहासुनी करने बाद बेटेका मन बहुतही दुःखी हुआ है । पतोहू भी बहुत उदास है । इसीसे आज स्त्री पुरुषमे कुछ आमोद प्रमोदकी बात नहीं हुई । दोनों चुप चाप रहे थोड़ीदेरबाद गिरजाने कहा—" तुमसे मैं एक बात कहूँगी । "

रामप्रसादने उसकी बातपर आग्रह करके कहा—"क्या बात है कहो ?"

गिरजा—"कहें तब जब हमारी बात रक्खो । "

राम०—" रखनेकी बात होगी तो जरूर रक्खेंगे । काहे तुम्हारी बात क्या कभी हमने टाली है ?"

गिरजा स्वामीके चरणोंसे पड़कर रोते २ बोली—" तुम एक और व्याह करलो । माजीका दुःख अब नहीं देखाजाता । "

रामप्रसादने धीरे २ गिरजाको छातीसे लगाकर कहा— "नहीं उससे तुमको बड़ा दुःख होगा ।"

गिरजा—"जब माजी खुश होजायँगी और पहलेकी तरह हँसी खुशीसे बोलने लगेंगी तो मैं वह सब दुःख सहलूँगी ।"

राम०—"नहीं ! तुमको लड़का नहीं होता इस बातपर मा जो तुमको बकती झकतीहै यह बहुत अनुचित बात है । मै इसे नहीं सहसकता । इसमे तुम्हारा कोई कसूर नहीं है ।"

गिरजाने स्वामीकी गोदसे शिर उठाकर आँसू पोंछा और कहा—"नहीं माजी जो हमको बकती हैं उसमे हमारे नसीबका सब दोप है माजीका कुछ कसूर नहीं है । जब मै अढ़ाई बरस की था तभी मेरी मा मरगयी । माका प्यार मुझे नसीब नहीं हुआ । लेकिन् तुम्हारे साथ व्याह होनेहीसे मेरा वह दुःख

जातारहा । आज मानो मा मेरे नसीब दोपसे मुझे ऐसा बकती हैं लेकिन् इस बारह बरससे जो उन्होंने मुझे पालाहै और जिस तरहसे जतन कियाहै वह मैं नहीं भूल सकती ।"

राम०—" वह सब माका स्वभाव क्या मै नहीं जानता ? लेकिन् आज कल लड़का नहीं हुआ--लडका नहीं हुआ करते २ उसका मगज इतना खराब होगयाहै कि, कुछ कहते नहीं बनता।"

गिरजा--"मैं तो इसीवास्ते कहतीहूं कि, एक और व्याह करलो ।"

रामप्रसादने इसबार गिरजाके मुँहकी ओर कुछ देरतक देख-कर कहा "नहीं प्यारी ! तुम जैसी स्त्री घरमे रहते मैं और व्याह करूँगा ? लड़का नहीं हुआ तो न सही हमे लड़का नहीं चाहिये।"

गिरजा—" तुमको नहीं चाहिये लेकिन् मा तो चाहतीहैं माका चाहना भी तो पूरा करना तुम्हें चाहिये ।"

राम०--" और तुम्हारे लिये भी तो मुझे दुःख नहीं सिरजना चाहिये ?"

इतना कहते कहते रामप्रसादकी ऑखे अँसुआगयीं । कण्ठ भारी हो आया मुँहसे और कहते नहीं बना तब गिरजाने कहा--" माकी बराबरीमे हमे क्यों लेतेहो ? मैं तो उनकी दासी हूँ । तुम तो आजही चाहो तो तुम्हारेवास्ते बीसो स्त्रियॉ तैयार हैं, मैं उनमेसे एक दासी हूँ । शास्त्रमे लिखाहै कि, माता पिताको खुश करनेसे सब देवता खुश होतेहै । जो बेटा मा बापको खुश नहीं कर सकता वह और किसी पुण्य कर्मका फलभागी नही होता । उसका कभी भला नहीं होता । जबतक माको खुश नही करोगे तबतक मंगल नहीं है । जब तुम्हारे अमंगलकी बात है तब मैं भला क्यों चुपरहूं ?"

रामप्रसादसे अब न रहागया । रोकर कहनेलगे—" तुमको

हमारे अमंगलका सोच है और मुझे तुम्हारे अमंगलका नहीं ? क्या मैं ऐसा पाखण्डी हूं ?"

स्वामीका आँसू पोछकर डबडबायी आँखोंसे देखतीहुई गिरजाने कहा-"माका दुःख तो देखना चाहिये ?"

राम०-"मा बेअक्ल है उसको समझ होती तो तुम्हारे साथ ऐसा काहे को करती ?"

गिरजा-"वह हमारे नसीबकी बात है उसे मत उभाडो। बात यह कि,तुमको एक लडका होगा तो माही नहीं हमकोभी तो खुशी होगी। तुम माजीके एकही लडके हो। तुमको लडका नहीं हुआ तो मानों ससुरजीका वंशही नहीं रहेगा।माजी कुछ अनुचित नहीं कहतीं. हमको खाली अपने सुखकी ओर नहीं देखना चाहिये।'

राम०-"वंश नहीं रहनेसे नुकसान क्या है।"

गिरजा-अकचकायी और आँसू पोछकर बोली "क्या ? ऐसी भी कोई बात कहता है ? पितरोंको पानी कौन देगा ?"

रामप्रसादने मुसकुराकर कहा-"अगर उस स्त्रीसे भी लड़का नहीं हो तो पितरोंकी क्या हालत होगी ?"

इस बातसेभी गिरजा चुप न रही उसी वक्त उसने कहा"आगे क्या होगा सो कोई नहीं जानता। पुत्र हुए बिन किसीका पितृ-ऋणसे उद्धार नहीं होता। तुमको उसके वास्ते तदबीर करके अपने भरसक तो देखना जरूर चाहिये।"

इस जवाबसे रामप्रसाद चुप होगये। थोडी देरतक न जाने क्या सोचते रहे। फिर लम्बी सांस लेकर बोले "अगर दूसरा ब्याह करनेसे तुमकोभी खुशी है तो खैर तुम्हारी खुशीसे हम करलेंगे लेकिन् यह ब्याह स्त्रीलाभके लिये नहीं केवल पुत्रलाभके लिये होगा। किसी जन्ममें हमको तुम्हारे सिवाय कोई दूसरी नारीकी कामना न हो, हम सदा परमेश्वरसे यही माँगतेहैं"

गिरजाने आनन्दके मारे गद्गद् होकर कहा—"मुझे अपनी दासी समझकर सेवामे तुम राखियो एक नहीं सौ व्याह करलो तो भी हमको कुछ चिन्ता नहीं है ।"

रामप्रसादसे अव रहा नहीं गया । वारवार स्त्रीका मुंह चूमने लगे । और खुशी मनसे वोले "प्यारी तुम्हारे इन्हीं गुणोंमें पित॰ रोके पिण्डलोप वा नरकको नहीं डरता । न माताके वकने झकने और रोने गानेकी परवाह करता ।"

इसी तरह वह रात कटी । सवेरा होतेही गिरजा स्वामीको सासके यहाँ जानेकी वात कहकर घरके कामकाजमे लगी ।

आज सोमवार है सवेरेही खा पीकर रामप्रसादको कामपर जाना चाहिये । प्रातःक्रिया करतेही उनको आठ वजगये । इस कारण वह माताको वुलाने नहीं जासके । जल्दी जल्दी भोजन करके स्टेशनपर आये और गाडीमें वैठकर इलाहावाद आफि-सको रवाना हुए ।

गिरजा काम काजसे फुरसत पायी और सासको वुलानेके लिये पहिले एक नौकरानीको भेजा । थोडी देरवाद उसने आतेही गरजकर कहना शुरुअ किया—"काहे ववुई ? हमन कां गरीव आदिमी हई तेहीसे कां वांपरे वांप ! हमें देखीं केउंतो खंखुऑ दौरीं । कां हंमर्नी कां ईजत नाई हॅउएं कां दां दां ! अच्छा सूरं-जनारांयन जानें हॅमके ऐसे नहींन गूंनलीं हंतं उनकरं गुंमान नाहीं रहीं ।"

नोकरानीसे और कुछ पूछते नहीं वना तौभी वह अपना गला तेजही करतीगयी । गिरजाने रोकर कहा—"अरे चुपरे झुनियॉ चुप रह इतना चिचियाती का है ? माजी नाराज होके गयी हैं उनको वुलाने गयीथी इसीसे वह दिकिया दौडी होगी गुस्सामें कुछ कहीं तो का तेरे शरीरमे फोडा पडगया जो इतना गरजनेलगी।"

दासीका नाम झुनियाँ था। सब शब्दोंको नाककी सानपर चढाकर बोलना उसका स्वाभाविक था। अबकी सुर बढातीहुई फिर निनिनाकर बोली–"हं होहँ हँस जॉनीऊँ हिंहनीहँ वीसंजो तोहरोमने आवेत देतहँ। गरीव पॅर संव केहूं चोट करेला।"

गिरजा–"चाहे तुम जौनी समझो मैं तुम्हे कुछ भोनङ्गस नही कहती।"

हाथ हिलातीहुई झुनियां फिर बोली–"ऑनाहींके कहेना तूंत झमीरींत छिनकंत चॉटूं केंहूकं पेट कुंलकुंलाकेई चुंरुंगे।"

गिरजा–"अच्छारे अच्छा तोको भूख लगीहै तो सीधे काहे नहीं कहती। आ भात देतीहूँ खाले।"

झुनियॉ मालकिनके आगे वहुत मुँह नहीं चला सकती थी, क्योंकि एक वात कहनेपर वह दश सुना देती थी। लेकिन् झुनियॉ भी चुप रहनेवाली चीज नहीं है वह सासका वदला पतोहूसे मय सूदके चुकालेती थी। इसी तरह आज झुनियॉका इस घरमें तीन चार वरससे गुजारा होरहाहै। ऐसाए हो तो इसका किसी धरमे एक महीने अधिक रहना नहीं होता।

लेकिन् आज झुनियॉ अपने अपमानका पूरा वदला गिरजासे पाये विना भी शांत होगयी। क्योंकि पेटमे भूखदेवीका चिराग जल रहाथा, इससे अपमान न जाने कहाँ डर कर भागगया। झूना आदि सवको खिला पिलाकर ठीक दुपहरियामे गिरजा सासकी खोजमे चली।

तीसरा अध्याय।

गॉवकी दक्षिण सीमापर रेखा मिसराइनका घर है रेखाका जगत्‌मे कोई जीता नहीं है लेकिन् वह अपने एक वहन वेटेकी वात सदा कहाकरती है। सुनते है रेखाकी वहनके लड़के इलाहा-वादके मुट्ठीगञ्जमे रहते हैं लेकिन् हम लोगोंने इलाहावादमें

उनको कभी नहीं देखा सुना न उनके धनसम्पत्तिका पता पाया । मिसराइन एक छोटेसे घरमें खाना बनाती थी और उसीसे लगे एक खँडहरमें लिया पात फेंकतीथी रेखाको धननामें कठवत और बंसनापें फूका जो जो कुछ कहिये सो नहीं था । खरीद बिक्री दूर दलाली अगुआई वगैर: सब काम रेखा करती थी । और इन्हीं सब रोजगारोंसे उसका गुजारा होताचला जाताथा । रेखामें एक मोहनी शक्ति थी उससे वह बाल वृद्ध वनिता सबको हाथमें रखती थी । एक अनाथा विधवा होनेपर भी गॉवमें उसकी अच्छी चलतीथी । लेकिन् रेखा किसी गरीब दुखियाकी दो स्त्री नहीं रखती थी, जिनके घरमें लक्ष्मी है उन्हींके साथ रेखाका स्नेह सौहृद्य है ।

इसीकारण रामप्रसादकी मासे रेखाकी गाढी मिताई थी । जब वह बेटेसे बिगडकर रेखाके घर आयी तब उसने बड़े आदरसे उनका स्वागत किया था । उनका मुँह देखतेही चतुरा रेखा ताड़-गयी थी कि यह घरसे बिगडकर आयी है । जब माताके पीछे लगे रामप्रसाद पहुँचे और मा बेटेमे जो वहाँ खुल्लमखुल्ला बाते हुई उनसे माता पुत्रके बिगाड़का कारण भी रेखाने अच्छी तरहसे समझ-लिया था । बहुत कुछ विनय करके भी जब रामप्रसाद माको घर न लौटासके तब उस दिन वह रेखाहीके घर रही ।

दूसरे दिन दो पहरको रेखाके घर गॉवकी अनेक रमणियोंका समागम हुआ । उनमें नवीना, प्रवीणा और वृद्धा सब तरहकी स्त्रियाँ थीं । भोजनके बाद रेखाके घर सदा इसतरह स्त्रीरत्नोंका समाज लगता था । घर किसी मरद मानुसके न रहनेसे मानों गॉवभरकी रमणियोंकी यह श्रद्धा होगई थी । गॉवके स्त्रीमहल्की समालोचना इसी सभामे होतीथी । आजभी उसीतरह की बातें चलने लगीं । समागता स्त्रियोंमे कोई २ यहाँ

भी काममें लगी है। कोई बुढ़िया रूई नोछतीहुई गप्पकर रही है। कोई प्रवीणा सीतीहुई चित्त देकर उसे सुनरही है। एक नवीना गुलूबन्द बीनरही है। उसके पासही बैठकर एक बुढ़िया उसकी शिल्प चतुराई निहार रही है। और एक प्रौढ़ा अपने लडकेको स्तनपान कराती हुई गाँवके एक क्षुद्र परिवारिक घटनाको पहाड बनाकर बातका बतंगड कररही है। लेकिन् अबोध शिशु उस घटनाको न समझ कर बीच बीचमे उसे विघ्न कर रहाहै। और इसकारण वह स्नेहमयी' मातासे ताडना और हलका पतरा थप्पडभी भोगकर् रहाथा। और स्त्रियोमें एक बीचमें बैठी सुपारी कतर रहीथी बाकी सब बेकाम बैठीथीं।

इतनेमे एक और प्रवीणा रोती २ यहां आपहुँची। उसके आतेही गृहकर्म्म, कथा कहानी और समालोचना सब बन्द होगई। सबकी सब चुपचाप प्रवीणाकी ओर देखने लगीं। रेखाने सबसे पहले सवाल किया—"काहे खेदुकी मा काहे ?"

इस सवालके बाद सभासे सवालपर सवाल होनेलगे "अरे खेदुकी महतारी काहे रोती है ?" "खेदू अच्छा तो है न ?" "खेदुवोको कुछ हुआ ?"—"जानपडाहै होतेही मरगयाहै ?" "कि मराही निकलाहै ?"

खेदूकी माने समझा अब किसका २ जवाब देना चलो, रोनेहीकी मात्रा दूनी करदी। बस अब क्या था उसके रोनेसेही सबका जवाब होगया। सबने समझ लिया कि, कोई दुःखदायी घटना घटी है।

चारों ओरसे "ओहोरे!" "अरे रामरे!" "भगवान् ऐसा निर्दयी है रे ?"—"रो मत रो मत।"—"क्या करो बहन सब सहनाही होताहै" इत्यादि सम्बोधन वाक्य बरसने-लगे। किसी किसीने खेदुकी माके साथ अपनी आँखोंसे भी आंसू बहा दिखाये

लेकिन् अवतक खेदूकी माके रोनेका ठीक सवब किसीने नहीं जानाथा ।

कुछ देरतक रोनेका सुर पूरा करके उसी आवाजमे खेदूकी माने शुरूअ किया । "अरे बहन देख तो नसीव अवकी भी वेटीही आयी है ।"

इतना कहने पीछे फिर हो हो करके रो उठी । रेखा विपद् जान शङ्कित हो सुर मिलाकर वोली—"अरे ! दो हो चुकी थीं फिर उसपर भी वेटी हाथरें काम जहां जहां लाव लाई तहां तहां नरस ।"

पाठक ! रेखाने जिस सुरमें कहा उसको हम लिखनेमे समर्थ नहीं हैं । लेकिन इतना कह सकते हैं कि किसी अपनेके मरेपर भी उसको ऐसा दुःख न होता जैसा इस वक्त उसने जताया । क्याहो तभी तो वह सवको अपनाये रहती थी ।

खेदूकी माको रेखाकी वातें ऐसे मनकी हुई कि,उनका शोक-सागर फिर लहरा उठा । अव रोरोकर कहने लगी—"इतनी दवा खिलायीं । इतने देवी देवके यहां नकदारियॉ कीं तौभी लडका नहीं हुआ । या भगवान् ऐसा नसीव किसका होगा ! "

इतना करतेही रुनिया नामकी एक प्रौढा वोल उठी—"हाँ रे वहन हॉ ! पहलेही वेटी भयेसे कमर मसकजाती है फिर तो ऊपर तीन तीन वेटी होगयीं अव भला इस विपद्का क्या ठिकाना है?"

रूनाका सुर थम्हतेही थम्हते उसीके पासकी वैठीहुई कदमा फूआ वोली—"अरे काहेहो ? वेटी का माहुर है । आजकालके जमानासें वेटासे को सुख पावेहै । हमारेही तो लडका है कौन सुख मिलताहै भला मरते २ भगवान्ने भगियाको हमारे पेटमें उपजाया था जिससे आजतक जिनगी कटीजाती है और जात वची है नहीं न जाने कवना कवना जातिका भात खाती । "

खेदूकी माने फिर आँसू पोछकर कहा—"ओ फुआ! कहां की बात करतीहो? तुम्हारे जैसा नसीब हमारा कहाँ इन तीनको व्याहते व्याहते तो छानपर कराइन नहीं वचीं।घर भीत सब विकजाई।"

इतनी देरतक रामप्रसादकी मा अपना दुःख दवाये वैठी थी अब उन्होंने अपना पुरान उघारा और कहनेलगी—"अरे राम रे! हमारे रामप्रसादको एकठो वेटा होजाती तो मैं उसीसे सन्तो करती।"

रेखाने तुरंत लम्बी सॉस लेकर कहा—"नहीं रे वहन नहीं।वेटीके वास्ते वर नं मांगियो!,जव रामप्रसादके हाथमें लडका लिखाहै तव फिकर क्या है। लडकेका व्याह करदे देख वरस दिनवाद नाती पाती है कि नहीं?"

खेदूकी माने अव ऑसूका सोता छोडदिया और साथ ही साथ अपनी लम्बी कथा कहनेलगी—"अहारे! हमारी पतोहूको कितना दुःख हुआ एकवार पॉडेजीने पत्रा देखके कहाथा कि, लडका जरूर होगा सो उसको भी हम लोगोंकी तरह पक्का विश्वास था। लडकेभी मिठाई वॅटनेका भरोसा करके दालानमें दौडते कूदतेथे, खेदू वेटेका मुँह देखनेको खन भीतर आताथा खन वाहर जाताथा, खन ऑगनमे पहुंचता था इतनेमे वच्चा गिराहुथी वडो सेयानिन! उसने जाना कि वेटी कहनेसे क्या जाने पतोहू वेहोश होजाय झट कहदिया वेटा हुआ। वस लडकोंने सच जानकर शंख वजादिया वाहर सोहर उठनेलगा। खेदू मारे खुशीके फूलगया वचवा खुशी खुशी भीतर आया। मुझे सुनकर जो खुशी हुई वह मैं क्या कहूँ। दौडकर भीतर गयी। रामराम! वहॉ गयी तो वही फूटा नसीव फिर वेटीकी वेटी। खेदूतो वेटा जानके ऑख फाड फाड देखरहीथी।

हमारे जातेही पूँछनेलगीं काहे माह का हुआ ? हमको तो ठीक-नही मालूम भया मैं बोलउठी तेरा जैसा नसीब है वैसाही हुआहै। इतना कहतेही सरबनास होगया दादा !"

रेखा-"अरे फिर सरवनास कैसा बहना इसके वढके और सरवनास क्या होगा ?"

खेदूकी माने आंसू पोछकर फिर शुरूअ किया--"का कहीं बहन ! खेदूबो सुनतेही अचेत होगयी हमसे तो कुछ बना नहीं वोही इस अपाने मुँहपर पानीओनी डालकर चेत कराया । सबकी खुशीपर पत्थर पडा । सब अपने अपने घर चलीगयीं । तब खेदूको सूखमुँहे देखके बहन ! वहाँ रहते नहीं बना इसीसे भागती आयी हूँ ।"

रेखाने प्रबोध देकर कहा-"अरेरे ! वह दुःख का बहन देखा-जाता है ? अच्छी बात करी जो चली आयी ऐसी विपत्तिम बहन घरदुआर अच्छा नहीं लगता । देखो बहन ! रामप्रसादकी मा दुःखके मारे घरसे निकल आयी कलसे यहीं पड़ी है ।"

इतनेमे धीरे एक नयी स्त्री आकर वहॉ खड़ीहुई । उस समय सबकी ऑख उसपर पड़ी । उसके साथमे एक और स्त्री थी । लेकिन् वह घरमे न जाकर बाहरही खड़ी रही ।

यह नयी आगन्तुका और कोई नहीं हमारे पाठकोंकी परिचिता वही गिरजा है साथमें वही मुखरा झुनियॉ है ।

पतोहूको देखकर रामप्रसादकी माका मुँह गम्भीर हुआँ । रेखाने "आ बेटी आ" कहकर गिरजाका आदर किया । यहॉ स्त्रियोंका बड़ा झमेला देखकर गिरजा बहुत सकुचायी । गृहस्थकी कुलवधू होकर इतनी अपरिचिता स्त्रियोंके कैसे आकर खड़ी होगी सबके सामने कैसे क्या कहकर साससे क्षमा माँगेगी ? गिरजा सिर नीचे करके यही विचारनेलगी कुछ देरबाद और

बात छोड़कर गिरजा बोली "माजी ! घरे चली ! बहुत बेरा भयी रसोई जुडारही है ।"

रामप्रसादकी माने अपना गम्भीर मुँह और गम्भीर करके कहा "हमारे वास्ते किसीको रसोई जुड़वानेका क्या काम है ? हमको एक पेटका कोई नहीं होगा तो भीख माँगके भरलूंगी मैं जिसके भलेको करतीहूँ जब वही नहीं समझे तो उनके साथ रहकर संसारी बननेसे का काम है ?"

इतना कहतेही सासकी आँखोंमे पानी आया । गिरजासे अब रहा नहीं गया । सासका पाँव पकड़कर रोने लगी । यह देखकर बहुतोंको दया आयी । कदमीने कहा—"जा बहन ! पतोहू मनाने आयीहै । अब तुम्हें नाराज नहीं होना चाहिये घर जाव ।"

रामप्रसादकी मा—" नहीं बहन ! अब हमे उस घर दुआरसे मतलब नहीं है"

गिरजाने अपने आँचलसे आँसू पोछकर कहा—"माजी ! मैंने बहुत विनती करके उनको दूसरा व्याह करनेपर कल राजी कियाहै । माजी कनिया ठीक करके एही महीनामे व्याह करदो ।"

सासने इतनी देर बाद पतोहूके मुँहकी ओर देखा गिरजाकी बात सुन कर औरसब स्त्रियाँभी उसीकी ओर देखनेलगीं । अब रखाका मुँह फूटा—" देख बहन ! मै कहतीथी कि नहीं कि तुम्हारी पतोहूसी लछिमी किसीके नसीब नहीं होती । हजार हुआ तो क्या आखिर कुलीनकी बेटी तो है । अच्छा बेटी तुमने राजी किया है तो कनियाकी कमी नहीं है कहो तो मै आजही लाकर खड़ी करदूं ।"

अब सासका गंभीर मुँह कुछ प्रसन्न हुआ । राहुग्रस्त पूर्णचन्द्र मानो ग्राससे छूटा । गिरजाने रेखासे कहा—"तो फूआजी जल्दी कनिया ठीक करलो ।"

सासके होठोंपर हँसीकी रेखा दीखपडी । अब उनसे रहा नहीं गया चट बोलउठीं—" अरे उसदिनवाली बात ठीक करदो तो फिर और कहीं ढूंढनेका काम नहीं है । वैसी सुन्दर पतोहू हमको और नहीं मिलेगी ।"

रेखाने सिर और हाथ एकसाथ हिलाकर कहा—"अरे हाँ बहन ! अच्छी याद दिलायी । कहा ! लडकी क्याहै मानो उछात देवी है । और वह सब भी व्याहके वास्ते हाथ धुनते है । यह बात सुनके तो वह फूले नहीं समायँगे । काहे कि, कुछ करज गुलाम नहीं करना पडेगा । बहन आजके जमानेमें बेटी बियाहना हँसी खेल नहीं है । कपालके बाल बाल बिक जाते हैं । आजही मै खबर लाऊँगी ।"

कदमी इतनी देरतक चुपचाप सुनती थी । रेखाकी बात पूरी होतेही बोली—"अरे लडका हो या नहो बहन ! ऐसी सोनेकी पतोहू रहते तुम और पतोहू काहेको चाहती हो ? फिर दूसरे विवाहपर नातीका मुँह देखने को मिले चाहे नहीं मिले लेकिन् दोनो सौतका झगडा तो रोज सिरपर सवार रहेगा । सौतके जलनसे यह लछिमी पतोहू भी काँटा होजायगी । न जाने रामप्रसादकी मा ! तुमको किसने ऐसी अकल दी है ?"

रामप्रसादकी माका मुँह फिर भारी हो आया । कदमीने इतनी बात कहकर मानो रेखाके रोजगारमें भाँजी मारी । उसने मुँह फिराकर कहा "जिसको जो अच्छा लगताहै वह वही करेगा । इसमें बाहरी आदमियोंके बात करनेका क्या काम है ?"

बात उसने कदमीपरही कही थी लेकिन् रेखियाका जवाब देनेको फिर कदमीने साहस नहीं किया । रेखाको जो पहँचानता है वही उससे डरताहै ।

कदमीको उस बारेमे बेजवाब होते देखकर रेखाने फिर कहा

उभाडा और रामप्रसादकी मासे कहा—"जान पडताहै अभी इसने खाया नहीं है ऐसी पतोहूको अब मत दिक करो । तुरंत घर चली जाव ।"

रेखाको अकेलेमे लेजाकर बहुतसी बातें कहने पीछे सास पतोहूको लेकर अपने घर लौटगयी ।

चौथा अध्याय ।

रामप्रसादकी माकी मनसा पूरी हुईहै । आज बेटेको दूसरी शादी है कन्याभी मनके अनुसारही ठीक हुई है । आज रामप्रसादकी माके आनन्द की सीमा नहीं है ।

रेखाही इस ब्याहकी अगुवाइन और सब जोड तोड मिलानेवाली है । आज उसका पांव जमीनपर नहीं पडता । गिरजा आज बहुतही व्यग्र है । ब्याहकी सब तैयारी अपने हाथसे करती है । उसके मनमे भी सरसों भर शोकका निशान नहीं है । घरमें लोगोंकी आवाजहीके मारे खडा होनेको जगह नहीं मिलती । आज आने जानेवाले भी बडे आनन्दित हैं । गाँवकी स्त्रियोंसे आज रामप्रसादका घर गुलजार होरहाहै । उनकी खुशी देखकर आज रञ्ज जमुनापार भाग गयाहै ।

हिन्दूके लिये विवाहके उत्सव समान और उत्सवही क्या है ? रामप्रसादको एक सद्गुणी भार्य्या मौजूद है तो भी दूसरी शादी करेंगे इसीके आनन्दमे आज गाँवके लोग फूले नहीं समाते सबका मन आज प्रसन्न है केवल जिसका ब्याह उसीको खाँड़ाबाराकी मसल देख कर हम चकित हैं आज जिसकी शादी है उसीका मुँह इतना विषण्ण क्यों है ?

रामप्रसादके मनमे आज कुछभी खुशी नहीं है । दुखीमनसे अपनी दशाका सोच कररहेहैं । आज उनके अनेक सङ्गी साथी उनके घर आये है वह आज खुशीके मारे तरह तरहकी हँसी

दिल्लगी कर रहे है । रामप्रसाद बाहरी उन दिल्लगियोंपर नाखुश न होकर भी भीतरसे बहुत नाराज हैं समय समय बाहरी हँसी हँसनेपर भी जीमें एक बडे दुःखके पाले पडे है ।

सन्ध्याको ही व्याहका मुहूर्त है । समय समीप जान वह सब दुःख मनहीमे दबाये हुए रामप्रसाद दूलहका साज पहननेको भीतर गये ।

लेकिन् भीतर जाकर उन्होंने जो कुछ देखा उससे उनकी आँखोके आँसू नही थम्हे । उन्होंने देखा कि, गिरजा अपने हाथसे उनके व्याहका डलवा वगैरह सब खुशीमनसे सजा रही है। रामप्रसादको देखतेही दूलहका साज पहनाने चली । हा! वह हाल देखकर रामप्रसाद अधीर हो उठे । आँखोसे वेटाके आँसू वहचले।

रामप्रसादकी आंखोके आँसू देखतेही भीतरकी स्त्रीमण्डलीका आनन्द तरंग थम्हगया । हम सची बात नहीं छिपावेंगे । रामप्रसादके आँसू देखकर गिरजाकी आंखोमे भी आँसूके बूँद हमने देखे । लेकिन् उसे और किसीने नही देखा । वेटाकी यह हालत देखकर माता बहुत रंज हुई । मारे कोपके फूलकर कहने लगी—"बहुत वेटा जहानमे है लेकिन् ऐसा तो नहीं देखा दादा । हँसी खुशीकी समइयामे कोई आँसू गिराताहै ? भला हमारा तो शादी विवाहका साध पूज गयाहै लेकिन् जिसकी लडकी लाना है उसको यही पहली शादी विवाहका मंगल दिन है, फिर गांवके गोयडे समधियान है । वरात कुछ बडी दूर नहीं है यह वात थोडे छिपी रहेगी । मै किसकी किसकी जीभ वन्द करूंगी । वह लोग सुनेगे तो क्या कहैंगे ।"

रामप्रसादने सकुचाकर कहा—"क्या करूं मा ! मै जानके थोड़े आँसू गिराताहूँ । आज न जाने काहे मेरी आँखका आँसू थम्हताही नहीं" ।

रेखा फूआने जवाबके खेतमे उत्तर कहा-"क्या कहीं बेबोल तो रहा नहीं जाता । बेटा तुम तो पढ़े लिखे हो कुलीन क्षत्री हो व्याह जितने चाहो कर सकतेहो कुछ रफीकोंका काम तो है नहीं । तुम्हें कोई कैद थोड़े करताहै ? ।

रामप्रसादने मनमे कहा "कैद करना तो इससे अच्छा" फिर प्रगटरूपसे कहा- "अच्छा फूआ अब मैं आँसू नहीं गिराऊँगा जो काम करना हो जल्दी हमसे करालो ।"

अब फिर किसीने कुछ नहीं कहा । सब काम जिसमें जल्दी हो इसीका सबको ख्याल रहा लेकिन् स्त्रियोंमें फिर वैसी खुशी नहीं देखनेमें आयी ।

बारात गयी, मीलभर भी दूर जाना नहीं. था । सब कुछ रीतिके अनुसार होकर शुभ लग्नमे कि, अशुभमे सो भगवान् जाने, रामप्रसादका व्याह उसी रातको होगया । दूसरे दिन नयी दूल्हन लेकर रामप्रसाद घर आये । गिरजा तावडतोड कन्या उतारने दौडी लेकिन रेखाकी बात सुनकर थम गयी और अलग खडी रही ।

रेखाकी बात और कुछ नहीं थी उसने गिरजाको जाते देख-कर कहा-"अरे तू कहाँ कनिया उतारने जाती है ? नहीं जानती सौतसा दुश्मन् दुनियामे और कोई नहीं होता ? तू तो सौतहै तुझे कनिया नहीं उतारना रहने दे सास उतार लेगी ।"

रेखाकी बातसे गिरजाको बड़ी पीड़ा जान पड़ी । जो बड़े साधसे कनिया उतारने जाती थी रेखाके वचनवाणसे विद्ध होकर रुकगयी रातभर कामके मारे उसे नींद नसीब नहीं हुई थी तौ भी सबेरेसे उठकर वर कन्याके स्वागत की तैयारीमे बैठीथी ।

जो हो रामप्रसादकी माने ही वरकन्याको उतारा लेकिन् किसी तरह कन्याको गोदमें न लेसकीं । क्योंकि कन्या तेरह बरसकी थी और सब अंगभी भरा पुरा था । निदान उसको

सवारीसे उतार कर पैदलही भीतर जाना पडा लेकिन् गिरजासे यह देखा नहीं गया । उसने दौडकर गोदमे लेलिया और सब काम यथारीति होने पीछे वरकन्या घरमें लायी गयीं ।

यथासमय फूलशय्या पाकस्पर्श प्रभृति शुभ कार्य समाप्त होगये जैदिनतक नयी दूल्हन सासरे रही, गिरजाने खातिर मान करनेमे कुछ भी उठा नही रक्खा । इन दिन वस्तुतः गिरजाने सब काम काज छोड कर नयी दूल्हनकी सेवा शुश्रूषा की लेकिन् नसीबकी कौन कहे इसपर भी रेखा आदिने कई तरहकी बाते उडायीं । क्योंकि सौतको ऐसा आदर करना भी उनकी आंखोमें बुरा लगा ।

व्याहके बाद रामप्रसादकी माको भी बडा आनन्द हुआ । पहले व्याहमे जो खुशी उनको हुई थी इसमे उससे भी बढ चढके खुशी हुई । रामप्रसादकी आंखोमे भी अब आंसू नहीं है । लेकिन् हृदयमें कुछ आनन्दका तरंग भी नहीं है । वह मानो पहलेसे कुछ गम्भीर हो उठे हैं । और सदा गुम सुम रहते है । आँधी तूफान आनेके पहले जैसे जगत्मे शान्ति छाजाती है रामप्रसाद भी वैसेही शान्त हो रहे है ।

पाँचवाँ अध्याय ।

समय किसीकी इन्तिजारी नहीं करता उसको विराम है न विश्राम । वह सदा एक भारसे बीतता जाता है चाहे कोई राजासे रङ्क हो चाहे भिखुआ तेलीसे राजा भोज हो उसको किसीकी कुछ परवा नही । चाहे अन्धेरा हो चाहे उजेला, गरमी हो चाहे बरसात समयको कोई रोक नहीं सकता । दाम देकर जगत्में सब खरीदा जासकताहै, लेकिन् समयको कोई नहीं खरीद सकता । आज एक आदमी मररहा है । प्राण शरीरपञ्जरसे

निकला चाहता है जगत् नहीं हजार जगत्का धन देदो कोई एक मिनटभी नहीं रोक सकता।

समय अनन्त हैं समय अपार हैं। दिन जाता है महीनेपर महीना भरता है बरस पीछे बरस बीतता है युगपर युग वरतकर जो समय कितनेही चौकडी पीछे छोड आया है उसकी गणना कौन करे? सत्य त्रेता और द्वापर बीतगये है। कलि वर्त्तमान समयमे बीतरहा है। इस कलिपर फिर सत्य, त्रेता, द्वापर आवेगे और कलि चढ़ेगा फिर इसी तरह चौकड़ियाँ बीता करेगी हम लोग सृष्टि फिनगे उसका अन्त कहाँ पावेंगे?

समय अनन्त कालसे द्रुतवेगपूर्व्वक चल रहा है। एक वार भी पीछे फिरकर नहीं देखता। चलाजाता है यह हम कहते हैं, लेकिन् उसका पदचिह्न कभी देखने नहीं पाते। धन्य समय! धन्य तुम्हारी महिमा!।

इसीतरह हमारे रामप्रसादके व्याहको आज दो बरस होगये रामप्रसादकी दूसरी स्त्री चमेलीको पाकर उनकी मा खुशीके मारे फूली नहीं समाती आनन्द सागरमे अधीरा हो उठी हैं। घरका काम काज कुछ नहीं देखतीं सदा उसी नयी पतोहूमे लगी रहती हैं।

पहले नयी पतोहू चमेलीके आहारादिमे उनका वड़ा ध्यान है बेटेसेभी अधिक चाहके साथ इसका वह प्रवन्ध करतीहै। फिर वह भोजन उसको सदा समयपर मिले इसके लिये उनकी वडी डॉट है। नयी पतोहूके कपड़ेभी गिरजासे अच्छे रहते है। सास उसके लिये अपने चोरीके (सञ्चित) धनसे तरहतरहके कपड़े खरीदने लगीं।

इतना करकेभी सासकी श्रद्धा नहीं मिटी उन्होंने अपने गहनेसे उसके लिये सब अच्छे २ अलङ्कार बनवा दिये। इसी तरह बढ चढके आदरसे भूषण वसन और भोजनसे नयी पतोहू दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी एकबात इसके साथ और है।

मालकिन इस नयी पतोहूको घरका खरतक नहीं टालने देतीं न चिरागकी वत्ती उसे करनेका काम सौंपतीं कोई इस वारेमें कुछ कहे तो वह कहती हैं कि"—बापरेबाप ! बड़ी कमाई बड़ी तपस्या पर तो मुझे यह लछिमी मिली है। जिसको इतनी नकरदिया पर पायाहै इसको मैं घरका काम काज करनेदूँगी ?"

इधर गिरजाभी सौतके सन्मानमें कुछ उठा नहीं रखती। सहोदरा छोटी वहनको लाकर वडी जैसे खुश होती है गिरजाको भी चमेलीके पानेसे वैसी ही खुशी है। मालकिनका वह सव अन्याय भी गिरजाके मनको कुछ भी दुखानेकी शक्ति नहीं रखता । वरन् वह सासकी आज्ञासे चमेलीके भोजन आदिकी विशेषता अपने हाथसे करती है सास कोई उत्तम वस्तु खरीदती है तो गिरजा अपने हाथसे उसी सौतको पहनाती है। इसके सिवाय वह अपने अच्छे २ कपडेभी उसके लिये सदा तैयार रखती है। सासके दिये हुए गहने गिरजा हँस हँसकर अपने हाथोंसे सौत चमेलीको पहनाती है। यदि अपने किसी गहनेसे उसकी शोभा समझती है तो झट उतारकर गिरजा चमेलीको उससे सजातीहै ।

लेकिन् सौतका यह सव आदर सत्कार किसीको देखा नहीं गया । हम पहलेही कह चुकेहैं गिरजाकी यह सव करनी रेखियाके पेटमे सूलसी वेधती थी इसी कारण उसने इसमें काँटा वोना शुरूअ किया, चलती मुसाफिरीकी सड़कसे उसने पाँवमें चुभनेवाले कण्टक रापने शुरूअ किये ।

चमेलीको अकेली पाकर रेखा उपदेश करती है-"देख वेटी ! सौतका कभी विश्वास नहीं करना । हमको वड़ा डर है कहीं एक दिन तुमको खानेमे जहर देकर मार न डाले । वडी चालाक है। देखो नहीं सासके आगे तुम्हें कितना खातिर मान करती है? भला सौतका कोई इतना आदर करता है ? " ओहो रेखाके उपदेश कैसे मीठे है। किस तरह परायेके हितको उधार खाये फिरती है?

सौतियाडाह जगत्‌मे प्रसिद्ध है खासकर हमारे भारतकी तो कहनाही क्या है जहाँ कुलीनताकेमारे घर घर डबल बीबी मौजूद हैं। रेखाके उपदेश वटमे फल लगने देर नहीं हुई। चमेली गिरजाको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगी। और सदा इस बातकी तदवीर करने लगी कि, उसके साथ न रहें। उधर मालकिनके पक्षपात और अन्यायका विषभरा फल भी निकलने लगा। जो हमारे पाठक आगे समझेंगे।

इस वक्त हम रामप्रसादके बारेमे कुछ कहेंगे। वह माताके इस अन्यायसे मनहीमन रंज होतेथे। लेकिन् झगड़ा कलहके डरसे उसे जाहिर नहीं करते। फिर जब मा अपने दामसे यह सब कररही थीं तब उनको कुछ बोलना भी उचित नहीं जान पड़ा।

लेकिन् रामप्रसाद दोनोंको एकभावसे देखने माननेकी सदा चेष्टा करते थे जब कभी कोई चीज लाते तब समान दामके दो लाते और दोनों को देतेथे। किसीतरहका कुछ बड़ी छोटीसे भेद नहीं रखते, लेकिन् माताको यह सहा नहीं जाता। वह जाहिरा इस बातको नहीं कहसकीं लेकिन् तुरंत एक बात ऐसी हुई जिससे मा बेटेमे फरक आगया। वह बात यह थी कि, चमेलीकी अलङ्कार राशिमे उसका चन्द्रहार चाँदीका था। लेकिन् ऐसे घरकी घरनी होकर चाँदीका गहना पहनना अपमानकी बात है। पहले रूपेके गहनोंका जो आदर था उसका अबके जमानेमे शतांशभी नहीं रहा। पहले लखपती करोडपतीकी स्त्रीभी रूपेकी पहुँची रूपेका हयकल रूपेका पछुआ पायजेब पहनकर अपनेको धन्य समझतीथीं। लेकिन् आजकलकी स्त्रियाँ सोनेका गहना पहनकेभी सन्तुष्ट नहीं होतीं। आजकल भारतमहिलाओंका यह अलङ्कार प्रेम हिन्दू गृहस्थके क्रियाकलापका क्रमशः लोप कररहा है।

जब चमेलीके गहनोंकी स्त्रीमण्डलीमे समालोचना चलती थी

तब उसके चाँदीका चन्द्रहारही असङ्गत समावेश कहकर निन्दाके साँचेमें ढालाजाता था। जब चमेली किसीके घर नेवतेमे जाती थी तब वहाँ भी असंख्य महिला समाजमे यही बात उठती थी इससे लज्जाके मारे चमेलीका मरन होजाता था। अतएव चमेलीने वह चन्द्रहार पहननाही छोड दिया। और चन्द्रहार विना किसीके घर निमंत्रण जानाभी बन्द किया।

यह बात मालकिनको बहुतही बुरी लगी लेकिन् उनके पास अब कौडी भी नहीं थी। इसकारण नयी पतोहूके चन्द्रहार बनवानेका भार बेटेपर सौंपा गया।

रामप्रसाद बडे असमञ्जसमे पड़े। छोटीको चन्द्रहार देना है तो बड़ीको भी जरूर देना चाहिये इसके वास्ते कमसे कम १९००) हुए विना काम नहीं बनेगा। लेकिन् रामप्रसादके पास रुपया तो था नहीं इसी कारण वह माताका कहना पूरा न कर-सके इसी बातपर मा बेटेमे एक दिन बडी कहा सुनी हुई।

माने कहा—"दो चन्द्रहारका क्या काम है छोटीके लिये एक बनवा दो लड़की जात है सोनाका चनरहार पहननेकी सरधा हुई है—"विना दिये कैसे बनेगा ?"

बेटेने कहा—"सुनो मा चाहे एक गढ़ाकर जिसको मने आवे देसकती हो लेकिन् हमारी तो दोनो ही स्त्री हैं हम विना दो गढ़ाये एक तो घरमे ला भी नहीं सकता।"

माता—"हमारे हाथमे रुपया होता तो तोसे कहती क्या ?"

रामप्र०—"तो हमारे पासभी इतना रुपया नहीं है कि, सोनेका चन्द्रहार गढ़ा दूं।"

माता—"तो एक गहना भी तू गढ़ा नहीं सकता तो बड़े आदमीकी लड़कीके साथ काहेको व्याह किया।"

रामप्र०—"मैंने अपने मनसे थोड़े किया है तूने ही जोर करके किया है।"

अब तो माको सहा नहीं गया--"मैंने अपने मनसे नहीं किया तुमने जोर करके किया है" यह बात बेटेकी माको नहीं सही गयी। अब तरह तरहके कुवचन बेटेको कहती हुई मा घरसे चली गयीं। कोप होनेपर घर छोड़ देना उनकी सदाकी रीति थी।

आधे घंटे बाद रेखा पहुँची और उन्होंने वकालती करना शुरूअ कर दिया पहुँचतेही पेशीपर चढकर बोली--अरे काहे बेटा ! तुम्हारा कैसा जीव है ? अभी कनिया बेचारी एकठो चीजके वास्ते अड़ी है तो क्या छोटी बड़ी दोनोंको हिसका करे बिना नहीं चलेगा ? बडीको अब कौन सोनेका चन्द्रहार पहननेकी उमर है। उसको भगवान् बूझता तो अबतक नाती नतिनी होजाती उसको इस उमरमें चनरहारका हिसका क्या करना ?"

रामप्रसादने कुछ भी जवाब नहीं दिया इतनेमे गिरजाने धीरेसे रेखा को बुलाकर कहा--नहीं फूआजी ! मैं हिसका नहीं करती। उनको चनरहार गढाने पर तो मै जीसे खुशी हूंगी। तुम उनको कहो अगर उनके हाथमें रुपया नहीं है तो मैं अपने हाथका कडा गलेका गुजुरू और कानका करनफूल देती हूं इसको तुडवाकर चनरहार उनके वास्ते बनवा दें"

रेखाने रामप्रसादको पुकार कर कहा--"काहे बेटा ! सुना आखिर तो भले आदमीकी बेटी है। वह समझती है कि, उमर किसका कैसाहै अहा चमेली को देखतेही सबका जी ऐसाकरनेको चाहता है। देखो जेठरी भी उसके वास्ते अपना सब गहना देनेको तैयार है। अब तुम फिकर काहेको करते हो गढादो जब रुपया हो तब इसका यह सब बनवा देना।"

रामप्रसादने मनमे कहा--"चमेली जरूर कुछ जादू जानती है।" और प्रगटरूपसे रेखाको कहा--"अच्छा फूआ ! जावो माको भेज दो मैं चन्द्रहार गढाये देताहू" सुनकर रेखा बहुत खुश हुई और चमेलीको शुभसंवाद देकर घर गयीं माता आयी लेकिन् जैदिन

तक चन्द्रहार नहीं बन पाया तदिन तक बेटेसे उन्होंने सीधी बातें नहीं कीं रामप्रसादने गिरजाका गहना तुड़वाये विनाही चन्द्रहार गढादिया । रेखाको इसतरह चन्द्रहार बनना वैसा आनन्ददायी नहीं हुआ ।

छठा अध्याय ।

ऊपरके कहेहुए दोतरहके आदर सत्कार और रेखाके उपदेशसे चमेलीका स्वभाव धीरे २ फिर चला । वह अब समझने लगी कि, इस वक्त जगत्‌में उसीके सुखको सब मर रहे हैं । अतएव सुख-भोगके सिवाय उसको स्वामीके घरमे रहनेका और कुछभी उद्देश नहीं है । सासके इतना आदर मान करने परभी चमेलीके जीमें सासके प्रति कुछ श्रद्धा नहीं जन्मी । आश्चर्य यह कि, सासभी नयी पतोहूसे इस बारेमे कुछ आशा नहीं करती । एक मालकिनकेही स्वभावदोषसे परिवारमे जो अघटित घटनाएँ होती हैं रामप्रसादकी मा उनका उज्ज्वल उदाहरण है । वह यदि पक्की गृहस्थिनी होती तो एक क्षुद्रबुद्धि बालिकाको इसतरह नहीं फेरतीं । आज राम-प्रसादकी माने अपने हाथसे जो बीज बोया है थोडेही समयमें उनको इसका फलभोग करना होगा ।

सन्ध्यासमय रामप्रसादने ऑफिससे आकर देखा कि, उनकी नयी दूल्हन चमेली श्रृंगार पटार करके खट्टपर बैठी पुस्तक पढ़-रही है । गोधूली वेलामें इस तरह आलसी बनकर पढ़ना उनको बड़ा बुरा लगा।और मनहीमन नाराज होकर बोले--"अरे!का करतहै ?"

चमेलीने शिर उठाया और बङ्किम कटाक्षसे स्वामीकी ओर देखकर आधी हँसी हँसदी । बस रामप्रसादका सब रंज न जाने कहाँ चलागया । चमेलीकी मोहिनी शक्ति और ओठोंपर हँसीकी रेख देखकर रामप्रसादका जी पानी २ होगया । थमकर कहा-"इस वक्त कोई सोता है ?"

रामप्रसादकी वात पूरी होनेके पहलेही चमेलीने कहा—"वाह! मैं क्या सोतीहूँ पोथी तो वॉच रहीहूँ।"

रामप्र०—"पोथी वॉचनेको कोई मने नहीं करता इस वेलामें सोना नहीं चाहिये।"

चमे०—"तो तुम ऑफिससे आकर साँझको काहे सोतेहो!"

राम०—"मैं तो थका मॉदा आताहूँ इससे थोड़ा आराम करता हूँ।

चमे०—"हमारा भी तो वही हाल है! दिनभर माजी मुझे सुला रखती हैं सो इस वक्त बदन टूटने लगता है इससे पड़ी रहतीहूँ।"

राम०—"मा तो तुम्हारा सत्यानाश कररही है।"

चमे०—"काहे?"

राम०—"तुम्हें कोई कामकाज नहीं करने देती।"

च०—"काम काहेको करूँ?"

राम०—"काहेको क्या? सब लोग काहेको करते है?

इसवार ऑख घुमाकर चमेलीने कहा—"मैं तो तुम्हारी छोटी स्त्री हूँ।" रामप्रसादका वह भाव वदला उन्होंने कुछ हँसकर कहा—"छोटी होनेसे कामकाज नहीं करना यह किसने वतलाया?"

चमे०—"वतलाया कोईने नहीं। सासजीसे रोज मैं किस्सा कहानी सुनतीहूँ उनमे सब राजाओकी दो रानी रहती हैं उनमें बड़ी तो धान कूटती गेहूँ पीसती सब काम लौंडीसी करती है छोटी पॉपर पॉव देकर राजभोग करती है।"

इतना कहते २ देखा कि, रामप्रसादका मन कुछ खिन्न हुआ झट चमेलीने उठकर उनकी ठुड्ढी पकडी और कहा—"काहे राजाजी! मैं भी तो तुम्हारी वही छोटी रानी हूँ।"

इतना सुनतेही रामप्रसाद खुलके हँसपड़े। वाहर वहुतेरी खुशी जाहिर की लेकिन् भीतर न जाने कैसी एक तरहकी चिन्ता हुई। मनमें सोचने लगे "तो क्या यह हमारी प्यारी उस किस्सेवाले

राजाकी वडी रानी हुई ! " और प्रगट चमेलीसे कहा--"देखो वड़ी तुमको वहुत चाहती और मानती है। जैसे वड़ी वहन"

वात काटकर चमेलीने कहा -" काहे वह हमको माने जानेगी काहे नहीं ? वह सब मानना जानना उसीके भलेको तो है ?"

राम०-" तुम्हे भी तो उसे मानना चाहिये ?"

इतना सुनकर चमेलीका मुँह गम्भीर होउठा थोडी देर वाद उसकी आंखे रंगीन होउठीं। और रंज होकर वोली--"मैं डाइनकी माया नहीं दिखाना चाहती--"

रामप्रसाद सुनकर अवाक् होगये। चमेली क्या वहुरूपिनी है इसका यह मुँह इतना सुकर क्यो दीख पड़ता है ? लेकिन् रामप्रसाद इस सुन्दरतामे भूल न सके। उन्होने पूंछा--"डाइनकी माया कैसी ?"

चमेलीने अपना सुन्दर मुँह और सुन्दर करके कहा--"डाइनकी माया नहीं जानते ! सौत होकर सौतका प्यार करना डाइनकी माया नहीं तो और क्या है ?"

रामप्रसाद भी सुनकर गम्भीर होउठे। न जाने मनमें कौनसी चिन्ताने घेर किया। लेकिन् चमेलीने उनको देरतक इस दशामें रहने नहीं दिया। झट अपनी सन्दूकमेसे एक जोड़ा करनफूल निकालकर उनके आगे रक्खा और पूँछा "देखो तो यह करनफूल कैसा सुन्दर है ?"

रामप्रसादने नीचेसे सिर ऊपर उठाया अवकी देखा तो चमेली मुसकुराती थी। इस मुसकुराहटमे क्या मोहनी शक्ति है सो हम नहीं जानते लेकिन् इस हँसीने तुरन्त रामप्रसादकी गम्भीरता खोदी। शशधरने मानो राहुको ग्रस लिया ॥

रामप्रसादने धीरे २ कहा--" यह करनफूल कहांसे आया ?"

चमे०--"आया कहाँसे? एक आदमी वेचता है तुम खरीद दो।"

रामप्र०—" क्या दाम है ? "

च०—" पचास रुपया । "

राम०—" ऐसा एक जोड़ा और है ? "

चमेली बिजलीकी तरह चमककर बोली—" और एक जोड़ा क्या होगा ? "

रामप्रसाद थमे गये देखा तो चमेलीकी वह हास्यमयी मूर्त्ति अब नहीं है । वह उसका क्रोधअभिमानपूर्ण मुखभी नही है । चमेलीने अब भयकररूप धारण किया है । यह मूर्त्ति प्रलयकारिणी सर्वरसातलदायिनी है ।

खबरदार रामप्रसाद! खबरदार! लेकिन रामप्रसाद डरके मारे सिकुड़कर सोठ होगये हैं वह खबरदार क्या होगे? हमभी लिखते लजाते हैं, इतने वडे लिखे पढ़े पण्डित रामप्रसाद नारीप्रसाद होगये । अपनी बातके समर्थनका और उपाय न देखकर झूंठ बोले और कहा "दोनों जोडा तुम्हारेही वास्ते चाहते हैं ।"

लेकिन् बात कहतेही एक मूर्ति विजलीसी चमककर रामप्रसादके हृदयमें पहुंची और एक भयानक चोट पहुँचाकर न जाने कहा चली गयी । छिः रामप्रसाद धिक्कार तेरे हृदयकी ! तूने इतना जल्द सत छोड़ दिया ।

रामप्रसाद अब वह रामप्रसाद नहीं है । अपनी छोटी दूल्हन चमेलीके सुखके लियेही अब उसका जीवन धारण है । नये कपडे नये गहने नये फल फलहरी नित्त नयी भोगकी चीजें सब चमेलीको उपहार देते हैं गिरजाको कोई नहीं पूँछता । जैसे नया घोड़ा खरीदतेही पुराने पर बोझा लादनेका काम रहजाता है वैसेही गिरजाकी दशा है पहले जो प्यारी लक्ष्मी घरनी थी अब वह पिसनी कुटनी और रसोइयादारन होगयी है ।

आगमें घी देनेसे जैसे आगका दर्प्प बढ़ता है रामप्रसादके

इन रोजाना उपहारोंसे भी चमेलीका दर्प्प वैसाही बढ़ने लगा। लेकिन् तौभी रामप्रसादके उपहारोंकी इति नहीं है । अब गिरजाकी याद भी रामप्रसादको नहीं आती । अब गिरजासे देखा-देखी होतेही रामप्रसादका मुँह उतर जाता है। वह अपराधीकी तरह सकपका जाता है। इससे अब वह इसबात की सदा फिक्र रखते है कि, उनसे गिरजाकी भेंट न हो। अब गिरजा का अतुलनीय सह्य गुण अन्त सीमाको पहुँच गया है। हैं! गिरजा यह क्या! तुम्हारी आँखोंमें यह आँसू कैसा! भो भगवन्! अब हमसे रहा नहीं जाता। गिरजाकी आँखोमे आँसू तो हम देख नहीं सकते।

सातवाँ अध्याय।

सचमुच क्या गिरजाकी आखोंमें आँसू आया है ! यह तो बडे आश्चर्य्यकी बात है ! इतना जल्द यह घटना क्यों कर घटी! उस चिर प्रफुल्ल सदा प्रसन्न वदन और चिरज्योतिमय नयनोंको इतना जल्द आँसूसे भरादेखेगे यह हमने सपनेमें भी नहीं विचारा था । फिर क्यो ऐसा हुआ ! जरूर किसी भयानक असम्भव घटनाके साथ इसका सम्बन्ध है रामप्रसादके मन परिवर्तनसे इसका कुछ भी सम्बन्ध नही होसकता ।

लेकिन् जो गिरजा प्रसन्न मनसे इतने जुलम इतना पक्षपात सहती आती थी उसका सह्य गुण एकदम कहाँ चला गया ! इसके हृदयका गूढ रहस्य कौन जाने ?

लोग कहते हैं गदहा सब कुछ वोझ लेजासकता लेकिन् भातकी हाँडी नहीं लेजासकता । स्त्रीका हृदयभी ठीक वैसाही है। यह हृदय सब जुल्म सब शारीरिक और मानसिक कष्ट सह सकता है किन्तु स्वामी के स्नेहसे वञ्चित होना नहीं सह सकता। जबतक गिरजा जानती थी कि, उसका स्वामी उसको स्नेह करता है तबतक वह प्रसन्नमनसे सब जुल्म सह लेती थी। लेकिन्

भाग्यकी बात है गिरजाका वह विश्वास अब नहीं है। और यही कारणहै कि, आज हम लोगोने उसकी आँखोमे आँसू देखा है।

गिरजाके इस आँसूका अर्थ समझना बडा कठिन है। उसके हृदयमे न हिंसा है न द्वेष है न उसका हृदय सासके पक्षपातसे विचलित होता वह सदा खुशी मनसे सासका शासन ताड़न अत्याचार अन्याय सब सहती आयी है। स्वामी तरह तरहकी चीजै लाकर उसके सामने ही सौतको रोज उपहार देते है इन बातोको अपनी आँखो देखकर गिरजाने एक दिन लम्बी साँस भी नहीं ली है। जिस गिरजाके हृदयमे इतना बल है उसकी आँखोमे आज अकस्मात् आँसू क्यो? एक बात और है जिस गिरजाने स्वामीको हाथ जोडकर कहा था—"तुम ब्याह करो। सैकडों दासियोमे मुझे भी एक दासी समझोगे तो इतनेसेही मै सुखी होऊँगी।" आज यह रहरहकर लम्बी साँसे और आँखोमें आँसू क्या उसी सुखका परिचय है? उसीसे हम कहतेहै गिरजाके अश्रुजलका अर्थ समझना कोई सहज काम नहीं है।

हमने यह क्या किया? निस्वार्थ प्रणयका सुन्दर चित्र उतारने बैठकर हमने गिरजाकी आँखोमें आँसू क्यो सजाया। ऐसे समय जब देशमें निष्काम धर्म्मकी नहरे चारो ओरसे छूटी हैं, हमारे बहुतसे पाठक निष्काम धर्म्मावलम्बी हमको अबतक बहुत कुछ कोसम कोस चुके होंगे। लेकिन् करें क्या यह सब जानकर भी बहुत कुछ उद्योग करनेपर हम गिरजाकी आँखोंका आँसू नहीं रोकसके।

जिस गिरजाने अपने पांवमे आप कुल्हाडी मारी है वह क्या अपने हियेका बल समझ सकती है? एक बात और है उसने स्वामीके स्नेहसे वञ्चित होनेकी बात सपनेमे भी नही बिचारी थी। न ऐसी बात होनेका उसे विश्वास था। उसने स्वामीके

स्नेहमें अटल विश्वास करकेही आजतक सब सहे हैं, लेकिन् आज उसके विश्वासपर पत्थर पडा है। इसी कारण उसकी आँखोंमें आंसू आया है। उसका अपराध यही है कि, वह निष्काम नहीं है। प्राणसे मनसे स्वामीको चाहती है। स्वामीमें अटलप्रेम रखती है। और उस प्रेमके प्रति दानकी कामना करती है। जिसमें इतने गुण हैं वह निष्काम होकर स्वामीको क्यों नहीं चाहती है? इसका जवाब यह है कि,वह पहेलेही स्वामीके प्रेमका स्वाद पाचुकी है। जो स्त्री प्रेमका एकवार स्वाद पाचुकी वह क्या प्रेमसे वञ्चित रहसकती है ? रमणी हृदयका गूढरहस्य जो जानते हैं वही गिरजाके अश्रुजलका मर्म समझ सकेंगे।

चमेलीने धीरे २ अब रामप्रसादके हृदयमे दखल पाया है। यह बात अब रामप्रसादको भी समझनेमें बाकी नही है। पहले रामप्रसाद इस बातसे खुद रज थे। और उनका यह काम अन्यायका है सो आप भी मंजूर करते थे। गिरजाको सामने पातेही अपने जुल्म और अन्याय पर लजाते थे। लेकिन् होते २ वह लज्जाभी अब जाती रही है। अब रामप्रसादको जो कुछ है सो चमेली है रामप्रसाद उसीमे भरे फूले हैं।

अब रामप्रसादके महलमें सर्वत्र चमेलीकी चलती है। हरबातपर चमेलीका राज्य है। हर बातमें चमेली, हरकाममें चमेली, जब देखो तब चमेली, जिधर देखो उधर चमेली जैसे पूछो वैसे चमेली गरज कि, अब चमेलीकी राय बिना रामप्रसाद एक पत्ता नहीं हिला सकते। चमेलीके पूछे परखे विना रामप्रसादके परिवारमें अब कुछ कामही नहीं होता।

अरी वाहरी चमेली ! अब तो वह गिरजाको रामप्रसादके आगे जाने तक नहीं देती गिरिजा अपने हाथसे सब करती धरती पकाती बनाती है। चमेली उसे सज सजाकर अपने एक निर्मित

स्थानमें लेजाती और वहीं स्वामीको खिलाती है । जो घर गिरजाको मिला है अब उसमे रामप्रसादको कदम रखनेका भी चमेलीका हुक्म नहीं है । इस कारण यह उधर जा नहीं सकते । अगर भूलसे चले जाते तो चमेली चिड चिढाकर वह बातोका चाबुक लगाती कि रामप्रसाद छठीका दूध याद करते और साथही गिरजा भी बेगुनाह कोसी मकोसी जाती ।

रामप्रसादके व्यौहारकी सब चीजे अब चमेलीके फाइलमे लटकती है एक पुराना फटा कटाभी अब गिरजाके घरमे नहीं रहने पाता । एक दिन रेखाने रामप्रसादका पुराना अव्यवहार्य जूता गिरजाके घरमे फेंक दिया था, उसे देखकर चमेलीने वह महाभारत नाथा कि, बापरे बाप रणविजयिनी रेखाकोभी शिकस्त खाना पडा । इसतरह एक दिन गिरजाने छतपर अपने कपडे उतारने जाकर रामप्रसादका एक तेलहा कुरता भूलसे अपने कपडोमे धर लारक्खा था । चमेलीने उसे देखकर वह रँडहो पुतहो किया कि उस दिन घरमें चूल्हेको इंधनतक नसीव नहीं. हुआ ।

अब इन सब कामोंसे चमेलीको मना करनेका साहस रामप्रसादमे रत्तीभरभी नहीं है । वरन् समय २ चमेलीकी ओर होकर कुछ कहना पडता है । एक दिनकी और एक घटना हमें याद आयी है । एक रविवारको रामप्रसादके मामा आये थे । उस दिन उनको भोजनके लिये गिरजाही का घर नियत था । उन्होंने भाँजेको साथ भोजन करनेकी बात की इसी कारण मामाके साथ रामप्रसादकोभी गिरजाके घरमे भोजन करना पडा । और गिरजाही परोसनेवाली हुई । जब मामा भोजन करके बाहर हुए गिरजानेरामप्रसादका पाँव सुयोग पाकर थामलिया और कहा "थोडा बैठजाव हमको तुमसे कुछ कहना है । "

सामने गिरजाको देखतेही रामप्रसाद सूखकर सोठ होगये ।

और मिरकिचही रामतरोईकी तरह लिरबिराकर बोले-"अभी नहीं बैठ सकता खानेपर थोडा लेटने जाताहूं।"

गिरजा-"तो यही लेटो।"

राम०-"तुम्हारा बिछौना मैलाहै उसपर नींद नही आवेगी।"

अब गिरजाकी आँखोंका आँसू न रुकसका पोछकर बोली-"अब मै साफ बिछौना किसके वास्ते करूँ। तुम तो यहाँ सोते नहीं सोना तो दूर अब इस घरमे कभी कदम भी नही रखते। खाली बिछौनेकी बात क्या इस घरकी ओर एकबार देखो तो जानपडे कि, यही घर पहले क्या था अब क्या होगया यह सब हाल तो खाली तुम्हारीही वजहसे है। अच्छा मैं साफ बिछौना कर देतीहूँ। लेटरहो।" इतना कहकर साफ चादर लेने चली। रामप्रसादने रोककर कहा-"नही तुम अब तकलीफ मत करो मेरे सोनेका वक्त नहीं है। मै बाहर जाऊँगा।"

गिर०-"हमारे पास थोडा बैठनेको हुआ तो बाहरका काम लगगया! काहे! क्या मै तुम्हारी स्त्री नहीं हूँ?"

रामप्रसाद नाराज होकर बोले-"यह सब बातें तुम्हारी हिसकेकी हैं तुमको किसीका हिसका करना किसीपर जलना नही चाहिये।"

गिरजा-"हिसका किसे कहते है सो तो मैं जानती ही नही। हमारी यह बातें हिसकेकी हो तो क्षमा करना हमारा मन अब खराब होगया है सुधि बुद्धि सब जाती रही है। तुम हमारा मन ठीक करदो, हमको उपदेश दो, सिखलाओ और सजा करो। तुम हमारे स्वामी हमारे प्रभु देवता हो। तुम्हारेही बनायेसे मैं बनूंगी, तुम्हारेही उपदेशसे मेरा भला होगा। तुम्हारे पांव पडतीहूं हमको सुधारो।"

इतना कहते २ गिरजाका कण्ठ बन्द होगया। स्वामीके चर-

णोंमें पडगयी। इतनेमें गर्जन तर्जन करती हुई चमेलीने उसी घरमें प्रवेश किया। उसे देखतेही रामप्रसादके हियेका तालाब सूखगया। छाती धड़कने लगी। आगे क्या हुआ सो अब हम कहना नहीं चाहते।

आठवाँ अध्याय।

रामप्रसादके घरमें होते होते अब बडाही गडबड हुआ इतने दिनो तक मा मालकिन थी। वही घरका सब खरचबरच चलाती थी। भांडार से जो कुछ निकालकर देती थी वही लोग पाते थे। विना माके जाने एक भिखमंगाभी मुट्ठी भर अन्न नहीं पाताथा लेकिन् होते २ माताकी यह मालिकी अब नहीं रही। उनकी श्रद्धाको पतोहूने सब दखल कर लिया। अब उनके घरमें बडा गडबड मचा। इस गडबडका मूल कारण वही रेखा फुआ उर्फ रामरेखा मिसराइन थी। गडबड कैसे हुआ सो सुनिये:--

एक दिन तीसरे पहरको रेखियाने अकेलेमें चमेलीको बुलाकर कहा--"अरे सुन तो बेटी चमेली! तू क्या जिन्दगीभर इसीतरहसे रहेगी। संसारका कुछ काम धाम नहीं सँभालेगी। कुछ भी अपना नहीं समझेबूझेगी तो इस बुढ़ियाके मरनेपर तेरी क्या गति होगी?"

दूसरा कोई चमेलीको ऐसा कहता तो न जाने क्या होता लेकिन् रेखियाके मुँहसे इन बातोको सुनतेही चमेली मुसुकुराकर बोली--"काहे फुआ! काम काज जब सिरपर पडेगा तो क्या करे विना रुक रहेगा?"

रेखिया आँख तरेरकर सिर हिलाते २ बोली--"यह तो जहानकी बात है लेकिन् तेरे कपार तो बाघिन सोते बैठी है। अभीसे सब बूझ समझकर अपने हाथमे न करोगी तो बेटी हमारी बात गिरहा रक्खो एकदिन पछताओगी।"

इस बातसे मानो चमेली चौंकउठी । उसने सब मतलब समझ-लिया और बोली—"फूआ ! मैं तो इतना नहीं सोचती थी लेकिन्-"

रेखा—(बात काटकर) अभी लेकिन्ही लगा रहेगा ? "

चमेली—" नहीं, नहीं कैसे करना चाहिये सोही पूछती हूँ । "

रेखा—'यह्लो ! अरे छोटकी ! तू मन करे तो का न होजाय ? "

चमेली—यह तो बात है लेकिन्-"

रेखा—"फिर लेकिन् ? "

चमे०-"नहीं यह कहतीहूँ कि, आजतक तो मैं फूलाफूल भी नहीं लोढती अब यह सब करनेके लिये मेहनत करना चाहिये न?"

रेखा०-"अरे नही बेटी ! अभी तू कलकी छोकडी है नार तो सूखा नही है । अबतक अँतडियोंभी तेरे शरीरसे महक आती हैं तू क्या मेहनत करेगी ? कहना सब, मै कर दूंगी उसकी चिन्ता क्याहै जाँगर तोड मेहनत तो मै करसकती हूँ । "

फिर इधर उधर ताक रेखिया फुसफुस करके बोली-"सुन सुन! हाथमे तेरे सब पैसा कौडी रहेगी, तू जिसको दो पैसा देगी सोई पावैगा जिसे नहीं देगी सो नही पावेगा । देख तो इसमें कितना सुख है । यही तो मेहनत है और मेहनत क्या कुदारी चलाना है?"

फिर चारों ओर आँखकर कानमें कहने लगी "आ सुन जिसने तुमको जन्माया है जिसने दस महीना पेटमे ढोवा है उसकी ओरभी तो देखना चाहिये ।जहान बेटा बेटीको काहे तरसता है इसी दिनके वास्ते तो।तू चाहे राजपर बैठ जा लेकिन् यह सब बाप माके भागसे तो हुआ है एकबार उनका हाल भी देखना चाहिये उनकी भी खबर लेना चाहिये । वह लोग खाने बिना मर रहे है, जब तेरे हाथमें सब रहेगा तू मालकिन् रहेगी तो उनको ऐसा दु:ख काहेको होगा ? "

इतना कहते २ रेखाकी आँखें आँसूमे छलछलाने लगी । चमे-लीने समझा दुनियामें रेखाके सिवाय हितचाहनेवाला दूसरा नहीं

है। वह मारे सहानुभूतिके गलगला उठी और बोली—"हो फूआ! हमको बतादो कैसा करनेसे कैसा होगा ? तुम्हारे सिखलाये बिना हमको कौन बतलावेगा ?"

अबकी रेखाकी आँखोसे सरसर आँसू बहने लगे। अपने अञ्चलसे पोंछकर बोली--"हमारा बहन बेटा तो काशी भेजनेके वास्ते हाथ धुनता है अब मैं भी समझतीहूं यहां रहनेसे कुछ लाभ नहीं मरनेका किनारा आया अब काशीमे जाकर मरना चाहिये। लेकिन् अब चलती चलाती बेरा तेरी मायामें पड़ीहूँ। नसीबमें होगा तो मनकर्निकामे मट्टी लगेगी नहीं तो तुम्हीं सब घिसियाकर गंगामे फेकदेना या जो मने आवे सो करना इस वक्त मैं कहतीहूँ सो सुनो- "रामप्रसादसे बोलो जे मा बूढी भयीं उनको दान पुन तीरथ बरत करना चाहिये हमारे तुमारे रहते उनको संसारके कामकाजमे लगे रहना अब अच्छा नहीं सो उनका दुःख अब हमसे देखा नहीं जाता। सब घरके काम काजका भार हमे देदो तो फिर माका झंझट सब निकल जायगा।और वह अब परलोकका काम काजभी करसकेंगी।"

चमेलीके आनन्दकी सीमा नहीं रही वह फूआकी सलाहपर चलनेको जी जानसे उतारू होगयी और रेखा पूरा २ वास्ता कराकर खुशी मनसे हँसती खेलती घर लौटी।

उसी दिन रातसे रेखाकी सलाह काममें आने लगी। चमेलीने ऐसी तदबीर की कि, उसको अपने कामके लिये बहुत मिहनत करना नहीं पडी। दूसरे दिन सबेरेही रामप्रसादने माको पुकारकर कहा—"मा तुम अब काहेको इस दुखधन्धेमें मरती है ? अब तो तू अपना दानपुन और खाली परलोकका काम किया करे तो अच्छा है अब तुम्हारी उमर संसारी कामकाजमे लगे रहनेकी नहीं है।"

बेटेकी इस बातमे माको बडी खुशी हुई। और आशीर्वाद करके बोली—अच्छा बच्चा तू मुझे काशी भेजदे तो अच्छा

तुसको एक लडका होजाय तो मैं काशी चलीजाऊं । नातीका मुँह देखे विना तो मुझे वैकुण्ठमे भी सुख नहीं मिलेगा । ”

रामप्रसादने कुछ हँसकर कहा—“ अरे काशी काहेको जायगी? यहीं रह, लेकिन् पूजापाठ, दान पुन यहीं सब कियाकर संसारका सब काम काज छोड़दे । ”

माता अकचकाकर बोली—“ अरे संसारका कौन काम काज दादा ! मैं तो पूजा दानके समइयामे पूजा दान करतीहूँ संसारका काम काज जब पड़ता है तब वहभी करतीहूँ उसके वास्ते क्या मैंने कभी किसीसे कुछ कहाहै ? ”

रामप्रसाद—“अरे कहनेकी बात नहीं । तुम्हारेही आरामके वास्ते कहताहूं घरका सब काम काज अपनी छोटी पतोहूको देदो और तुम इन सब बातोंसे बेफिक्र होजाव ।”

अकस्मात् मानो माताके सिरपर बिजली गिरी अब उनकी खुशी विषादमे परिणत हुई । तुरंत बेटेके कहनेका मतलब समझगयीं । उनने समझ लिया कि अबसे किसी काममे उनकी मालिकी नहीं रहेगी । और उनको भी अब अपनी साधकी छोटी पतोहूके अधीन होकर रहना होगा।दो बरस पहले अगर ऐसी घटना घटती तो मा कोपके मारे प्रलय कर देती लेकिन् न जाने क्यों नयी पतोहूके घरमें लानेके दिनसे उनके कोपकी मात्राका घटना शुरूअ हुआ है । इसीकारण कोपके मारे अधीर न होकर छलछलाती आंखें दिखाती हुई बोली—“ अच्छा छोटी जो घरका सब काम काज सँभाल ले तो हमारे यहां रहनेका क्या काम है हमको काशी भेजदे !”

रामप्रसाद— “कुछ दिन तो यहां रहो फिर काशी जानेकी बात पीछे देखी जायगी ।” इतना कहकर रामप्रसाद बाहर चले गये । दूसरे दिन चमेलीने लौंडीको पुकारकर कहा—“सुनरे सब घरका काम काज कलसे हमसे पूँछकर किया कर” मालकिन

-उस वक्त स्नान जानेकी तैयारी कररहीथीं । लौंडीसे कहते सब सुनकर जैसे रोज नहाने जातीथी उसी भावमें चली गयी ।

नववाँ अध्याय ।

रामप्रसादकी मा पूरी गृहस्थिनी थी थोडे खर्चसे सब काम पूरा हो इसकी तदवीर वह सदा जीजानसे करती रहती थी नौकर चाकरके काम पर विश्वास करके रुपया नहीं खोती थी इसी कारण समय २ अधिक मालकी खरीद बिक्री आपही किया करतीथी सदा नहानेसे आते वक्त बहुतसा काम अपने हाथसे कर लातीथी । जहाँ जो चीज सस्ती मिलती मिहनतकी परवा न करके वह चीज वहींसे लातीथी । लेकिन् वेटे रामप्रसादको वह सब बातें पसन्द न थीं । मा वेटेमें इस बातपर सदा झगडा फसाद हुआ करताथा सांसारिक खरचमेंसे कुछ न कुछ जमा करनेका भी माताको अभ्यास था इस कारण आज माताके दिलमे इस बातकी बड़ी चोट लगी है । और हियेका वह भाव मुँहतक फूट पड़ा है ।

स्नानके घाटपर जाकर आज माता किसीसे कुछ वात नहीं कहती न उनका गभीर मुँह देखकर किसी औरको उनसे कुछ पूँछनेका साहस होता । स्नान ध्यानके साथही साथ घाटपर कितनेही वड़े घरके लोगोकी चालचलनकी समालोचना होती है । कितनेही पतोहू और वहुओंकी कितनेही बालविधवाओंका अपवाद, कितनेही कुल कन्याओंकी वेहयाई, कितनेही धनियोंके धनका घमण्ड, कितनेही इज्जतदारोंकी इज्जतका गरूर कहकहकर आन्दोलन होता है किन्तु जो रामप्रसादकी मा इन आन्दोलनोंका जीवनस्वरूपथी आज वही उस कहासुनीमें चुपचाप खड़ी रहीं । सबसे निराले होकर आज उनका स्नान खतम हुआ अब घाटकी पक्की सीढीपर पूजा ध्यानमे वैठीं । किन्तु आज उनकी

ध्यानपूजा नहीं हुई। मन बड़ाही चञ्चल है पूजा कैसे हो? वह केवल बेटे और बहूके व्यवहारपर सोच विचार करने लगीं। कभी क्रोधके मारे अधीर होती थी कभी अभिमानके मारे उनकी छाती फटती थी किन्तु इन सब अनर्थोंकी जड़ वह खुद हैं। इसीकारण इसे वह किसीसे कह नहीं सकती थीं। धीरे २ स्त्रियां अपने २ घरको जाने लगीं। किन्तु आज राम-प्रसादकी माको घर आनेकी इच्छा नहीं होती जब अन्तमे देखा कि, रेखियाभी चली जाती हैं तब उसे पुकारकर कहा—"अरे जरा खड़ी तो रहो! भागी काहे जातीहो।"

रेखा खड़ी हुई। क्यों उसे खड़ा होनेको कहा गया यहभी वह समझ गयी। अब दोनों साथ घरको चलीं। कई मिनट तक चुपचाप चलीगई किसीने कुछ बात नहीं कही लेकिन् फिर रेखाने छेडा--"हं बहन! भला आज तुम्हारा मुंह ऐसा उदास क्यों है?"

रामप्रसादकी मासे अब चुप नहीं रहागया। आँसू पोछती हुई बोली—"का कहें बहन! अब हमारे दुःखका पार नहीं है। अब हमको अपने घरमें चेरीकी तरहसे लौंडी बनके रहना होगा। बेटा है सो लुगाईके पीछे ऐसा भडुआ होगया है कि, आजसे उसी नयी दुलहनको मालकिन बनाया है मैंने जो उसे दश महीने तक पेटमें ढोया था। गुह मूत करके इतना बडा पट्ठा किया सो अब मै बांदी हुई। अब मुझे उस नयी पतोहूके हाथका दिया खाना होगा।"

रेखा इतना सुनकर अवाक् होगयी और चकित होकर बोली--"अरे बहन! रामप्रसाद तो ऐसा लडका नहीं था। क्या लहु-रीका मुंह देखकर ऐसा बसमे होगया। लेकिन् बहन इसके वास्ते दुःख काहेको करतीहो। वेद सासतरकी बात झूठी थोडे होगी। कलिकालमे ऐसे बेटा होवेहींगे"

रेखाने शास्त्रकी दुहाई देकर मीमांसा करदी लेकिन् रामप्र-

सादकी माका मन इससे नहीं भरा वह कुछ रिसियाकर बोली–"तो क्या सासतरमे यही लिखा है कि, माको लौंडी करके लुगाईको घरकी मालकिन बनावे।"

रेखाने नरम होकर कहा–"अरे बहन! सास्तरकी बात आज-कलके जमानेमे मानता कौन है यह तो कलजुग है न?"

"ओह् कलजुगके मुँहमे लुआठ लगा देने" यह कहकर राम-प्रसादकी माने अञ्चलसे आँसू पोंछा। और रेखा बहुतसी इधर उधरकी बाते कहकर उनको प्रबोध देनेलगी।

रेखियाकी मीठी बातोंसे रामप्रसादकी मा पसीजगयीं। और समझने लगीं कि उसके ऐसा उनका हितकारी जगत्मे दूसरा नहीं है। और उस दिन घर न जाकर साथही साथ रेखाके घर पहुँची। रेखाने बडे खातिर मानसे उनके भोजनकी तदबीर करदी और कुछ उनको भोजन भी कराया साँपरूपसे काटकर वैद्यरूपसे दवा करने लगी।

दशवाँ अध्याय।

रामप्रसादकी मा जब घर नहीं गयीं तब जरूर उनकी ढूँढ़ खोज होती लेकिन् रेखाकी चतुराईसे वह सब बंद रहा। क्योंकि ऐसा होनेसे उनके कोपका कारण जाहिर होजाता इससे शायद राम-प्रसादका दिल फिरे और रेखाकी सब सलाह मिट्टीमें मिलजाती इसीसे उसने चतुराई की और रामप्रसादके घर कह आयी कि, उसने ब्राह्मणभोजनकी तैयारी की है इसकारण उनकी मा आज रेखाहीके घर रोटी पानी बनावेंगी और घर न आसकेगी। रेखाकी चतुराईसे उस दिन किसीने रामप्रसादकी माको नहीं खोजा। रातको सोते वक्त रेखाने कहा–"देखो तो बहन! उन सबोकी अक्कल तो देखो! मा नहाने गयी है आयी नहीं, वहीं डूब मरी या कहीं चली गयी इसकी कुछ खोज खबर उन सबने नहीं की!"

साके मनमें यह बात दिनसेही हड़बड़ी मचारही थी इसके लिये उनको अन्तःकरणसे दुःख होरहाथा लेकिन मुँहसे कुछ कह नहीं सकती थीं। अब उसी बातको रेखाके मुँहसे सुनकर उनका दुःख मानो उमड उठा। आँसूसे छाती भीजने लगी। कुछ देर-तक उनका कण्ठ बन्द होगया।

फिर कुछ स्थिर होकर बोली—"देख बहन बेटे और पतोहूकी अकल तूही देख तुम सब जो कहती हो कि रामप्रसाद बड़ा लायक बेटा है सो, कैसा लायक है तू ही देखले अब वह हमारी खोज खबर क्यो करेगा हमारे मरनेसे तो उसकी आफत बलाय टरेगी। हमारा मरना तो वह हाथ जोड़कर मनाता है।" रेखा बोली—"भला रामप्रसाद तो खा पीके आठही बजे कामपर चलागया होगा। और छोटीके लच्छन बरें वह तो मानो लड़की है। यह तुम्हारी बड़ी पतोहू बुढ़िया की अकल पर मैं बतलातीहूँ सास रिसियाकर नहाने गयी है। दिन भर नहीं आयी इसकी कुछ खोजखबर नहीं? ऐसी पतोहू कौन कामकी! इसीसे तो कहतीहूँ बहन! तेरी बड़ी बहूके पेटमे बड़ी बडी अक्किल है।"

रामप्रसादकी माने आँसू पोछकर कहा—"हमारे नसीबसे सब छोटी बडी बराबर मिली है झूठ काहेको कहें बड़ीका ईमान सुनता है इतनेपर भी वह हमारा बहुत आदर मान करती हैं इतना उसका निरादर होता है तिसपरभी वह मुँहसे बात नहीं निकालती। अपनेको मानो माटीका समझती है। बहन! न जाने इस छोटीको ऐसे हलके घरकी लडकीको न जाने क्यों घरमे लायी! लडकाका लडका नहीं हुआ उतरे हमारा सोनेका घर मिट्टीमे मिलगया बेटाभी उसीका गुलाम होगया!"

रेखा जिस रास्तेपर जारहीथी उधर इस वक्त जानेका सुभीता जानकर सीधी राहपर आयी और एक लंबी सांस लेकर बोली—

"क्या जाने वहन कैसा जमाना चढ़ा है भलाईका पहरा नही है। तूने सब किया बेटेको व्याह दिया इतना करके पतोहू घरमे लाई सो अब तुम्हारी ओर कोई देखता तक नहीं देखना तो दूर रहा वात नही पूछे तो इससे और दुःख क्या होगा? फिर सौत सौतमें नही बनता यह दुनिया जहान जानता है लेकिन सासका तो आदर मान करना चाहिये सासको तो खुश रखना चाहिये।"

रामप्रसादको माने कहा-"अरे वहन! आदर मानकी मैं अब भूखी नही घरमे रहने दे सोही वहुत है।"

रेखा एक छोटी साँस फेककर बोली-"क्या कहूँ वहन! मैभी यही सोचती हूँ? और कोई तो नही अपनाही वेटा अपनीही पतोहू। कोई जाँघ उघारो अपनीही वदनामी है।"

राम० मा-"अब यहा न रहूँगी काशी चली जाऊँगी."

रेखा-"अरे नहीं वहन! अभी काशी जानेका समय नहीं हुआ है। पहले नातीका मुख देखले फिर काशी जाना।"

राम० मा-"ना वहन अभी नातीका मुँह नही देखना चाहती अब हमको नातीसे नेह नही है।"

रेखा-"क्या करोगी वहन! तुम तो घरकी वडी सयानी हो तुमको सव सहना पडेगा।"

रा० मा०-"घरकी वडी सयानी या मालकिन वही है। मै होती तो इसतरह दरदर ठोकर खाती?।"

रेखा-"अरे नही वहन! राजासे बेटेकी मा होकर ठोकर क्यों खावेगी? थोडा सहकर सव सँभालसक्ती हो।"

रा० मा-"तो क्या मेरे नसीवमे यही था।"

रामप्रसादकी मासे रहा नहीं गया फिर रोउठी लेकिन् रेखा तो मीठी वातोंका घर है वह लगी चिकनी चुपडी वातोंसे उसको बोध देने बहुतसी बातोंके बाद दूसरे दिन सवेरे घर मिटजानेकी

बात है । पापी रामप्रसादकी मा अब किसी सांसारिक काम काजमें हाथ नहीं डालेगी । दिनमे एकबार अपने हाथसे बनाकर खावेगी पूजा पाठ और महल्ले २ घूमकर दिन वितावेगी यही सलाह ठहरी रेखाका उद्देशभी सफल हुआ ।

ग्यारहवाँ अध्याय ।

इधर रामप्रसादके घर बड़ा गड़बड़ हुआ । पहले जितने खर्चसे काम काज चलताथा उसके दूनेसे भी चलना कठिन हुआ।चावल है तो दाल नहीं, दाल है तो नमक नहीं, नमक है तो तेल नहीं"। उसी तरह अन्न लाव धन लाव भूसन वसन लाव, लाव लावही बनी रहती थी । पहले आठ आनेमें जिसे सन्तुष्टतासे घरभरका आहार होता था अब रुपयेमे भी वह मोहाल हुआ । कौन जिन्स कब चाहिये उसके पहलेसे कुछभी जाननेकी तदबीर नहीं रही । इस कारण दूसरे तीसरे दिन बिना खाये रामप्रसादको ऑफिसमें जाना पड़ताथा । लौंडीका प्रान तो मुँहको आता था एक दूकानपर दिनभरमें तेरहबार जाना पडता था । इस परभी एक सीधी बात नहीं दिनभर गर्जन, तर्जन और तिरछीबाँकी सुनते २ जानपर आफत आती थी । झूनाका वह गर्जन तर्जन अब भूल गया है । नौकर नौकरानी सबकी जानपर आफत है । जो कभी भर पेट अन्न पाते हैं वह तरकारी बिना तरसते हैं जो तरकारी मिली तो भोजन पूरा पाने बिना भूखे रहजाते है। नोकर जो तीन पुस्तसे नौकरी करता है अब सब माया मोह छोड देनेको तैयार है । मालकिन मुँहसे कितना ही उनको बकें झकें लेकिन पेट उनका अच्छीतरह भराती थीं लोग कहतेहैं पीठ मारना लेकिन पेट नहीं मारना सो मालकिन खूब समझतीथी. इसी कारण मालकिनका बकना झकना नौकर नौकरानियोंको खलता नहीं था । अब उनपर वह बक झक और तिरस्कारकी मात्रा तो दूनी हो गयी है

किन्तु दोनोंवक्त पेटभर खानेमें भी खलल हुआ है। अब यह पहलेके समान ईमानदारीसे नहीं चलते। बात सही है वह मालकिनका बकना झकना सह कहते हैं लेकिन एक छोटीसी लडकी जो अभी तीनचार बरससे यहाँ आयी है उसका तिरस्कार कैसे सहेंगे?

इसीसे हमने कहा है कि, आज रामप्रसादके घरमें बडा विभ्राट घटाहै। मालकिनका अब घरके किसी काम काजमें मन नहीं लगता विषहीन साँप दलदलका फँसा हाथी जैसे मनका दुःख पडा सहता है मालकिन भी उसी तरह पडी दुःख सहरही हैं। जब दुःख वहुतही असह्य हो जाता है तब महल्लेके इस घरसे उस घरको फिरा करती हैं। किन्तु मनकी बात सदा मनमें नहीं रख सकतीं बेटे और छोटी पतोहूके व्यौहार और गुनकी बात बहुधा महल्लेवालोंसे कहतीहैं। वह उसे बेटे और पतोहूके कानतक पहुँचाते हैं। बेटा मापर इसके लिये अतिशय कोप करता है। पतोहूके कोपकीभी सीमा नहीं है पतोहूका केवल कोपही नहीं है क्रोधके साथही साथ हिंसा द्वेष और घृणाभी वलवती होती जाती है किन्तु बेटेका कोप जाहिर नहीं होता क्योंकि उन्होने माके साथ बात करना बन्द कर दिया। किन्तु जब पतोहूका कोप दल बाँध कर सासपर पड़ताहै तब सासके निरादरकी सीमा नहीं रहती।

लेकिन् इधर घरमें जैसा गड़बड़ और गोलमाल हुआ उससे अवश्य रामप्रसाद माताके पैर पड़कर माफी माँगते और फिर घरका सब भार माके सिर सौंपते यदि मा धीर धरती और उनकी बदनामी घर २ नहीं करती फिरतीं। लेकिन् यहां दोनोंने भूल की। रामप्रसादने मनमें ठाना कि, जब मा हमारी घर घर बदनामी करती है तब घर चाहे मिट्टीमें मिल जाय मैं उससे बातभी नहीं करूँगा। उधर मा समझती है घर २ कहने सुननेसे बेटेका मन कुछ भी फिरेगा तो वह सब पतोहूके हाथसे निकालकर मुझे

मालकिन बनादेगा । इसी भावनासे माता घर घर बेटेकी बदनामी करने लगी छोटी बहूसे अधिक कोप बेटे परही निकालने लगी ।

हा ! यही भूल अनेक समय हम लोगोंका सर्वनाश करती है । अगर इस संसारमे ऐसी भूल न होती तो यह स्वर्ग समान हो जाता । बेटेपर माका क्या स्नेह नही है ? माताके प्रति पुत्रकी क्या भक्ति नहीं है ? सब है किन्तु जब यह भूल हमारे घरमें घुसती है तब माताका स्नेह और पुत्रकी मातृभक्ति न जाने कहां चली जाती है और सोनेका घर श्मशान हो उठता है । संसार बडाही विषम स्थान है । बडी सावधानीसे चलनेकी जगह है । एकवारभी पांव फिसलनेसे सँभलना कठिन है । इस संसारसे एकवार पाँव चूकनेपर फिर रक्षा नहीं है । मालकिनने पहली भूल यह की कि, घरसे लक्ष्मीके रहते भी उसे लात मारकर बेटेकी दूसरी शादी की माता इस भूलको क्या सुधार सकतीहै ? इसीकारण इस संसारमे मालकिनसे कोई काम ठीक नही होसकता वह सबमें भूलकरेंगी रामप्रसादकी भूल देखो घरमे गड़बड़ होरहा है यह मनमें समझकर भी उसके दूर करनेकी तदबीर नहीं करता । मातापर अभिमान करके अपने पाँवमे आप कुल्हाड़ी मारता है ।

इसीसे कहते है खबरदार रहो ! यह संसार बडा विकट स्थान है । एकबार भूलनेसे भी रक्षा नहीं है । खूब सावधान होकर चलना चाहियें ।

बारहवाँ अध्याय ।

तो क्या रामप्रसाद अपने घर का यह सब गड़बड़ दूर करनेकी कुछ तदबिर ही नहीं करते । हम लोग रामप्रसाद पर इतना बडा दोष लगाने का साहस नहीं करेंगे । रामप्रसाद समझदार आदमी हैं । पढे लिखेहैं । परमेश्वरने उन्हे विचार दिया है । हिसाब किताब समझते है इन सबके बिना वह इतने बडे सौदागरके

ऑफिसमें ऐसी नौकरी ही कहाँ पासकते थे ? और अपना भला बुरा तो पशुभी समझता है। रामप्रसादने गड़बड मिटानेकी क्या तदबीर की सो सुनिये।

इतना गडबडसे बहुतही नाराज होकर एक दिन रामप्रसादने चमेलीको पुकार कर कहा—"जो काम नहीं करसकती उसमे हाथ क्यो डालती है।"

चमेली ने मुसकुराकर कहा—"ऐसा कौन वडा काम है जो नहीं बनेगा।"

उस मुसकुराहटसे ही रामप्रसाद की आधी नाराजी दूरहुई कुछ नरम होकर बोले—"अपने ही मनसे तो सब घरका काम काज सिरपर उठा लिया है अब चलाती काहे नहीं ?"

चमेली फिर उसी मुसकुराहटके साथ सिर हिलाती हुई बोली "काहे नहीं चलाती ! यही समझते तब तो तुम्हारी यह दशाही नहीं होती।" कहनेके साथ साथ कुटिल कटाक्ष भी चलरहा था।

रामप्रसाद उस मनमोहन मुसकानके साथ भौहोंका कटाक्ष देखकर पानी पानी होगये। चमेली फिर बोली "हमको कोई करनेही नहीं देगा तो कैसे करूँगी। यह घर हमारा घर तो है नहीं यह तो आज कल हमारा वैरीका घर होगया है। सब एक ओर हैं और मैं अकेली, भला मै कैसे पार पाऊँगी ? इतना सहकर सब करतीहूँ तो भी घर घर हमारी निन्दा हमारी बदनामी ही की जाती है। अच्छा जो हमारी ही निन्दा हो तो हो हमारी बलासे तुम तो वेकसूर वेदोप रहते लेकिन साथही साथ तुम्हारी बदनामीसे भी गाँवमे कान देना मोताव है। जहां देखो वहीं तुम्हारी निन्दा। यही तो महतारी की अक्ल है।"

कहते कहते चमेली का यह चन्द्रवदन गम्भीर हो चला मानो कहीं से राहुने आकर पूर्णमाके चाँदको सहसा ग्रस लिया।

प्रकृतिका नियम कौन टाल सक्ताहै साथही साथ विजलीसी हँसी पर एक भयानक मेघ दिखाई दिया । फिर टपाटप बूँदे आने लगीं । मोतियोंकी तरह चमेली की आँखोंसे आँसू निकलकर गालोंसे आने लगे । रामप्रसादका सिर चकरा गया ।

रामप्रसाद गरजकर वोले—"मा वड़ी बेसमझ है मै इतना करताहूँ तो भी वह नहीं मानती ! अव क्या करूँ वह मा न होती तो—"

चमेली भी चटपट आँसू पोंछकर वोली—" अरे मा तो भला मा है उनको अकिल नहीं है । अकिल होती तो घर घर हमारी तुम्हारी निन्दा काहेको करती फिरतीं । उनके साथ कई अकिल-वाली भी तो मिली हैं जो वाहर तो मीठे २ वोलती हैं और भीतर छूरी लिये है । उनकी करनी तो वड़ी वड़ी है ।"

रामप्रसादने आग्रहसे पूँछा—"वह कौन कौन है ?"

चमेली वुलाक हिलाकर वोली—"अरे और दूसरी कौन तुम्हारे वही वड़े आदरकी वडी रानी और उन्हीं की सोहागिनी लौंडी झूनादेई ।"

रामप्रसादको वडा गुस्सा आया । मारे कोपके काँपने लगे । कुछ देरतक मुँहसे वात नहीं निकली । थोडी देर वाद जव कुछ शान्त हुए तव वोले—"झुनियाँका इतना वडा दिमाग ! मैं कलही उसे झाड़ू मारकर निकालदूंगा !

चमेली—"अच्छा झुनियाको झाड़ू मारकर निकाल दोगे लेकिन रानीको तो झाड़ू नहीं मार सकोगे ! उनके लिये क्या करोगे ?"

रामप्र०—"उसको भी ठीक करेंगे ।"

चमेली—"अरे रहन दो वडे ठीक करनेवाले वने ।

इतनी हिम्मत होती तो तुम्हारा यह हाल काहेको होता । तुममे कुछ मरदानी थोडे है इस वातमे तो हमाराही भैया है कि, भौजी तनिक गडवड करै तो झोटा पकड़ पकड़के मारता है !"

रामप्र०—मैं तो जानता था कि, उसका कुछ गुनाह नहीं है। वह सदा तुम्हारी खुशामदमे रहती है क्योंकि उसको मैंने तुमसे बाहर होकर कोई काम करते नहीं देखा।"

चमेली—"तुम देखोगे कैसे! तुमको तो उसने भेड़ा बना डाला है। बडीका नाम लेते ही तुम निहाल हो जाते हो। जो वह ऐसी प्यारी थी तो हमको व्याहनेका क्या काम था?"

रामप्र०—"अरे मै वह बात नहीं कहता। तुम तो नाहक ऐसी बात उभाडती हो। वेकाम काहेको उस बातको छेड़कर गुस्सा करती हो?"

चमेली—"हुआ, हुआ! मै सब ढङ्ग समझती हूं! तुम्हारा मतलब भी खूब समझ गयी हूं। यही समझते समझते तो मेरी हड्डी पकी जाती हैं"

अब की विना मेघके पानी बरसना शुरूअ हुआ। बिन्दुपर बिन्दु फिर साथही मूसलधार आँसू गिरने लगा। रामप्रसादका सब ज्ञान चूल्हेमे चला गया। घरका गड़बड़ दूर करनेकी चेष्टा उसी घरमे वह गयी। ठीक है चमेली! तुमने ठीक कहा है कि, रामप्रसादमे कुछ मरदानगी नहीं है।

अब रामप्रसाद एक निश्चेष्ट पुरुष नहीं है यह बात यदि हमारे पाठक पाठिकाओने समझ लीया है तब जरूर हम इस अध्यायका अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

तेरहवां अध्याय।

तो क्या रामप्रसादमे सच मुच मरदानगी नहीं है? यह बात अगर हम लोग कहते तो कुछ बहुत नुकसान नही था, लेकिन् जब चमेलीके खुद श्रीमुखसे यह बात निकली है तब रामप्रसाद कैसे चुप रह सकते हैं।वह निश्चेष्ट कैसे रहेगे। यह बात रामप्रसादको बहुतही कडी लगी। अब अपनी मरदानगी दिखानेपर

तैयार हुए। मरदानगीकी पहली चोट झुनियाँपर पड़ी। चट झुनियाँको बुलाकर रामप्रसाद बोले—"काहेरे झुनियाँ तेरा तो बड़ा दिमाग हो गयाहै। हमारा खाती है, हमारा पहनती है और हमारी ही बुराई करती है क्यों ?"

बाबूका भाव देखकर पहले झुनियाँ डरी लेकिन् तुरंही उसको यह बात याद आयी कि, बाबू चमेलीके पाससे चले आरहे हैं। अब बाबूके कोपका कारण भी झुनियाँ समझ गयी। साहस करके बोली—"काहें बाबूं हमको बुनाई करी हैं ?"

रामप्र०—"नहीं तेरा दिमाग बहुत बढ़ गया है तू बहुत इधर उधर घूमती है।"

झुनियाँ—"अंछां घूमती हैं तो घूमनें दो तुंमार बुनाइ कां करी हैं।"

रामप्र०—"अभी फिर निनिनाती जाती है। मुँह बन्द कर नहीं मारे जूतोंके खोपडी रंग देंगे बेईमानिन् कहीं की।"

झु०—"काहे तो मांरनां एकबेर जूतां मांरनेका मंजां बूंझनां हमारं छरीरं अच्छांरहे तो तोंहरां अस ढेरवांवूं मिलिहे मेंहरां-रूकें हांथ मांरनां मुंहं कां कहे कें बरांबर नहीं हैं।

बाबू तो आगे न बोल सके झुना हाथ मटका मटकाकर निनि-नाने लगी। इतनेमे चमेली खुद वहाँ आ पहुँची बाबूकी जगहपर होकर आपने झूनासे वह मुर्ग लड़ाई नाधी कि, विश्वविजयिनी झूनाको भी नाक बन्द करके भागना पडा क्यों कि न भागती तो बाबूके जूतेसे बचना कठिन था, आजकी इसी घटनासे झूनाका अन्न पानी इस घरसे उठ गया।

रामप्रसादका दूसरा काम गिरजाको शासन करना. गिरजाको अब रामप्रसाद ठीक करने चले।जो गिरजा इस घरमें मालकिन पहले थीं अब वह लौंडीकी तरह रहती है। रातदिनकी छतिया फाड़ मिहनतसे गिरजाका शरीर सूखकर हड्डी रहगयी हैं। वह सोनेसा दीप्तिमान् शरीर, वह सदा प्रफुल्लमुखकमल वह सकरुण दृष्टि इस

शरीरकी वह सब नैसर्गिक शोभाही न जाने इस समय कहाँ बिलाय गयी है। जिसकी सुन्दरता, जिसकी अनुपम सुघराई, डाह खानेवाली सुन्दरियोंकी तीव्रसमालोचनासे भी बरकरार था वह सौन्दर्य्य आज मानसिक कष्टसे मलीन होगया है। शोभाकी बात तो दूर जाय गिरजाका जीवनभी अब अन्तवकी दशामे है, आज उसी गिरजापर उसका स्वामी मरदानगी दिखानेको तैयार है। रामप्रसाद क्रोधके मारे इस वक्त अन्धा है। इस कारण गिरजाकी दशा देख दुखीहोनेके बदले दाँत पीसकर बोला—"देख अब तेरे मारे हमको चैन नही है अब तेरी करनीसे हमें बड़ी जलन होरही है। आग लगे तेरी पतिभक्तिमे परमेश्वर तुझसे बचावे। अब मैंने तेरी सब बदमाशी समझली है।"

लेकिन रामप्रसादका यह निरादर यह तिरस्कार वाक्य गिरजाके कानमें अमृतकी वर्षा करने लगे। साध्वी स्त्री स्वामीके आदरसे तिरस्कारका अधिक मोल समझती है! गिरजा आनन्दके मारे गद्गद स्वरसे बोली—"अच्छा नाथ! तुम इतने दिन बाद अभागिनीको दर्शन देने आये हो आवो। लेकिन इतना चिल्लाकर बात क्यो प्रभू! कुछ कहना चाहते हो धीरे २ कहो। मारना है धीरे धीरे मारो कोई सुन लेगा तो तुम्हें यहां खड़ाभी नहीं होने देगा। नाथ खड़े क्यो हो? एक बार हमारे पास आकर बैठो।"

रामप्रसादका पत्थर दिल अबभी नही पसीजा उसीतरह चिल्लाकर बोला—"रहने दो अब और प्रेम दिखानेकी जरूरत नहीं है।"

गिरजा—"नाथ! मै तुम्हे प्रेम क्या दिखाऊंगी और क्या बताऊंगी। हमसे जो कुछ अनजानेमे अपराध हुआ हो तो प्रभु! बुझा दो, हमको समझा दो, सिखला दो, तुम्हारे बतलाये बिना, तुम्हारे सिखलाये समझाये बिना हमको कौन बतलावेगा! कौन सिखलावेगा?"

रामप्रसाद—"मैं तुझे सिखाऊंगा? तू क्या अब वही गिरजा है?"

गिरजा-"मैं प्रभू ! तुम्हारी बात नहीं समझता । न जाने तुम्हारा दिल किसने हमारी ओर से ऐसा फेरा है ? "

रामप्र०-"कौन कहता है तू डाह नही करती, तुझे हिसका नहीं है कौन कहता है ? तेरी बात बातमें डाह, ईर्षा, हिंसा, निकलती है इसीसे तो तू सर्वनाश करती है । "

गिरजा-"तुम स्वामी हो ! देवता अन्तर्यामी हो! तुमसे मैं क्या छिपाऊँगी। मै और किसी बातकी हिंसा नहीं रखती, हिसका नहीं करती, केवल तुम्हारे प्रेमका तुम्हारे प्यारका हिसका करतीहूँ तुम अपने बलसे हमारे हृदयसे इस हिसाको चाहो निकाल दो। तुम जो मन करो सोही करसकते हो ।"

रामप्र०-"देखो खबरदार हो ऐसी हिसका मत करो सँभालो।"

गिरजा-"मैं खबरदार होनेकी चेष्टा करूँगी किन्तु नाथ ! तुम्हीं मेरे बल हो तुम बल नही दोगे तब तक मैं कुछ नहीं करसकती । मै अवला हूँ निर्बल हूँ ।"

रामप्र०-" अरे ! वह सब फन्देकी बात रहने दो इस वक्त जो मैं कहता हूँ सो सुनो । अगर नहीं मानोगी तो तुम्हें बहुत दुःख भोगना पड़ेगा ।"

इतना कहकर रामप्रसाद वहांसे चलते हुए । गिरजा विस्मित नेत्रोंसे कुछ देर तक देखती रही फिर आंसू पोछकर अपने काममें लगी।क्षमा ! तुममें कितनी सहनशीलता है? गिरजा की सहनशीलताने तो तुम्हें जीत लिया है ।

रामप्रसादका तीसरा काम माताको ठीक करना-माको पुकार कर रामप्रसादने कहा-"देखो ! तुमको हमने आजतक कुछ नहीं कहा है लेकिन् तुम अब इतना सिर चढ़गई हो कि, बिना बोले नही बनता तुमको मा समझ कर हमने बहुत सहा लेकिन अब सहा नहीं जाता ।"

मा अवाक् है । आज बहुत दिनो बाद उनका एक मात्र पुत्र उनसे बात करता है । वह क्या जवाब देगी इसका कुछ भी विचार न करसकी । रामप्रसादने फिर कहा-"तुम अब सदा हमारी बुराईकी चिन्ता करती हो तुम्हारेही मारे हमारा आदर, मान, बडाई, घर, द्वार सब नाश हुआ ।"

मासे अब सुनते नहीं बना रो उठी । बेटेके मुँहसे ऐसी बात सुनकर वह कैसे चुप रह सकती है । किन्तु बेटेने माकी वह वेदना नही समझी। मा भी बेटे को समझ न सकी। बेटे ने बहुतसी बातें कहीं मा भी बड़ी देरतक रोती रही । अन्तमे फल यह हुआ कि, बेटेने समझ लिया कि, माका मुझपर अब पहले का कुछ भी स्नेह नहीं रहा । माने भी समझा कि, बेटेकी पहिली मातृभक्ति अब कुछ भी मापर नहीं है ।

चौदहवाँ अध्याय ।

अब धीरे २ रामप्रसाद माके गुणोकी बात भूलने लगा । अब माके दोषकी बात चारो ओरसे बेटेके मनमे अधिकार पाने लगी। गिरजाकी बात अब हम क्या कहे ? रामप्रसाद इसके पहलेही उस प्रेमप्रतिमाको विसर्जन कर बैठा है अब जो कुछ है वह भी बहा बैठा ।

रामप्रसादकी सांसारिक अवस्था हम पहले बतला चुके हैं । वह दशा अब और शोचनीय हो उठी । रामप्रसाद उसके दुःखसे घबराने लगा हाँ यहाँ एक बात हम भूले जातेथे । रामप्रसादकी दशा ज्यो ज्यो खराब होने लगी।चमेलीके बापकी दशा उसी तरह सुधरने लगी । इन दोनोकी दशाका कुछ निकटवर्ती सम्बन्ध है, यह नहीं सो नहीं जानते किन्तु हम निश्चय कहते हैं हमारी रेखा-फुआ से एकान्त मे पूँछा जाय तो इसका जवाब वह देसकती है । लेकिन् रामप्रसादके मनमे इस बातका कूछ भी ध्यान नहीं है ।

रामप्रसाद इतने दिनोंतक माता और गिरजापर नाराज होकर चुप चाप पड़े थेलेकिन् होते२ उनकी दशा अब ऐसी खराब होगयी कि, अब वह चुपचाप नहीं रहसके तब कोई न कोई तदवीर करनेको तैयार हुए लेकिन् तदवीर क्या करेंगे ? ऐसी हालतमें ऐसे आदमियोकी जो गति होती है रामप्रसादकी भी वैसीही हुई बहुत कुछ सोच समझकर रामप्रसाद फिर चमेलीके शरणमें आये । इसवार विनती कर गिड़ गिड़ाकर चमेलीसे बोले—"सुनो हो ! आज कल जैसा खर्च बढ़ा है वह उतना मैं जुटा नहीं सकता देखताहूँ ऐसाही रहा तो थोड़ेही दिनोंमे भूखे मरना पड़ेगा। तुम इसकी कुछ जल्दी तदवीर करो।"

चमेली स्वामीके विपण्ण मुखके आगे अपना मुँह लटका कर वही सर्वनाशिनी हँसी हँसाके बोली—"खर्च तो धीरे धीरे बढ़-ताही है लेकिन् तुम आमदनी काहे नहीं बढाते ?"

रामप्रसाद—"आमदनी बढ़ाना खाली मुँहसे कहदेनेका तो काम नहीं है।"

चमेली—" तुम अपने साहबको तलब बढ़ानेके वास्ते कहो काहे नहीं ?"

रा० प्र०—" आज कल ऑफिसकी जो दशा है उसमें अगर महीना बढ़ानेकी बात कहें तो तुरंत नौकरी जायगी।"

चमेली—"तो कोई दूसरी नौकरी देखो । खर्च तो बढ़ा ही है और दिन दिन बढ़ेगा । और अब—"इतना कहते २ लज्जित-भावसे चमेलीने शिर नीचा करलिया । रामप्रसादने आग्रहसहित पूँछा क्यों ? क्यो ? कहो ! क्या कहती थी ! चुप क्यो रही ?"

एक बातमें रामप्रसादको भी शक था। उसीको निश्चय कर-नेके लिये बार बार पूँछने लगे । चमेली पहले तो कुछ न कह-सकी लेकिन् जब पीछा नहीं छूटते देखा तब स्वामीकी गोदमें सिर रखकर शरमाती शरमाती बोली—" मैं तीन महीनेकी नहायी हूँ।

रामप्रसादने मानों हाथमें चाँद पाया। मारे आनन्दके नाच उठे। और आनन्दके वेगमें चमेलीका बलपूर्वक आलिङ्गन करके मुखचुम्बन करने लगे। कुछ देरतक रामप्रसाद पर पागलका साया आगया जब होशमें आये तो देखा चमेलीने एक अपूर्व्व शोभा धारण कीया है।

रामप्रसादकी चमेली इतनी सुन्दरी है, उसमें इतने गुण हैं, एकहीं साथ इतना गुण और ऐसा रूप क्यों हुआ ? विधाताकी सृष्टिका यह अपूर्व कौशल समझना बडा कठिन है।क्षणहींमें रामप्रसाद घर द्वार संसार सब भूल गये। घरकी गड़बड़ी, माताका दुःख, गिरजाकी पीडा देने पावनेकी चिन्ता, सब जाती रही। रामप्रसादका दिल नये उत्साहसे भर गया।

आनन्दका वेग जब कुछ ठण्ढा हुआ तब रामप्रसाद बोले "तो सुनो अब तुमको खूब सँभलकर चलना चाहिये घरका काम काज बहुत कम करना चाहिये। मेहनतसे बचना चाहिये। लेकिन् तदबीर क्या है ? कैसे घरका काम काज चलेगा" ?

चमेली—"कैसे चलेगा इसके वास्ते सोचनेका काम नहीं है हमने सब ठीक कर रक्खा है।"

रामप्रसाद—"क्या ठीक कर रक्खा है ?"

चमेली—"बात यह कि, हमें वैरीके घरमे रहना है। इस घर भरमें हमारे एक तुम्हीं हो और सब हमारे वैरी है। एक और अपना आदमी इस वक्त चाहिये। मैं तो कहती हूँ कि, रेखाफुआको बुलाकर रखना ठीक है। वह हमको बहुत चाहती है इस समय जरूर रहना मंजूर करेगी।"

इस वक्त चमेलीकी बात उतराने या खण्डन करनेकी ताकत रामप्रसादको थोडे है। वह बिना कुछ सोचे विचारे राजी होगये और चट बोल उठे—"यह सलाह अच्छी हुई है वह तुम्हारी भी सेवा करेगी। घर सँभालनेमे बडी पक्की है उसके राजी होने-

पर तुमको वहुत आराम होगा । अगर वह राजी होजाय तो काम वने । ”

चमेली—“ राजी होनेके लिये आप चिन्ता न करो इसका भार हमारे ऊपर रहेगा और भी एक वात है हमको लडका होनेकी वात सुनकर सव जल भुनके खाक होगी न जाने क्या क्या करेगी इससे मै लडकी अवोध हूँ इन सव वातोका वचावभी वह खूव करलेगी । ”

इतना सुनकर रामप्रसाद उन्मत्तकी तरह वोल उठा—“तुम्हारी जो वुराई चाहेगा वह हाथे हाथ फलभी तुरत पावेगा । वह चाहे कोई हो मा हो तोभी मै छोडनेवाला नही हूँ । ”

रामप्रसादकी वात खतम होनेके पहलेही चमेलीके चित्तमें आनन्दकी लहरे झकझूमर खेलने लगी ।

पंद्रहवाँ अध्याय ।

ठीक समयपर चमेलीकी वात पूरी की गयी रामरेखा मिस-राइन अव रामप्रसादके घरकी मालकिन वनी । इस घटनासे रामप्रसादकी माके पेटमें त्रिशूल वेधगया वह मारे दुःखके वेकल हो उठी पहले रामप्रसादकी मा और रेखाकी जो गहरी मिताई थी इस घटनाके वाद सव उडकर पार हुई । रेखा सव घरकी फुआ है वरके घरकी मौसी और कन्याकी फूआ वनकर रामप्रसादकी माके साथ अपनी मिताई तो वहुत निवाहना चाहती है लेकिन् कर्मरेख कौन टारे इधर मालकिन अपनी पतोहूका दरनापा चाहे सहले लेकिन पराये वरकी करकटही आकर उनपर मालिकी करनेलगी यह भला कहां उनसे सहा जाय ?

हाँ एक वात और हम भूले जातेहैं पतोहू का गर्भसंवाद सुनकर सासने कुछ खुशी नहीं की. जो सास पतोहूका पुत्रमुख

देखनेके लिये धाम धाम भटकती फिरती थी । जिसने अनेक मठिया और देवी चौरा, हनुमान चौतरा पोताथा वह पतोहूके गर्भसे होनेका सम्वाद पाकर चुप क्यो रही ! हम जानते है अव माने समझ लिया है कि, यही पुत्रलालसा उनके दुःखका कारण है । उनके सर्व्वनाशकी जड यही है । इसी पुत्रलालसाकी तद्-वीरमे उन्होंने अपना सोनेका संसार राई छाई कर डाला है । लेकिन् यह वात अगर उन्होने इतना जल्द समझ लीया तो हम समझते है वह जल्द अपनी जिन्दगी सुधार सकगी । उनकी जिन्दगीकी इससे आगेवाली वातोकी समालोचना करनेसे इस वातकी सत्यतामे सन्देह होताहै । हमने रामप्रसादकी मांके इस चरित्रको वहुत तरहसे समझना चाहा लेकिन् अफसोस समझ न सके जब देवता लोग इनके चरित्र जाननेमे नही पेशपाते तो हम साधारण मनुष्य क्यों समझेगे ! फिर विशेष इन माल-किनोका मंत्र जानना वडीही टेढी खीर है ।

इस मौकेपर गिरजाकी थोडीसी वाते कहनेसे हम समझतेहैं हमारे पाठक नाखुश न होंगे । गिरजा इस खवरसे वहुत खुश है । सुनकर हमारे पढनेवाले और पढनेवालियॉ अकचकायेंगी कि, गिरजा सौतका गर्भसम्वाद सुनकर अपमान, लांछना सव भूलगयी और मारे खुशीके इतनी अधीरा हुई कि, चमेलीके पास आकर वोली—" काहे वहन ! आज मै एक खुशीकी खवर सुनके आयी हूँ । तुमने इतने दिन तक हमको काहे नही वतलाया वहन!"

चमेलीका मुँह गम्भीर होउठा सहसा कोई दुर्भावना होनेसे जैसे किसीका मुँह होताहै ठीक वैसेही चमेलीका मुँह होआया । जिन दिनोंकी बात हम कहते हैं उन दिनो हमारे पास डिटेक्टिव कैमेरा होता तो हम झट चमेलीकी तसवीर खींच लेते और यहां सवके देखनेको लगादेते लेकिन् उसके न होनेपरभी चमे-

लीकी बातें मौजूद हैं लीजिये सुनिये–

चमेली झटसे बोल उठी–"कौन बात हमने तुमसे छिपाया है जो कमर कसके यहां झगड़ा करने आयी हो ?"

गिरजा–"अरे झगड़ा काहेको करूँगी वहन ! तुम तो हमारी छोटी वहन वरावर हो। परमेश्वर करे तुमको एक सुन्दर लड़का हो।"

चमेली–"हमारे नसीवमें होगा तो तुम्हारे असीसनेपर भी होगा और डाह करके कोसनेपर भी होगा ।"

गिरजा–"ना वहन डाह काहेको करें? तुम्हारे लड़का होनेसे हमारे ससुरका वंश चलेगा, हमारे तुम्हारे लड़केमें वहन कुछ फरक थोड़े है?"

चमेली–"फरक काहेका । हमको लड़का जहां हुआ कि, तुम्हारी छाती फटने लगेगी । मैं तो साफ बात कहतीहूँ ।"

वात सुनकर गिरजाके आनन्दका वेग वाधा पानेसे रुकगया। वह विस्मित होकर बोली–"वहन चमेली ! तुम्हारी इस वातसे तो अलवत्त हमारी छाती फट रही है हमने कभी तुम्हारी बुराई नहीं चेती, लेकिन् हमारा नसीवही ऐसाहै कि, तुम हमको ऐसा समझ रहीहो ।"

चमेली चाहे हजार बुरी हो लेकिन् हम सच्ची बात सदा कहेंगे वह रेखाकी तरह पेटमें कपट भरकर वाहरसे चिकनाना नहीं जानती । इसी कारण इसकी बातें रेखाकी तरह मीठी नहीं लगतीं रेखा जो मुँहसे निकालती है वह जहर है सही, लेकिन् वह उसमें मिश्री लपेटकर रखतीहै। और चमेलीका जहर सिरसे पांवतक जहरही जहर है । इस संसारमें शकर लिपटा जहरही अच्छा है । खैर इसका हम इस वक्त कुछ विचार नहीं करते । गिरजाकी बातोंसे चमेली झनककर बोली–"हे, दे, हमारे आगे नसीव नसीव मत करो हमारा नसीव अच्छा इनका नसीव

बुरा है। तिसपर कहतीहै हिसका नहीं करती, हिसका और किसको कहते हैं ?"

गिरजा बेचारी अब क्या करे ! उसके मुँहसे और कुछ बात नहीं निकली और धीरेसे वहाँसे उठकर चली गयी। गिरजाके जानेपर रेखा फुआ वहाँ पहुँची। उसे देखकर चमेली बोली-- "देख तो फुआ कसवियाकी अक्किल तो देख ! हमारे लडका होगा इसीको सुनकर मारे हिसकाके मरीजातीहै ! हमारा नसीब अच्छा और अपना नसीब खराब कहकरके इतनी बात करगयी कि फुआ हम तुमसे का कहे ?"

रेखा चौंककर बोली--"ऐ ! तुम्हारे मुहँपर ऐसी २ बात कहगयी है ?"

चमेली--"और क्या ! वह तो इतनी हिसकामें डूबी जातीहै कि कुछ कहा नहीं जाय !"

रेखा--"खूब खबरदार बेटी ! खूब खबरदार रहियो ! का बताऊं मुझे तो रातभर नींद नहीं आवे। इन सब वैरिनके बीचसे तुम्हारे पेटका बालक कैसे बचेगा इसकी मै कुछ भी तदबीर नहीं देखती।"

चमेली--"तो फूआ कैसे बनेगा ? जब तुम नहीं तदबीर कर-सकती तो का उपाय होगा ?"

रेखा--"बेटी चिन्ता काहेको करो ? तुम्हारा उपाय भगवान् करेगा तुम किसीका अनभल तो चेतती नहीं हो। हे परमेश्वर ! इतना हिसका तुमसे कैसे देखाजाताहै ?"

चमेली--"और सासकी का कहूँ फूआ ! ऐसी सास तो दुनि-यामे देखी न सुनी। अब देखो दिनमें एकबार झाँकती भी नहीं बस महल्ले महल्ले घर घर हम लोगनकी निन्दा करनाही उनका रोजगार होगया है !"

रेखा--"बेटी, पहले तो मै तुम्हारी सासको बहुत भली आद-

मिन समझती थीं, लेकिन् अब तो उनका काम देखके कुछ कहते नहीं बनता हमको तो बेटी किसीके भले बुरेसे कुछ गरज है नहीं न मैं किसीके अच्छेमें न बुरेमें । सो मेरे ऊपर भी जब देखो तब गुस्सा । जिस दिनसे मैं घरमें आयी उस दिनसे सीधी बातभी नहीं करती । मैं उसकी इतनी सेवा बरदास करतीहूँ वह सदा मेरे ऊपर लाल आँख किये ही रहती है ।"

चमेली—"करन दो फूआ ! उनके गुस्सासे कुछ आता जाता तो है नहीं न मैं उनकी कुछ परवाह करती ।"

रेखा—(धीरे धीरे)—हाँ बेटी ! तुम्हे एक बात बताती हूँ हमारे सामने सासको चाहे खूब बकोझको गाली गलोज करो कुछ परवा नहीं, लेकिन् और किसीके आगे उसको कुछ मत कहियो। और सबके सामने उसकी खूब इज्जत करना, उससे खूब भलम-नसीसे बात करना और अकेलेमे या जब खाली हम हो तब चाहे जो कुछ उसको कहलो कुछ करलो कुछ नहीं होगा । तुम बेटी, अभी सीधी सादी कच्ची अकिलकी लड़की हो इसीसे यह बात सिखलाती हूँ यह दुनियाका ढङ्ग है"

चमेली—"मै तो फूआ ऐसाही करना चाहतीहूँ । लेकिन् सहा नहीं जाता । इन सबकी बात खयाल करती हूँ । तब मारे जल-नके बिना बोले रहा नहीं जाता ।"

रेखा—"अहा रे ! अभी हमारी दो दिन की बिटिया जनमतेही सौत का दुःख पड़ा । का करोगी बेटी सब पडनेपर अंगेजनाही पडेगा नहीं तो अभी तुम्हारा कच्चा कलेजा क्या यह सब दुःख देखनेके लायक था ? तुमको तो हमने ऐसे घरमें लगाया था कि, यह सब मुकरिखही ठीक रहती और चण्डालपना नहीं करती तो तुमको जिन्दगी भर सेजपर पड़ेही पडे हुकुम करते और राज रजते बीतता । यह सब घरका काम काज कभी न करना पडता।लेकिन्

सुनो बेटी ! इसको कुछ परवाह मत करो तुमको एक बेटा कुँवर कन्हैया होजाय फिर मै तुमको ऐसीही रक्खूंगी। सब घरका काम काज तो मै अपने ऊपर लेही चुकी हूँ और घरका एक तिनका भी टारने न दूंगी।"

यह कहकर रेखा अपने कामको चली गयी, चमेली मनमे कहने लगी—"इस दुनियामें हमारी फूआके ऐसा अपना दूसरा कौन है?"

सोलहवाँ अध्याय।

इधर गिरजाको एक कठिन रोग हुआ। पहले रातको बुखार आने लगा लेकिन् सवेरेही उठकर नहाना धोना और घरका सब काम काज करना पडता था झुनिया घर बरतरफ हो चुकी है। मालकिन सास घरका काम काज करना तो दूर रहा घर रहती भी नहीं।

इस कारण मिहनतका जो कुछ काम है। गिरजाको करना पडता है। ऐसी हालतमे सख्त मिहनतका जो नतीजा होता है गिरजाके सिरपर भी वही घटा। उसका बुखार धीरे २ चढने लगा। और होते २ वह पलंगपर पड़गयी अब उसे उठने बैठनेकी ताकत नही रही। अब रामप्रसादके घरमे तहलका पड-गया। काम काज कौन करे। रेखा इस घरकी मालकिन हुई है लेकिन् मिहनतका काम उसने जिन्दगीमें किया नही बातोंका जोड़ तोड लगाकर जिसने जिन्दगी काटी है वह मिहनतके पास कब जानेवाली है। और चमेली तो ढीढ लिये बैठी है उसीकी सेवा सहायमे रेखाके पाँवका पसीना कपार पर चढता है। इस गड़बडाध्यायमे अब रामप्रसादको खुद अपने हाथसे हाँड़ी डाली और तसला कडाही करना पड़ी। थपोडी पीट २ रोटी पकाने और चूतड उठा उठाकर चूल्हा फूँकने लगे। न करें, तो खायँ कैसे?

गिरजा अपने दुःखके मारे पलंगसे पाँव नहीं उठा सकती, इधर गाँवमें एक बात उडीहै कि, उसकी सौतको लडका होने-वाला है इस हिसकाके मारे पडी है । इस बातको उडानेवाली वही रामरेखा मिसराइन है । बात भी ऐसे मौकेसे हुई कि, कोई उसपर अविश्वास नहीं करसका । किसीने घर बैठेही बात सच्ची मानली किसीने रामप्रसादके घरतक आकर गिरजाको देखा । जो गिरजाको देखने आयीं थीं उनमेंसे कइयोंने उसके दुःखमें दुखी होकर हाय किया और इधर उधर झाँककर क्या जाने क्या कुछ सलाह कानमें देगयीं । गिरजाने आँसू पोंछ पोछ सबका सुना किन्तु अभागिनीके हृदयका दुःख किसीने नहीं समझा । न गिरजाको इतनी ताकत थी कि, वह अपना दुःख किसीको समझा सके, इस कारण चुप चाप अपना आँसू पोंछना और सब सहना यही उससे बन सकता था । इस दशामें इस अभागिनी गिरजाका दुःख और उसके आँसुओंका मर्म कौन समझेगा ? इस संसारमे न जाने ऐसे कितने आँसू बहा करतेहै ?

आज गिरजाके पिता बिहारीलाल बेटीकी बीमारी सुनकर देखने आये है । अब गिरजाकी बीमारी बडी भयानक होगयी है खाली बुखार नहीं है । बुखारके साथ खाँसी उठती है और मुँहसे खाँसीके साथ खून गिरताहै । बेटीकी यह हालत देखकर बाप बिहारीलाल पलंगके पास बैठकर आँसू पोछ रहेहै । रामप्रसादकी माभी आज बहुत दोचित है । आजतक उसी उडती बातपर विश्वास करके चुपचाप थी लेकिन् आज जेठी पतोहूकी ठीक दशा समझकर बहुत कातर हुई हैं । कुछ देर पीछे बिहारीलालने लम्बी साँस लेकर कहा "दवाई क्या होती है ?"

रोगीके सिवाय दोही आदमी उस घरमें थे-रामप्रसादकी माने जवाबमे कहा "दवाई क्या होगी ! अब क्या हमारा घर पहले-

होके ऐसा है ? न जाने कहाँसे एक हलके घरकी लड़कीने घरमें घुसकर हमारा सब सत्यानाश करदिया है । अब मै तो घरका कुछभी काम काज देखती नहीं । बेटाभी हमारी इस जेठीके नामसे जलउठता है । पिशाचिनीने न जाने हमारे लड़केको क्या खिलाके भेड़ा बना लियाहै । अब दवा दरपन कौन करे करावे?"

बाप चौंककर बोल उठा-" ऐ ! ऐसी भयङ्कर बीमारीमे दवा कुछ नहीं होती ?"

रामप्रसादकी मा रोकर बोली-"आप जो हमारी पतोहूकी जानबचाना चाहते हैं तो बिना कुछ कहे सुने अभी घर लेजाकर दवा करावो और मैं कुछ नहीं कहूँगी ।"

बिहारी लाल-"तो मैं आजही लिये जाता हूँ ।"

गिरजा टूटी आवाजसे बोली-"किसको ले जाते हो बाबा?"

बिहारीलालने आँसू पोंछकर कहा-"तुमको लेजाऊंगा बेटी।"

गिरजा-" ना बाबा, मैं नहीं जाऊंगी ।"

बिहारीलाल-"काहे ?"

गिरजा-" बाबा ! मैं तो कभीकी मरगयी होती । खाली तुम लोगोंके देखनेके लिये प्राण नहीं बाहर हुआ । बाबा ! एकबार देवनाथको देखनेका बहुत जी चाहताहै उसको हमारे मरनेके पहले भेजना तो अच्छा होगा । और एक आदमीको मरते समय देखनेकी साध है जो कोई उपायसे । "

दर दर आँसू गिरनेलगा! कण्ठ बन्द होगया । गिरजाके मुँहसे कुछ बात नहीं निकली । बापने देखा तो आँसूसे गिरजाका सब वस्त्र भीजा जाताहै । वह एक आदमी कौन है सो जानना भी बापको बाकी नहीं रहा । बिहारीलाल कोपके मारे कॉपते कॉपते बोले-" बेटी ! तुम फिर उस पाखण्डीका नाम मुँहपर मत लावो । जो तुमसी सतीकी इतनी दुर्गति करे वह तुम्हारा पति नहीं चाण्डाल है । "

बापके मुँहसे यह बात सुनकर मृत्युसेजपर सोई हुई रोगिनी गिरजा भी उत्तेजित होकर बोल उठी—"ना, बाबा ना ! ऐसी बात हमारे सामने न कहो। तुम्हींने तो मुझको कहा कि, स्त्रीके लिये पतिके समान देवता जगत्में दूसरा नहीं। उनका कुछ दोष नहीं सब मेरे नसीबकी बात है।"

लड़कीको इतना न रहहोते देख बाप बिहारीलाल क्रोध छोड़कर बोले—"बेटी ! स्त्रीके लिये पतिके समान गुरू दूसरा नहीं है सही, किन्तु जो स्त्रीके साथ इसतरह व्यौहार करे वह स्वामीनामके योग्य नहीं है। लेकिन् दूर करो इस बातको हम इस हालतमें तुमको उसके लिये कुछ कहना वा दुखाना नहीं चाहते। इस वक्त तुम हमारे घर चलो। जब समधिनकी भी राय है तब मैं आजही तुमको लिवाजाऊगाँ।"

गिरजा—"ना बाबा इस घड़ी मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।"

बि० लाल—"बिनागये तुम्हारी जान कैसे बचेगी?"

गिरजा—"नहीं बाबा ! अब जान बचानेसे क्या काम है? पतिस्वरूप परमेश्वर जिसपर टेढा है उसको जीनेसे क्या काम?"

पिताने आँसू भरी आँखोसे एक बार बेटीकी ओर देखा। बेटीका उदास मुँह देखकर बापकी छाती फटने लगी। फिर आँसू पोछकर बापने कहा—"बेटी ! यहाँ रहनेसे तुम्हारी दवा नहीं होगी। अगर मरनाही..."

बापके मुँहसे और बात नहीं निकली। कण्ठ बन्द हो आया। गिरजा आज बापके आगे बात करते नहीं सकुचाती। जब सामने विपत आपडती है तब लज्जावतीकी लज्जा भी साथ छोड़ भागती है। गिरजा फिर बोली—"बाबा ! मैं चाहती हूँ कि, मरतीबार तो एकबार देखलूँ, इसी आशासे यहाँसे नहीं जाती।"

इतनेमें रामप्रसादकी मा रोती हुई बोली—"बेटी ! मैं ही

तुम्हारे सर्वनाशकी जड हूं। तू हमारे घरकी लक्ष्मी है। तुम्हारा निरादर करके मैंने हाथोंहाथ उसका फल पाया है। बेटी ! तुम अच्छी होजावोगी जिओ जागो। मैंने अव तुम्हारा गुण समझा है। अव कभी तुमको कोई वुरी वात न कहूँगी। "

गिरजा—"माजी क्यों ? उन वातोको याद करके मनमे दुःख करती हो ? कौन कहता है कि, हमारा आदर नहीं हुआ ! कव हमको तुमने गाली दी और वुरा कहा। तुम जैसी गुणवती सास कौनके नसीब होती है ? माजी ! तुमको पानेसेही मुझे माका शोक भूलगया है। दुःखकी वात यही रही कि, मैं तुमको सुखी न करसकी। "

सास कुछ स्थिर होकर वोली—" ना वेटी। मुझे तो तुम अव भी सुखी कर सकती हो ? तुम चलो। तुम्हारे साथ मैं भी तुम्हारे मायके चलती हूँ। वहाँ तुम्हें वचासकूँ तो मैं वहुत सुखी होऊँगी।

गिरजाकी आँखोंमे आनन्दकी ज्योति दीख पडी। वह तुरंत वोल उठी--" माजी ! तुम सुखी होगी। तुमको सुख होगा तो माजी ! चलो अभी चलूँगी। चलो ! लेकिन् जाते वार देखलेती। मा ! एकवार भेट होगी कि, नही, यदि देखना नसीव न हो माई ! भेट न हो। "

इतना कहते २ गिरजाकी आँखें वन्द होगयीं लेकिन् इन वन्द पलकोंसे आँसू नहीं रुकसका छाती तक धार लग गयी । उस अश्रुधारासे पिता विहारीलालको बडी पीडा हुई उसे सह न सके और उसी वक्त उठ कर न जाने कहाँ चले गये।

सत्रहवाँ अध्याय।

विहारीलाल भीतरसे एकदम वाहर वैठकखानेमें आये, वहाँ रामप्रसादसे भेट हुई। दामाद ससुरको प्रणाम करके कुशल मङ्गल पूँछने लगे। ससुर उनका कुछभी जवाव न देकर बोले—" यह

सव शिष्टाचार इस वक्त रहने दो मैं 'यह पूँछता हूँ कि, इतने दिनोंतक हमको इसकी खवर क्यो नहीं दीगयी ?"

ससुरका अकस्मात् ऐसा कोप देखकर रामप्रसाद अकचकाए और विस्मित होकर वोले–"किसकी खवर ?"

ससुर–"वीमारीकी खवर"

रामप्र०–"किसको वीमारी हुई है ?"

ससुर–"क्यों क्या मेरी लडकीको वीमारी हुई है इसकी खवर तुमको नहीं है ?"

रामप्र०–"ना मैं तो कुछभी नही जानता।"

ससुर–"यह तो वडे आश्चर्य्यकी वात है तुम्हारी स्त्री तुम्हारे ही घरमें भयानक रोगसे दुःखी होकर मृत्युसेजपर पडी मौतके दिन गिन रही है और तुम्हें उसकी कुछभी खवर नहीं है ?।"

रामप्र०–"ना, मैंने तो कुछ नहीं सुना!"

ससुर–"खैर तो तुम्हे सुननेकी कुछ जरूरत भी नहीं है। इस वक्त जैसी हालतमे वह पडीहै तुम्हारा न सुननाही ठीक है।"

रामप्र०–"मैंने इतना तो सुना था कि, मेरी छोटी स्त्रीको लडका होनेवाला है इसके हिसकामें पडकर आपकी लडकी पलँगपर पडी है।"

ससुर०"खैर अगर इतना सुना तो अपनी आँखसे भी उसे एक वार देखकर ठीक वात क्या है सो जानना उचित है या नहीं?"

रामप्र०–"जिस वातको सुनलिया था उसे फिर देखकर ठीक करनेका क्या काम था ?"

ससुर–"अच्छा जो तुमने किया है सो अच्छाही किया है। उसके लिये मैं कुछ भी कहना नही चाहता। अव मैं अपनी लड़कीको लिवाये जाताहूँ यहाँ उसकी जान नहीं वचेगी।"

रामप्रसाद–"हाँ अगर आप चाहें तो लेजाँय लेकिन् हमपर नाहक आप नाराज हुए।"

ससुर—अबकी एकदम क्रोधान्ध होकर बोले—" घरमे कुत्ते बिल्लीको भी ऐसी बीमारी होनेपर आदमी दया करता है एक लौंडीपर भी ऐसी हालतमे लोग दया करते हैं । लेकिन् तुम्हारी खुद स्त्री ऐसी पीड़ामे अब तबकी हालतमे पडी है और तुमने कुछ दवाकी तदवीर नहीं की और उलटे हमको नाहक नाराज होनेकी बात कहते हो, कुछ शरीरमे दया शरम है ? "

रामप्रसाद थोड़ी देर चुप रहकर बोले—"जब मैं रोगीका कुछ हालही नहीं जानता तो उसकी दवाका क्या बन्दोबस्त करूँ । "

ससुर बिहारीलाल पहलेसे भी अधिक नाराज होकर बोले—"तो किसी लुचेके मुँहसे झूठी बात सुनली उसपर तो यकीन कर लिया ? "

रामप्रसाद अबके अप्रस्तुत होकर धीरे धीरे बोले—"एक लुचेने नहीं कहा सबके सबने कहा तब विश्वास किया । "

बिहारीलाल कुछ स्थिर होकर बोले—" खैर छोडो उस बातको मुझे तुमसे एक बात पूछना है । मेरे घरमे कोई ऐसी औरत नही है जो उसकी सेवा ठीक करसके । तुम्हारी मा साथ जाना चाहती है, तुम क्या कहते हो ? "

रामप्र०—"मा अगर जाना चाहती है तो मै क्यो रोकूं चली जाय।"

तो मैं आजही सबको ले लिवाकर चला जाऊँगा कहकर बिहारीलाल भीतर गये और जानेकी सब तैयारी करने लगे ।

ससुरके जानेबाद रामप्रसाद कुछ देरतक न जाने क्या सोचते रहे फिर आप भी भीतर गये । भीतर वह सीधे गिरजाके घरकी ओर जा रहे थे लेकिन् दरवाजेपर जाकर आगे बढनेकी हिम्मत न हुई। तब वहांसे लौटकर चमेलीके घरमे घुसे उसने उनका मुँह देखकर पूँछा "आज तुम्हारा मुँह इतना उतरा क्यो है ?"

रामप्रसादने इसका जवाब नहीं दिया. फिर चमेलीके दोबारा

पूँछने पर उन्होंने कहा-ससुरजी अपनी लडकीको लेने आयेहैं सुनाहै?

चमेली-"हाँ वह तो सुना है। फिर वह अपने बापके यहां जायँ तो जाने दो चिन्ता क्या है? रेखाफुआ भी कहतीहैं कि, कुछ खातानामा हो सो उन्हींके घर होना अच्छा है।"

रामप्रसाद अकचकाकर वोले-"ऐं! तो क्या वह सचमुच इतना वीमार है?"

चमेली मुँह वनाकर वोली-"सुनती तो हैं कि, अब उनका वचना कठिन है।"

रामप्रसाद-"तुम्हारे लडका होनेके हिसकासे वह पडीहै यह वात जो उडी थी सब झूठीथी?"

अवकी चमेली वाहरी कोप जाहिर करके वोली-"वह वात झूठी उडी थी यह कौनने कही? पहले तो उसीमें वह पडीथीं लेकिन् भगवान् कहीं गया तो नहीं है। फूआ कहती है कि, जो परायेकी बुराई चेतकर कुछ करता है भगवान् उसकी बुराई पहले करताहै। इसीसे परमेश्वरने ऐसा किया है पडेही पडे अब ऐसा रोग हुआहै कि, वचनेका भरोसा नहीं है।"

चमेलीकी इन वातोंका मतलव रामप्रसादके मनमें वैठगया उनके मनसे आत्मग्लानिका भाव जातारहा। चित्त प्रसन्न हो आया। तो हमलोगोंने समझनेमें भूल की थी रामप्रसादका उदास मुँह देखकर समझा था कि, गिरजाके भयङ्कर रोगकी खवरसेही उनको इतनी उदासी होरहीहै। लेकिन् अब जानपडता है रामप्रसादकी उदासीका और सवव है। अगर रामप्रसादके निरादरसे गिरजाको महाभयङ्कर रोग हुआ हो तो वेशक वह उसके लिये दु:खी होसकतेथे लेकिन् खुद गिरजाके कसूरसे उसको यह पीडा हुई है तो फिर रामप्रसादको दु:ख उठानेकी क्या जरूरत है? वल्कि पापका प्रायश्चित्तस्वरूप गिरजाकी यह हालत देखकर रामप्रसाद मारे खुशीके शरीरमें नहीं समाते। जब इन सब

बातोंकी कैफियत खुद श्रीमती चमेली देवी देरही है तब उसमें रामप्रसादको किसी तरह शकभी नहीं होसकताहै। कहिये पढनेवाले और पढनेवालियो ! रामप्रसादके मनकी अवस्था कुछ समझमे आयी ?

रामप्रसादने प्रसन्न वदन होकर कहा—"अच्छा यह तो सब ठीक है भला मा क्यों उसके साथ जारहीहै ?"

श्रीमती चमेलीका तुरंत जवाब हुआ—"वह जाती है तो जायँ न उनके रहेसे हमारा कौन उआरा होगा। हमारी फूआ तो हई है।"

रामप्रसाद—"अच्छा तो ऐसाही सही।"

चमेली मौका पाकर फिर झगडने लगी—"माकी आक्लि तो देखो। आखिर तो उनको वही पियारी है न ? हमारी कुछ भी उनको परवाह नहीं है।"

रामप्रसादने एक वडी साँस फेककर कहा—"भगवन् तुम्हारी परवा करेगा ! उसकी चिन्ता उसीको है जगत् भरकी वह खबर रखता है।"

अठारहवाँ अध्याय।

बिहारीलाल बेटी गिरजाको लेकर अपने घर चुनारमें पहुँचेहैं। करचना स्टेशनमें रेलपर सवार होते होते उनके साथ बेटीके सिवाय और तीन आदमी आमिले थे। गिरजाकी सास, नकदबनी झूनादाई और एक नौकर। चुनार रेलस्टेशनसे कोसभरपर बिहारीलालका पक्का पत्थरका दोतल्ला मकान था जहाँ आजकल कोतवाली है, वहाँसे थोडी दूर गङ्गाजीकी ओर हटकेहै। उनका सुन्दर सुसज्जित गृह आकाशमण्डलमे अपनी छटा दिखारहा था। दस बरस हुए बिहारीलालकी स्त्रीका स्वर्गवास होगया। तबसे उन्होने दूसरी शादी नहीं की। गिरजाके सिवाय

उनको एक और लडका है । उसका नाम रामधनलाल । राम-धन गिरजासे वडा है । रामधनकी मा वडी मुखरा थी । इस-कारण विहारीलाल वहुत दुःखी थे और उसी दुःखको याद करके फिर शादी करनेको जी नहीं हुआ । केवल रुपया पैदा-करनेके सिवाय उनको और किसी वातका शौक नहीं था। इसीसे उन्होंने जिन्दगीमें रुपया पैदाभी खूब किया था । जो कुछ वह पैदा करते थे उसे खर्च करनेके वदले वचाकर जमा करनेमे अधिक आनन्दित होतेथे । और यही कारण है कि, उम्मीदसे ज्यादा धन उन्होंने जमाकर लियाथा । वह इस तरह कृपण स्वभावके होनेपर भी कभी एक पैसा अनुचितरूपसे नहीं पैदा करते न करनेकी नीयत रखतेथे । और कभी अन्यायरूपसे एक पैसा भी उनका कोई ठगलेता था तो वह हदसे ज्यादा दुःखी होतेथे । स्त्रीके मरने परभी वूढेको सुख नहीं मिला । सुख न मिलनेका कारण वही रामधन था । रामधनको पढाने लिखानेके लिये विहारीलाले खूब रुपया खर्च करे या न करें लेकिन् तदवीर करनेमे कुछ उठा नहीं रक्खा था । रामधन लडकपनसेही दुराचारियोंकी संगतमे पडकर पढने लिखनेसे कोसों दूर रहा । उमरके किनारे पहुँचतेही लम्पटोंके लपेटमे पडकर एक रण्डीके प्रेमकीचमे ऐसा वेतरह फँसा कि, फिर निकल न सका । पिता उसको सुधारनेके लिये वहुतही व्याकुल हुए । यहां तक कि, उसपर सव तरहका शासन करने लगे, लेकिन् जव देखा कि, किसीसे कुछ फल नहीं होता तो नाराज होकर एकदम ढील दिया । फिर अन्तमे उससे वात तक कर-नाभी छोड दिया । अव वेटा रामधन दुर्गतिके खन्देमें नीचे उतरने लगा । रुपया और कुलमर्यादाके लालच अनेक लोग अपनी लडकीका व्याह रामधनसे करने पर उतारू हुए । व्याह होनेपर चिन्ता करके शायद रामधन घर चेते इस उम्मीदपर

बिहारीलालजी व्याह करनेपर राजी हुए लेकिन् रामधनने व्याहही करना मंजूर नहीं किया। अन्तमें वापभी नाराज होपडा और व्याहकी वात लानेवालोको बेटेकी सब करनी वता बताकर अपनी लाचारी जाहिर करने लगा। जब रामधनके स्वभावकी कलंकरटना सर्वत्र फैलगयी तब जांकर वापने लडकी-वालोके कुकुरचोंथनसे रिहाई पायी।

बिहारीलाल अब बेटेका मुँहभी नहीं देखते न उसकी कुछ खोज खबर लेते। बेटा रामधनभी अब वापके सामने मुँह नहीं दिखाता। कभी आता कभी आताभी नहीं. लेकिन् जब रुपयेकी जरूरत होतीथी तब वापसे जरूर मिलताथा इस मिलनेका फलभी होता था लेकिन् वह वहुत दिनतक नहीं चला क्योंकि जिस रुपयेको उन्होने घडो पसीना वहाकर पैदा कियाथा उसे इसतरह कुमार्गमें फेकनेको हरगिज नहीं दे सकते थे। अन्तमें अपना मनमाना करनेके लिये वह चोरी करनेपर उतारू हुआ और वापका सन्दूक तोडकर कभी रुपया निकाल लेजाने कभी कोई उनकी चीज लेजाकर वेचने और अपना काम चलाने लगा। इसी तरह वह चैन उडाता और अपने यारोंमे वाहवाही कमाता था।

बेटेकी इसकरनीसे वाप बिहारीलालको सुख कहाँ नसीवहो, वरमे उनकी विधवा वहनके सिवाय और कोई आत्मीया नहीं थी। उस विधवा वहनका नाम जमुना था। जमुना विहारीलालकी छोटी वहन वालविधवा होनेके कारण वापहीके घरमें पलतीथी। उसको कोई लडका वच्चा नहीथा। वह रामधन और गिरजाको प्राणसेभी अधिक प्यार करती थी। जबने गिरजा सासरे गई तवसे जमुनाको रामधनही अकेला अवलम्ब रहा। माताके मरनेपर रामधनको वह और अधिक चाहने लगी थी। और यही अधिक चाहना रामधनके रसातलजानेका कारण था। वह रामधनको इतना चाहती थी

कि, उसका बहुत बड़ा कुकर्म देखकर भी उसे दोष नहीं समझ-तीथी। और यहाँ तक कि, उसके यह सब दोष ढाँकनेको जीजा-नसे इतना तैयार रहतीथी कि, इसकेलिये भाई बहनमे बहुधा विवाद हुआ करता था। हमने बिहारीलालकी सांसारिक अव-स्थाका इतना आभास मात्र दिया है। और बातोंका हाल पाठक आगे जानेंगे।

उन्नीसवाँ अध्याय।

बिहारीलालने बेटीको घर लाकर पहले उसकी दवाका बन्दो-बस्त किया। कई बडे २ वैद्योंकी दवा शुरू हुई। पहले दिन गिरजाको देखकर वैद्योंने जो राय ज़ाहिर की उससे किसीको गिरजाके बचनेका भरोसा नहीं हुआ। वैद्योंने सिर्फ यही उम्मीद दी कि, एक हफ्ता दवा खानेपर तो बचने और न बचनेकी बात ठीक ठीक मालूम होगी। दवा होने लगी लेकिन् सात दिनकी बात कौन कहे! तीनही दिन दवा खानेपर रोगीकी जो दशा बदली उसे देखकर सब लोग बडे अचम्भेमे आये। खुद वैद्यराज अपनी दवाका इतना गुण देखकर अकचकागये। पहले रोगीकी दवा दारू वा सेवा सहाय कुछभी नहीं हुई थी चुनार आनेपर गिरजाकी दवाके साथ सेवा शुश्रूपा भी खूब हुई। रामप्रसादकी मा, जमुना, झुनियाँ और दूसरी नौकर नौकरानियाँ सब गिर-जाकी सेवामे लगीथीं। गिरजाकी सेवा करनेवालोंमें एक और बडे अचरजकी बात देखी गयी। जो रामधन घरवालोंसे दो घंटेसे अधिक कभी नसीब नहीं होताथा वह भी बहनके पलंगके पाससे हफ्ते भर तक नहीं टला।

जमुनाके आनन्दकीभी सीमा नहीं रही। गिरजाको भी इस बातसे इतना आनन्द हुआ मानो उसका सब रोग दूर होगया। इस मौकेपर जमुनाने रामधनकी चालचलनके बारेमे भाई

विहारीलालसे वहुत कुछ शिफारिश की। और हफ्तेभर तक घरसे न जानेकी बात सुनकर विहारीलालकोभी अचम्भा हुआ। लेकिन् जब दश दिन बाद रोगीकी दशा सुधरी और ज्यो २ गिरजा पुष्ट होतीगई त्यों २ रामधनका घर रहना घटनेलगा और अन्तको रामधन वही रामधन होगया। कभी किसी दिन धीरे, २ आकर रोटी खाजाय कभी आयेही नही। अन्तमे रामधनकी यह दशा देखकर जमुनाने एक दिन गिरजासे कहा--"सुनो वेटी ! रामधन तुमको वहुत मानता है। देखो तुम्हारी वीमारीमे सात दिन सात रात तुम्हारे पलॅगसे नहीं हटा सो तुम उसको समझा बुझाकर विवाह करनेपर राजी करो तो ठीक है काहे समधिन?"

समधिन अर्थात् रामप्रसादकी मा भी वहीं बैठी थीं। वह वोलीं हां सादी करदेना ठीक है। सादी करेसे आदमी घर चेतता है।"

गिरजा--"अवतो सात आठ दिनसे भैया नहीं आता"

राम० मा०--"नही लडका वहुत वेकहा होगया है। रात दिन वाहरही रहता है। खराव होजायगा।"

जमुना--"ना ! खराव नहीं हुआहै ? लडकाईसेही उसको गाने वजाने का वडा शौक रहा सो गाने वजानेके मारे घर नहीं आता। तवला ऐसा वजाता है कि, थाप सुनकर वडी वडी मैना तौंकी मोहित होजाती हैं गाना वजाना पढ़ने लिखनेसे भी वडा मुसकल होता है।"

राम०मा०-"हाँ लेकिन जो गाने वजानेमे वहुत रहता है उसका स्वभाव कहाँ ठीक रहता है। उसका मिजाज विगड जाता है।"

जमुना--"नहीं समधिन, हमारे रामधनका सुभाव वैसा नहीं है।"

गिरजा--"काहे फुआ ! सुनत हैं भैया दारू पीता है।"

जमुना--"अरे आज कल दारू कौन नहीं पीता वेटी ?"

गिरजा--"और सुनत है कसवी राखे है।"

जमुना--"अब ऐसे जवान आदमीका व्याह नहीं हो तो कसवी कौन नहीं राखेगा ?"

गिरजा--"घरका बहुत माल असबाब खोते है ।"

जमुना--"जान पडता है तू भी बाप की तरह हुई जाती है । तेरा बाप भी उसको भर आँख नहीं देख सकता । उसको रामधनकी सब बुराई ही देख पडती है तूभी वैसी ही है क्या ?"

गिरजा--"ना, फूआ, तू नाराज काहेको होती है ? मैं उस भावसे नहीं कहती । इन सब बातोंको सुनकर मुझे बडा दुःख होता है और विश्वास नहीं होता इसीसे तुमसे पूँछती हूँ ।"

जमुना--"तेरे बापहीने तो बेटेको बिगाडा है । इतना बडा लडका हुआ हाथमे एक पैसा तक नहीं देते थे । तब घरकी चीज वस्तु न ले जाय तो का करे ? पराये घरमें जाके सेंध तो मारेगा नहीं ?"

गिरजा--"अच्छा देखो फूआ ! अबकी भैया मिले तो मैं उनको व्याह करने पर जिद करके राजी करूँगी ।"

इतनेमे एक दासीने आकर बाबूके आनेकी खबर दी । यह बाबू वही रामधनलाल थे । बिहारीलालको सब मालिक कहकर पुकारते थे । और रामधनको बाबू । जमुना सुनतेही उठकर चली गयी। और आधे घंटेके अन्दर रामधनको लेकर फिर आयी । जब रामधन उस घरमे पहुँचा जहाँ गिरजा पडी थी तब रामप्रसादकी मा और जमुना दोनो वहाँसे चली गयी । अकेले पाकर गिरिजा बोली "काहे भैया । कई दिनसे मैंने तुम्हे नही देखा कहाँ रहे ?"

रामधनने उसका जवाब न देकर पूँछा--"अब तू कैसी है ?"

गिरजा--"अब तो भैया अच्छी हूँ ।"

रामध० "फिर अब तुम्हे देखनेका क्या काम है ?"

गिरजा -"हमको नही देखो न सही, लेकिन भैया घर दुआर तो देखना चाहिये !"

रामधन--"जब बाबा जीते है तबतक हमको घर दुआर देखनेका क्या काम है ?"

गिरजा--"काहे भैया ! बाबाके घरमे तुम्ही मालिकहो अब सयाने भये तुम न देखोगे सँभालोगे उनके जीतेजी सब नही समझोगे बूझोगे तो कैसे बनेगा ?"

रामध०--"बस ! बस ! रहन दे ! बहुत बुजुरगी मत छाँट एककी पीडासे मरते थे तू और ऊपरसे जलेपर नमक लगाने चली है। जो समझना बूझना है वह हमको तुम्हे समझानेकी जरूरत नही है।"

गिरजा--"काहे भैया ! तुम्हें क्या दुःख है ? कौनके दुःखसे मरे जाते हो ?"

रामधन--"हमारे दुःखकी बात तू क्या समझेगी ?"

गिरजा अब आग्रह करके बोली--"नहीं भैया सच कहो तुम्ह कैसे सुख होगा ?"

भैयाने मुँहही पर चटसे कहा--"बाबाके मरे बिना तुम्हारे भैयाको सुख नही है।"

अब तो बहनकी बोलती बन्द होगयी। पिताकी मृत्युकामना भैयाके मनमें देखकर गिरजाको बडा दुःख हुआ। लेकिन् उस भावको छिपाकर उसने कहा--"भैया ! तुम व्याह करलो तो तुम्हें सुख मिलेगा।"

"व्याह नहीं करेंगे। अपनी श्राद्ध करेंगे" यह कहकर रामधन उस घरसे चलता हुआ। गिरजा चुप चाप दरवाजेकी ओर देखती रही।

बीसवाँ अध्याय।

गिरजाकी बुनारमे क्या दशा है। उसकी दवा दारूका क्या बन्दोबस्त हुआ है। दवासे कुछ लाभ हुआ या नहीं इन सब

बातोंकी खबर रामप्रसादने अबतक कुछ नहीं ली । रामप्रसादके व्यौहारसे सब अचम्भित हुए । मनुष्य क्या इतना नीच हो सकता है । ऐसा विश्वास करनेका साहस नहीं होता । करछनासे चुनार बहुत दूर नहीं है मन करनेसे तीन घंटेमे आदमी पहुँच सकताहै लेकिन् रामप्रसाद अपनी वैसी सती गिरजाको उस भयङ्कर दशामे भेजकर क्यो बेफिक्र बैठे है सो हम नहीं समझ-सकते ! यह हम लोग खूब जानते है कि, रामप्रसादकी निन्दासे गिरजा नाराज होगी इसी कारण हम घटनाका प्रारम्भही कहकर चुप रहते हैं रामप्रसादके स्वभावके बारेमें हम और कुछ नहीं कहते।

गिरजाके शरीरका रोग तो आराम होगया लेकिन् उसके मान-सिक रोगकी वढतीके सिवाय घटती नहीं होती । तो भी वह अपनी सहनशीलताके प्रतापसे इस रोगका कुछभी चिह्न बाहर नहीं होनेदेती । प्रारब्धपर भरोसा रखकर सब कुछ सह रहीहै । गिरजाने दिन बितानेकी एक औरभी तदबीर निकाली है । दिन-भर स्नान, ध्यान और देवीपूजा आदिमे लगी रहती है । इन्हीं बातोंमे वह दुःखजनित अपने अस्थिर शरीरको स्थिर रखती है ।

इधर मातृस्नेहकी अपार महिमा देखो । जो रामप्रसादकी मा लडकेकी घरघर निन्दा किये बिना जल नहीं पीतीथी । वही मा आज बेटेकी खबर न पानेसे बडी व्याकुल हैं । जमुना रामप्रसा-दके व्यवहारकी बात छेड़कर कभी २ समधिनके सामनेही राम-प्रसादकी बहुत निन्दा कर जाती है । किंतु रामप्रसादकी माको वह अब सहा नहीं जाता तो रामप्रसादकी मा क्या पराये मुँहसे अपने आत्मीयकी निन्दा नहीं सुनसकती ? लेकिन् उसपर हम लोग कैसे विश्वास करेंगे ? वही झुनियाँ जो दिनमें पचीस बार चमेलीकी चरचा छेडकर नाकदबाती और निनिनाकर गाली देती है उससे तो रामप्रसादकी माका हृदय उमडानके सिवाय दुःखी नहीं होता । इस समय बेटेकी खबरके लिये माको बहुत दुःखी

देखकर गिरजाने एक तदबीर की, उसने दूसरे तीसरे दिन एक आदमी अपने सासरे भेजकर स्वामीका हाल लेना शुरूअ किया वह आदमी चुपचाप वहाँ जाकर रामप्रसादका हाल लेता और गिरजासे आकर कहताथा।

एकदिन शामको आकर उसने खबर दी कि, रामप्रसादके लडका हुआ सौतके लडका होनेका समाचार गिरजाको दुःखदायी होगा ऐसा समझकर उस आदमीने डरते २ यह बात सुनायी। लेकिन गिरजाको इस खबरसे इतनी खुशी हुई कि, उसने अपने हाथका चाँदीका वेरा (पहुंआ) उतारकर उस नौकरको इनाम देदिया। किंतु माने उस खबरसे कोई खुशी नहीं जाहिर की। दूसरे दिन सबेरे उठकरही रामप्रसादकी माने घर जानेकी इच्छा जाहिर की। वह दिन पश्चिमको दिशाशूल था। सब लोगोंने यात्रा अशुभ जान मनाकिया। लेकिन् माकी ममताका वेग कहाँ? मा तो चट रवाना हुई और गाडीपर चढकर करछना पहुँची।

इक्कीसवाँ अध्याय।

रामप्रसादकी मा जब घर पहुँची तब नौ बजगये थे। इसकारण उस दिन रामप्रसादसे भेट नहीं हुई वह इसके पहलेही खापीकर ऑफिसको चलेगयेथे।

घरमे प्रवेश करतेही रामप्रसादकी माको पहले रेखा मिसराइन मिलीं। उस तरह उनके आनेसे पहले तो वह बहुत चकराई किन्तु उस भावको गुप्त रखकर बोली—"आव! आव! बहन आव! तुमको नाती हुआ है। आव देख।"

रामप्रसादकी माने रेखाकी इन बातोंका जवाब कुछ नहीं दिया और भीतर चली। रेखा कहीं कामको जारही थी किन्तु अब नहीं जासकी। रामप्रसादकी माके साथही भीतर यह कहती हुई चली—" घरकी मालकिन बिना सब हँसी खुशी नीरस मालूम

होती है और बिना मालकिनके हँसी खुशी हो भी नहीं सकती। अब मालकिन आगयी। अब अलबत्ते हमलोग खूब खुशी मनावेगी। उधर पतोहू अलगे सास सास करके सूखी जाती थी। भली करी बहन अच्छे मौकेपर आगयी। अब शंख बजावो माये लोगे अब शंख बजावो।"

रामप्रसादकी माको रेखाके इस आदर अभ्यर्थनाकी बडी चोट लगी। आज उन्हींके घरमे रेखा उनका स्वागत करने आयी है यह भला उनसे कब कहा जासकता है? विच्छूके डंक मारनेसे जैसे शरीरमे पीडा होती है रामप्रसादकी माको भी रेखाकी हरबातसे वैसीही पीडा होने लगी। विश्वेश्वरीकी बातोंसे रामप्रसादकी माके जीमे बडे बडे विचार उठने लगे। जब लडका हुआ तब उनको खबर नहीं दीगयी। ऐसी खुशीके मौकेपर भी उनको बुलानेके लिये आदमी नहीं भेजागया, इन्हीं सब बातोको विचार कर रामप्रसादकी माका दुःख उथलपड़ा। लेकिन् इस घडी आँखोंका आँसू गिरनेसे शायद उनके नातीका कुछ अमङ्गल हो इसी डरसे उन्होंने अपने आँसू रोकलिये। वह विना किसीको कुछ कहे सुने सूतिकागृह (सौर) मे चली गयी और बड़ी श्रद्धासे नातीको गोदमे लेकर बैठी। नातीका मुँह देखकर आजीको बडा आनन्द हुआ पुत्रका असम्मान, पतोहूका अत्याचार उनके जीसे जातारहा।

चमेलीकी प्रकृति कितनीही नीच हो लेकिन् सच्ची बात हम जरूरही कहेंगे। इस समय चमेलीने सासका उचित सन्मान करनेमे उठा नहीं रक्खा। और प्रणाम करके कहा—"माजी! देखो तुम्हारा नाती हुआ है असीस दो कि, जीएजागे।"

सासने भी प्रणाम आनन्दसे मंजूर करके कहा—"बेटी तुम्हारी अहवात सदा अचल रहे और यह हमारा नाती जुग जुग जीए। हमारे सिरमे जितने बाल हैं तितने लाख बरस हमारे नातीका उमर होय।"

ठीक है सव होसकताहै। वेटाका मुँह देखनेसे सासका सब दु:ख भूल चमेली प्रणामकरके आशीर्वाद प्रार्थना कर सकती है। सासभी नातीके आनन्दमें पतोहूका सब व्यौहार भूल जा सकती है। लेकिन् यह सब होते भी यह कभी नहीं हो सकता कि, यह सुन्दर सुखसम्मिलन रेखा अपनी आँखोसे देखसके। वह पिशाचिनी मा पतोहूका यह सुखसमालाप देख माहुरका घोंट घोटकर रहगयी। और अभ्यासके अनुसार अपने हलाहल पूर्ण हृदयसे अमृत वरसानेके लिये वोली—"हाँ वहिन! भला तुमने का देकर नातीका मुँह देखा है?"

इसका जवाव दिये विना रामप्रसादकी माको रिहाई नहीं मिली इसलिये उन्हे कहना पडा—"मैं क्या देकर नातीका मुँह देखूँगी वहन?"

रेखा फिर वोली—"नहीं वहन ऐसा तो नहीं होगा। जो सुनेगा सो क्या कहेगा? और समधियानवाले क्या कहेंगे? कैसे मैं उनके आगे मुँह दिखाऊँगी।"

राम० मा—"अरे तो तू का जानती नहीं हो कि, हमारे पास क्या रक्खा है! जो था सव तो छोटी पतोहूको दे चुकी हूँ। अब हमारे हाथमे क्या है?"

रेखा—"वह देना वहन और वात है, यह देना और है ऐसा दिन फिर कभी नही पाओगी।"

राम० मा—"अच्छा तो हमारे वचाको घर आनेदे उससे लेके हम नातीके हाथमें कुछ देदेंगी।"

रेखा—"ना वह देना कौन देना है?"

रेखाकी वातसे रामप्रसादकी माको वड़ा दुःख हो रहा था किन्तु सब गोपन करके वोली—"हम जो कुछ नातीको दें भी वह सब भी तो हमारी छोटी पतोहूही का है।"

रेखा—" यह तो है लेकिन् बेटासे लेकर नातीको देना नहीं कहलाता । "

राम० मा—" काहे लड़केका रुपया क्या हमारा नहीं है ? "

रेखा फिर हँसकर बोली—"नहीं बहन. वह बात यहाँ नहीं लगेगी।"

रेखाका कार्य्यसिद्ध हो चुका है । चमेली और रामप्रसाद की माके आनन्दाकाशमें विवादका चाँद उदय हुआ है । अब सासके प्रति चमेलीके मनका वह भाव नहीं है । लेकिन् इस भावको जाहिर करके चमेलीने सासको कुछ नहीं कहा ।

शाम होनेके पहलेही रामप्रसाद घर आये । माको देखकर पुत्रने प्रणाम किया माने आशीर्वाद देकर कहा—"बचवा मैं तुम्हारा लड़का देखने आयी हूँ ।"

बेटेने कहा—"अच्छा किया है मा । वहाँ सब लोग अच्छे तो हैं?"

राम० मा—"बेटा तुमको उनके अच्छे बुरेसे का काम है । पतोहूको कैसी हालतमें ले गयी सो तुमने मरने जीनेकी कुछ खबर भी नहीं ली ।"

पुत्र—"अपनी लड़कीको लेजाते समय ससुरजी हमपर बहुत नाराज हुए थे इसीसे खबर लेनेको आदमी भेजनेको जी नहीं चाहा।"

मा—"अच्छा तो तुमको छः दिन लडका भये हुआ । हमको खबर काहे नहीं भेजा ?"

पुत्र—"इस खबरसे तुमको खुशी हो सकती थी, लेकिन् वहाँ और लोगोंके लिये तो यह खुशीकी खबर नहीं थी ।"

हम लोगोंने समझाथा कि, गिरजाकी ओरसे माता बेटेको दो चार बात कहेगी, क्योंकि इनके सामनेही गिरजाने सौतके लडका होनेकी खबर देनेवालेको हाथका बाला इनाम दिया था। किन्तु माताकी अकल इतनी तेज नहीं वह ऐसी पतोहूकी ओरसे पुत्रका ऐसा कलुषित भाव दूर करनेके लिये एक बातभी नहीं करसकीं । गिरजाकी हितकारिणी होकर भी इतनी अकल नहीं

कि, वह कैसे हिल करसकती हैं । केवल इतनाही बोलीं—"एक कुटुम्बके घरमें थी तुमको पुत्र हुआ । इसकी खुशीमें मुझे बुलानेक लिये आदमी तक नहीं भेजा । मैं विना बुलाये चली आयी इससे बेटा भला किसकी बडवारगी हुई ?"

इतना कहते कहते अब आँखोंका आंसू नही रुकसका । शुभ अशुभ और मंगल अमंगलकी वात तक भूलगई । एकाध बूँद आँसू नहीं वही रीतिके मुवाफिक आँसूकी धारा वहचली । लड़के पर जो गुस्सा था वह इसी रोने धोनेमे उतर जाता और बेटेको भी मापर जो निर्ममताथी वह दूर होजाती अगर इसवक्त यहां रेखा मिसराइन नहीं आतीं। रेखाने आडमें खडी होकर मा बेटेकी सब बाते सुनी थीं इस वक्त मौका पाकर झट सामने आई और कहने लगी- "अरी काहेरी बहन यही तेरी अकल है कि, इस मंगलके बेरा आँसू गिरातीहो ! यह क्या रोनेका समय है? इतना दुःख सहके नारायणने एक सन्तान दिया उसकी खुशीके वक्त तू ऐसा करती है !"

रामप्रसादको रेखाकी वातसे जीमें वडा अन्तर आया माके ऊपर जो भाव था बदलगया । रेखाकी बात सुननेपर माका रोना घटा नहीं वल्कि दूना वढगया विसूर २ कर आँसू पोछती रही मुँहसे वात नहीं निकली।

बाईसवाँ अध्याय।

इस संसारमे सब कुछ जाना जासकता है लेकिन् आदमीका स्वभाव नहीं समझा जासकता । जगत्मे जितने आदमी हैं उतनेही तरहके उनके स्वभावभी है सारी जमीन ढूँढ आने परभी एक स्वभावके दो आदमी नहीं पायेजाते । पृथ्वीके सब जीवोंके प्रत्येक श्रेणीमे एक एक भिन्न भिन्न प्रकृति है जैसे बाघका स्वभाव हत्या करना है वैसेही शृगालका स्वभाव बडी धूर्तता करना है और कुत्तेकी प्रकृति प्रभुभक्ति इत्यादि ।

लेकिन् एक आदमीके स्वभावमें सब जीवोका स्वभाव पाया जाता है इसीकारण आदमी सब जीवोंसे उत्तम है ।

सब आदमियोका रक्त मांस हड्डी और इन्द्री आदिका काम समान है फिर कोई परायेके दुःखसे दुःखी और कोई दूसरेका दुःख देखकर खुश क्यो होता है ? फिर एक आदमीको विपत्तिमें देखकर दूसरा उसके बचानेके लिये अपनी जानतक देदेता है और तीसरा मुर्देकी खोपडीपर बांस मारनेके लिये मानो मुर्देपर कोदो दरनेके लिये फिरता है अगर तुम्हारे दिन बने हैं तो तुम्हारे कितनेही दोस्त उसमे शामिल होनेके लिये उधार खाये रहते हैं लेकिन् कितनेही ऐसेभी दोस्तहैं कि, तुम्हारी यह खुशीका दिन और सुधरा हुआ जमाना उनके आंखोंमे कांटासा खटकताहै इसीसे हम कहते हैं कि, इस संसारमे सब कुछ समझा जा सकता है किन्तु आदमीका स्वभाव नहीं समझा जासकता ।

रामप्रसादकी मा और रेखा मिसराइनकी मिताई गॉवभरमें मशहूर थी और ऐसी कोई वात नहीं हुई जिससे इनके मिलापमे खटाई पडती तौभी रेखा क्यों उससे इतनी दुश्मनी करने लगी यह हम नहीं समझ सकते । और जो कुछ समझ सकतेहै उसकोभी हमे समझानेकी शक्ति नही है । जो लोग इस संसारमे किसीका भला नहीं देख सकते वह अकसर दूसरेकी बुराई करने जाकर अपना भी बुरा कर डालतेहै तोभी उन्हे होश नहीं होता । इस संसारमे अगर सब लोग एकही स्वभावके होते तो क्या कोई दुःख होता ?

रामप्रसादकी माने इतने दिन बाद रेखाको पहॅचाना है उनका स्वभाव भी इतना सीधा है कि, रेखाकी कुटिलता पहॅचाननेमें इतने दिन लगे है जो आदमी जैसा होताहै वह दूसरेको भी अकसर वैसाही समझताहै इसीसे इतना गोलमाल हुआ करताहै इस जगत्में आदमी पहँचानना बड़ा कठिन है ।

जो इस कामको जितनी चतुराईसे कर सकताहै वह उतनाही बुद्धिमान् है ।

रामप्रसादकी मा वैसी बुद्धिमती नहीं थी इसी कारण उनके घरमे इतना गोलमाल हुआ ।

और अगर सब आदमियोका स्वभाव एकसा होता तो गिरजाकी यह हालत क्यों होती ? गिरजाने ऐसा क्या कसूर किया कि, इसी उमरमे इसको दुनियांके सब सुखके विलासको छोड़ देना पड़ा उसका अमानसिक त्याग स्वीकार और अलौकिक सहिष्णुताका अंतमे यही फल हुआ इसीसे हमने कहा था कि, गिरजामे जो सब गुण हैं उसका कुछ अंश भी अगर चमेलीमें होता तो क्या रामप्रसादके घरमे इतनी गड़बड़ होती ?

तेईसवाँ अध्याय ।

हम पहले कह चुके हैं कि, बड़ी बुरी साइतमे रामप्रसादकी मा चुनारसे चली थीं यह सब उसी बुरी साइतके फल फलने लगेहैं।

इतने दिनतक रेखा जब अपनी चतुराईसे रामप्रसादकी माके साथ मितायी निवाहती आती थी अब उसका भंडाफोर हुआ और खुल्लम खुल्ला रंणहो पुतहो होने लगा । यद्यपि रामप्रसादकी माको झगडा करनेका बहुत कुछ महावरा था तौ भी जगत् जयिनी रेखा और चमेली दोनोका सामना करना कठिन हुआ । निदान वात २ पर रामप्रसादकी मा हारने लगी महीनेमे अब पन्द्रह दिन भी उनको अन्न मिलना मोहाल हुआ, बहुधा अनाहार ही बीतने लगा यहां आने पर उनका एक दिन भी सुखसे नहीं बीता रामप्रसाद भी माके ऊपर बहुत नाराज हुए चाहे कसूर किसीका हो रेखा और चमेली मिलके ऐसी चतुराई करती थीं कि, रामप्रसादको माकाही सब कसूर मालूम होताथा । रामप्रसादकी मा झगडेमे कुछ छल प्रपञ्च तो जानती नही थीं इसीसे बेटेके पास गुनहकी बहुत कुछ बेइज्जती होने लगी ।

हम यहभी कह आये है कि, रामप्रसादकी गरीवी तो बहुत वढगई है वहुत कुछ कर्जा होचुकाहै आमदनीसे खर्च दूना होगया इससे अव कर्जेकी घटनेकी भी उम्मेद नहीं है। आदमियोंको दरिद्र होनेपर हित अनहितका ज्ञान नहीं रहता धीरे २ रामप्रसादकी भी ठीक वही हालत होगई और आफिसका वहुतसा रुपया खागये गवर्नमेंट ऑफिसमे अगर उनकी नौकरी होती तो वह वहुत जल्द पकडे नही जा सकते थे लेकिन् एक सौदागरके घरका रुपया हजम करना सहज नहीं है तुरंत पकडे गये। ऑफिसके वड़े साहेव उनपर बडी मेहरबानी रखते थे इसी कारण रामप्रसादको कुछ और दण्ड नहीं मिला सिर्फ अपनी नौकरीसे छुडादिये गये।

अब रामप्रसादका दिन और बिगडा कर्जा मिटाने और परिवार पालनेके लिये उनको बापदादेकी जगह जमीनभी बेचने पड़ी. चमेलीके शरीरमे गहना वहुत था रामप्रसादने उनके बेंचनेका नाम तक नही लिया इसी हालतमें जब रामप्रसादका दिन इतना बिगड़ा था। एक आकस्मिक घटना हुई।

एक दिन सवेरे गिरजाकी मायकेसे एक नौकरने आकर कहा कि, गिरजाके बापकी मृत्यु हुई है इसी कारण गिरजाने सब लोगोंको बुलानेकेलिये भेजा है। रामप्रसाद ससुरके मरनेकी खबर सुनकर दुःखी तो हुए लेकिन् एक नौकरके कहनेसे ससुराल जानेको राजी न हुए। नौकर उनके मनका भाव जानकर बोला "पाहुन आप मनमे ऐसा मत समझिये. आप जानते है कि, घरमें कोई है नही चिट्ठी भी कोई लिखने वाला नहीं है" रामप्रसाद नाराज होकर बोल उठे "जिसके बाप मरे है वह क्या अपने बहनोईको एक चिट्ठी नहीं लिख सकता है"।

फिर नौकर—"आपको तो मालूम है कि, वह पूत कैसे कुपूत है इसी वजहसे वह आपके सालेको त्याज पुत्र करके सब धनस-

म्पत्तिका मालिक गिरजा बाईको बना गये हैं, वही गिरजा उनकी काम क्रिया करेगी। रामधन इस बातसे नाराज होकर न जाने घर छोडकर कहाँ चले गये हैं" रामप्रसादने चौंक कर पूँछा "ऐसा क्यो हुआ"? नौकरने जवाब दिया "आप क्या रामधन बाबूका स्वभाव नहीं जानते? उनके हाथमे रुपया पडनेसे कै दिन रहता है. रकम भी कुछ थोडी नही है सात आठ लाख रुपया होगा"।

रामप्रसाद बैठेथे उठके खडे होगये मानों उठाकर सारे शरीरमें बिजली दौड गई इस खबरसे वह खुशहुआ कि, नाराज यह उस वक्त नहीं समझा गया. गम्भीर होकर फिर बोला "क्या वह कोई वसीयत लिख गये हैं?"

नौकर-"हाँ"

रामप्रसाद-"उसमे गवाही किसीकी है?"

नौकर-एक हाईकोर्टके वकीलसे वह लिखाया गया है और इलाहाबादके कई बडे २ आदमी उसमें गवाह हैं।

रामप्रसादने कहा "तुमको यह सब कैसे मालूम है?"

नौकर-"जब वसीयत लिखागया तब मैं वहीं खडा था जब लिखकर पढागया तब मैंने अपने कानोंसे सुना।"

रामप्रसाद-"रामधन उस वक्त वहां थे"?

नौकर-"नही जबसे मालिक बीमार हुए तबसे रामधन उनके आगे नहीं आये मंगलकी रातको उनकी बीमारी बहुत बढगई तब उन्होंने बुलानेके लिये हमको भेजा. हम उनका अड्डा जानते थे वह एक कसबीके घरमें रहते थे मै बुधवारको सवेरे उनको पुकारने गया लेकिन् बापकी बीमारी बतलाने पर भी नहीं आये मैंने बहुत जिद किया और कहा कि, उनके बचनेका भरोसा नहीं है तब उन्होंने कहा "जब वह मर जायेंगे तभी हम घर आयँगे।" इतना सुनकर रंडीने विन्ध्यवासिनी देवीको भेडा चढानेकी मन्नत की और वहां जितने यार बैठे थे वह सब मारे

खुशीके बगल बजाने लगे. मैंने यह सब बातें आकर मालिकसे बताई उन्होंने दश भले आदमियोंको बुलाकर सलाह किया।बृहस्पतिको वसीयत लिखी गई और रविवारको उनका देहांत होगया"।

रामप्रसाद–"दाह किसने दिया ?"

नौकर–गिरजाने ।

रामप्रसाद–"तो क्या रामधन श्राद्ध भी नहीं करेंगे ?"

नौकर–वसीयतमें उनको श्राद्ध करनेसे मनां किया गया है इसीसे मैं आप लोगोंको बुलाने आया हूँ सब काम आपहीको करना होगा–और दिन भी बहुत बाकी नहीं हैं–तिवराति करके श्राद्ध करनेका विचार है आज दूसरा दिन है अब देरी मत कीजिये चलिये ।

रामप्रसाद–"अच्छा ठहरो हम आतेहैं" इतना कहकर भीतर चले गये।

चौबीसवाँ अध्याय ।

रामप्रसाद घरमें और कहाँ जायँगे दौडकर चमेलीके पास पहुँचे, चमेली जागती तो थी लेकिन् सेजसे उठी नहीं थी. रामप्रसादने तावरतोड पहुँचकर कहा "जल्दी उठो बहुत बढिया खबर आई है" चमेली सेजसे तो नहीं उठी लेकिन् मुँह बनाकर बोली "सवेरे ही सवेरे क्या ढंग करने लगे" रामप्रसाद आग्रह करके बोले ढंग नहीं करते सच्ची बात कहते है कल्ह हमारे ससुरजीकी मृत्यु हुई है खबर लेकर आदमी आया है ।

रामप्रसादकी बात सुनकर चमेली चट उठ बैठी और आग्रह करके बोली–"कौन बडी बहिनीके बाबा ?"

रामप्रसाद–"हाँ" ।

चमेली खुशीके मारे चौगुनी हो गयी । सौतका एक मात्र अवलम्ब जो पिताजी थे उन्हींके मरनेकी खबर मिली है ! अब मारे खुशीके चमेली शरीरमें कहाँ समा सकती है । उसके ओठों-

पर हँसीकी रेखा दीख पड़ी। चट आग्रहके साथ पूँछ उठी—“यह खबर कहाँसे आयी ?”

रामप्र०—“चुनारसे आदमी खबर लेकर आया है।”

अब चमेलीको शक करनेकी जगह बाकी नहीं रही। जिस कारणसे हो रामप्रसादका जी भी इस वक्त उमगा हुआ था। वह चमेलीकी हँसी देखकर मोहित होगये। वह हँसी मीठी हो या न हो लेकिन चमेलीने साथ ही मिठाई बरसाना शुरूअ कर दिया। वह कहने लगी—“अच्छा हुआ ! बड़ी बात हुई। अब सब गलफना भूल जायगा। सब तेजी झड़ जायगी।”

बिजली चमकनेके बादही जैसे वज्र बहराताहै। हँसीके बाद वैसीही मधु वृष्टि हुई। झठात् वज्र टूटनेसे जैसे आदमी चौंक उठता है रामप्रसाद भी वैसेही मुँह, आँख, दाँत देखने बाद मधु वर्षणसे चमक उठे। कहाँ उस प्रफुल्ल कमलवदनका मधुरहास्य, कहाँ यह हिंसा द्वेष परिपूर्ण अतिभीषण मुखाकृतिका गरल उद्गि-रण, इतना शीघ्र यह बिकट परिवर्तन अपनी आँखोसे देखकर कौन विस्मित नहीं होगा ? किन्तु इसी विस्मयके साथ रामप्रसादको होश भी हुआ। चमेलीका स्वभाव मानो एकही पलमें वह समझ गये। जिसका एकबार पाँव फिसलता है वह क्या फिर सँभल सकताहै।

उसको क्या चैतन्य हो सकताहै बहुधा चैतन्य होताहै लेकिन् उसपर हमलोग विश्वास नहीं करसकते।

रामप्रसादने फिर कहा—“एक और खबर आयी है।”

चमेली जो बैठी थी अबके उठ खड़ी हुई। आज चमेली किसका मुँह देखकर उठी है कि, सेजपरसेही शुभसंवाद शुरूअ हुआ सो लगातार शुभसंवादकी झड़ीही लगी चली जातीहै। आनन्दमे उल्लसित हो स्वामीके मुहके पास मुँह लेजाकर बोली—“काहे काहे। कौन खबर कहो तो।”

रामप्रसाद बोले-"ससुरजी मरते वक्त अपने लडकेको त्याजपुत्र करके सब धन दौलत जगह जमीन लडकीके नाम पक्का कराये हैं।"

सुनतेही चमेलीके कलेजेपर मानो बिजली चमक पडी। सिर-पर वज्र गिरा। जैसे कोई लोहकी गरम की हुई छड छातीमे घुसेडदे वह हँसता हुआ मुँह सूखकर सोंठ होगया? चलता हुआ कल एकदम बन्दहोने पर जैसे होता है हाथपाँव और शिरका हिलना भी सन्न खींच गया। लेकिन् चमेलीको इस बातपर यकीन नहीं आया। सूखे कण्ठ और बहुत म्वरसे बोली-"अब हँसी करने लगे क्या?"

रामप्रसाद-"हँसी नहीं सचबात है।"

चमेली-"कौन कहता है?"

राम०-"जो मरनेकी खबर लाया है वही कहता है।"

अब भी चमेलीको विश्वास नहीं हुआ फिर बोली-"तुम नींदमें न जाने क्याका क्या सुन आये हो! नहीं तो बेटाके रहते कोई ऐसा करता है?"

रामप्रसाद मुसुकुराकर बोले-"नहीं! नींदमें नहीं सुना ऐसा होनेका कारण है।"

इसके बाद रामप्रसाद रामधनके चालचलनकी सब बात और बापके मरते समयका व्यौहार बयान कर गये। अब चमेली-की खुशीमे खटाई पडी। वह फिर उसी सेजपर पड रही। राम-प्रसादका वह चैतन्योदय अभी अस्त नहीं हुआथा। इससे चमे-लीकी खुशी और विषादका कारण वह ठीक २ समझ गये। और समझकर दुःखी चित्तसे बोले-"अरे अब सोनेसे कैसे बनेगा? वह सबको लिवानेके लिये आया है। सो क्या कहती हो?"

चमेलीने कुछ जवाब नहीं दिया रामप्रसाद कुछ कडे होकर बोले-"वहाँ जानेमें तुमको क्या उज्र है?"

चमेली अबके गरजकर बोली—"तुमको यह पूँछते शरम नहीं आती इतना कर धरके इकठो बचा हुआ सो उसको लेके मरका भात खाने जाऊँगी ?"

अबकी बात कहते २ पासके सोते हुए बालक को उठालिया। और आँसू बहाने लगी।

इधर रामप्रसाद ? रामप्रसादकी क्या गति होगी ? अब रामप्रसादका चैतन्य लोप हुआ। लडकेके अमंगलका डर रहते हुए सामनेही चमेलीका रोना देखकर रामप्रसाद कबतक स्थिर रह सकते हैं ? रामप्रसादके बेकहे आँसू बूँद बूँद होकर गालोंसे टपकने लगे।

रामप्रसादने उन्हे पोंछकर चमेली को सन्तोष देनेके लिये कहा—"हाँ ठीक है। यह मैंने पहले नहीं समझा था। तुमको वहाँ जानेकी जरूरत नही है। मैं माको लेकर चला जाऊँगा।"

तुरंत वृष्टि बन्द होगयी। फिर चमेली उठ बैठी और गरजकर बोली क्या कहा ? तुम जावोगे ! जावोहीगे ? अच्छा जावो। लेकिन् याद रखना फिर लौटकर हमको नहीं पावोगे ?"

अबके गर्जनसे रामप्रसाद डरगये और चमेलीसे विनती करके बोले—"मै न जाऊँगा तो श्राद्धमे कौन सँभालेगा ? जो सात आठ लाख रुपया छोडके मरे है उनका श्राद्ध अच्छा होना चाहिये।"

फिर गरजकर बोली—"ऐ ! सात आठ लाख रुपया ? यह सब बात झूठी है ?"

रामप्र०—"नहीं झूठी नहीं। हमारे ससुर बडे किरापिन थे इसीसे इतना रुपया जमा किये थे।"

चमेली-"यह बात सच हो तो तुम्हारे जातेही जाते मै कूएमे डूब मरूँगी।"कहकर फिर लोट गयी।अबकी ढंग बेढब देखकर रामप्र-

सादको कुछ और वात कहनेका साहस नहीं हुआ और धीरे धीरे घरसे वाहर चले गये ।

घरसे निकलकर ऑगनमें आतेही माता मिली रामप्रसाद जब घरमें गये थे तभी माने वाहर आकर नौकरसे सब बातें सुन ली थीं । पहलेही रामप्रसादने कहा--"ससुर मर गये हैं । तुमको बुलानेके लिये आदमी आया है ।"

माने पहले विचारा कि, कुछ जवाव न दे क्योंकि रामप्रसादने मा कहके उनको नहीं पुकारा था । इतनी बातें कह कर भी एक छोटासा "मा" शब्द क्यों नहीं मुँहसे कहा । रामप्रसादको यह बडा भारी रोग था ।

न जाने क्या समझकर मा न कहा--"हमारेही अकेलेके वास्ते थोड़े आया है । वह तो सबको लेने आया है ।"

रामप्रसाद--"हाँ सो तो है, लेकिन् यह छोटेसे लड़केको लेकर तो श्राद्धमें नहीं जासकती । आज तुम आदमीके साथ चली जाव कल मैं आऊंगा ।"

मा जब बात करनेलगी तव दो चार कहे विना वह कहाँ चुप रहसकती है, फिर बोल उठीं "मैं आगे जाकर वहाँ कौन काम उठाऊँगी ।"

राम०--"आज हमको एक जरूरी काम है । कल जरूर आवेगे।"

चमेलीके हुक्म विना रामप्रसाद कहाँ जा सकते हैं । फिर और जगह तो और जगह खुद सौतके मायकेमें विना चमेलीका हुक्म लिये कैसे जायँगे? रामप्रसादको और क्या जरूरी काम है? सिर्फ चमेलीका हुक्म लेनेके लिये एक दिनकी मुहलत लेकर ठहर गये । माने यहाँ आनेके दिनसे आजतक एकदिन भी सुख नहीं पाया था । यह मौका वह कब चूक सकती थी । बेटेको और कुछ न कहकर तुरंत उसी नौकरके साथ चुनारको वाना हुई ।

पच्चीसवाँ अध्याय ।

रामप्रसादकी माके चुनार पहुँचनेपर सब रामप्रसादको पूँछने लगे । सबसे अधिक गिरजा स्वामीके लिये चिन्तिता हुई । दूसरे दिन दश बजे तक उनके आनेकी राह देखी गयी जब । रामप्रसादका दर्शन नहीं हुआ तब फिर एक आदमी वहाँ भेजा गया । उसने रातको लौट आकर कहा—"वह बीमार हैं अब यहाँ नहीं आ सकते । " नौकरसे भितरिया जाना गया कि वह बीमार सीमार कुछ नहीं हैं । चमेलीनेही उन्हें नहीं आने दिया । उन्होंने आनेकी बड़ी बड़ी तदबीरे की, लेकिन् चमेलीके आगे एक न चली । गिरजा यह सुनकर बहुतही दुःखी हुई । इधर भाई रामधनको भी घर बुला लानेमे गिरजाने उठा नहीं रक्खा । जमुनाको उनके मरनेका उतना दुःख नहीं हुआ जितना इस मौकेपर रामधनके घर न आने का हुआ । जमुना रामधनके वास्ते सदा रोती थी । लेकिन् बिहारीलालकी वसीयतकी बात पिताके मरनेसे पहलेही रामधनके कानोंमे पहुँच गयी थी वह फिर घर नहीं आसका । गिरजा बापकी उस दी हुई धन सम्पत्तिकी चाह नहीं रखती थी वह सब भाई को सौपकर उसीके अधीन रहती । और भेट होनेहीपर उनसे यह सब कहनेका विचार करती थी। लेकिन् रामधन घर नहीं आये तब और क्या करसकती है ? एक तो पिताके मरनेका शोक ऊपरसे स्वामी और भाईका ऐसा व्यौहार गिरजाको इस समय कितना दुःख हुआ सो सहजही समझा जासकता है । श्राद्धमें लगे रहनेसे इधर कई दिन गिरजाके साधारण तरहपर कट गये ।

श्राद्धादिके बाद गिरजाका पहला काम भाई रामधनका पता लगाना था । महल्लेमे मुंशी जीवधनलाल एक बहुत भले आदमी थे, रामधनसे उनकी बहुत मिताई थी । एक दिन जमुनाने उनको

घर बुलाकर कहा-"भैया ! हमारे रामधनका पता लगा दो नहीं हम लोग जहर खाकर मर जायँगी " ।

गिरजाने एक नौकरानीसे जीवधनलालके पास कहला भेजा कि, वह सब धन सम्पत्ति भैया। रामधनको देकर उन्हींके अधीन रहना चाहती है ।

जीवधनलाल दोनोंका कहना टाल न सके निदान रामधनके खोजनेको निकले पहले गाँवकी सुन्दरजान नामकी एक रण्डीके घर खोजने गये, लेकिन् वहां रामधनको नहीं पाया । सुन्दरजानसे जीवधनलालकी मुलाकात थी वह बहुत दिनतक उसके घर खुशी मना चुके थे । किन्तु आज सुन्दरने उनके साथ परिचितसा व्यौहार नहीं किया । जीवधन बड़े रसिया और चतुर आदमी हैं । अपना काम निकालनेके लिये उन्होने सुन्दरजानसे कहा "क्यों बीवी पहँचानती हो ? "

सुन्दर जानने सुर चढ़ाकर जवाब दिया—"जी जनाब ! पहँचानती क्यों नहीं लेकिन् आप जिसे खोजते हैं वैसे आदमियोंको मैं यहां आने नहीं देती " ।

जीवधनलालने मुसकुराकर कहा—" खोजेंगे और किसको ? हम तो तुम्हीं को खोजते हैं । लेकिन् एक बात सुनी है बीवी साहब ! उसीको पूँछने आया हूँ कि, बात सची है या झूठी ? "

इतने में एक बुढ़ियाने आकर कहा—" अरे कौन ! जीवधन बाबू । आवो आवो ! बैठो । बहुत दिनबाद दरसन मिला, कहीं गये थे क्या ? "

फिर सुन्दरजानपर नाराज होकर बोली—"अरे सुनरी ! यही तेरी अक्किल है ! ऐसे जान पहँचानके आदमी आये हैं और तू बैठनेको नहीं कहती, न पान तम्बाकू देती । ऐसा करनेसे तेरे घर कोई भला आदमी कैसे आवेगा ?"

सुन्दर जानने सुर बदलकर कहा—"हां मा यह तो है लेकिन् जीवधन बाबू घरके आदमी हैं, घरके आदमीका आदर खातिर क्या करना ?"

सुर बदलनेके साथही साथ सुन्दरने मधुर मुसक्यानभी छोडाथा फिर एक कटाक्ष फेरकर बोली—"अच्छा आइये बाबू साहेब ! बैठिये आज आपने हमारा घर पवित्र किया। आपकी चरन धूल पाकर मैं धन्य हुई।"

रसिकचूडामणि जीवधन बाबू बोले—"बीबी साहब ! ऐसी बेइज्जतीसे तो सौ जूता लगा देती तो वही अच्छा था।"

इतना कहते २ गलेका दुपट्टा सुधारने लगे। बीबीने दुपट्टा पकडकर पलङ्गके पास खींच लिया और सेजपर बिठाकर विद्युतहँसीके साथ बोली "अच्छा यह तो बतलावो बाबू साहब ! इतने दिनों तक आये क्यो नहीं ?"

अहा ! ऐसी मधुरहासिनी मायाविनी क्या दुनियामे औरहोगी?

जीवधनबाबू अब घरके गुण्डा बनकर बोले—"अच्छा जरा तम्बाकू तो पिलावो।"

नौकर चिलमचीने तुरंत आकर आज्ञा पालन किया। जीवधन बाबू तम्बाकू गुड़गुडाते हुए बोले—"क्यों बीबी ! तुमने क्या किया ? चार पाँच बरसतक एक भले आदमीके पास रहकरभी एकबर अच्छा नहीं बनवा सकी ?"

बात सुन्दरजानको चाहे जैसी लगे लेकिन् बुढियाके मनमें बहुत अच्छी लगी। वह चट बोली—"लेरे, ले ! देख तो भले आदमीके लडके हैं तुझे क्या समझातेहैं ? बाबूजी ! घरकी बात कहते हो ? अरे घर दुआर चूल्हेमें जाय जो कुछ पासमें था वहभी इस लौंडेके संगमे खोगया अब जो विपत्ति पडीहै वह हमी जानतीहैं।"

जीवधन विस्मित होकर बोले—"अरे क्या कहतीहै? देना तो दूर तुम्हाराही सब ढूँच लेगयाहै?"

बीबी साहेव यह सब घरकी बातें जाहिर करना नहीं चाहती थी इसीसे कुछ नाराज होकर बोली—"हाँ, हाँ! आज पाँचबरससे वह भले आदमीका लडका आताहै एक पैसाभी नहीं दिया! मरनेके किनारे आकर इतना झूठ क्यो बोलती है।"

बीबीकी बात सुनकर बुढिया बहुत बिगडी। मारेकोपके थर-थर काँपने लगी। मुँहसे इतनी बात बाहर निकली—"अरे! देख तो अबभी उसीकी ओर बह रही है? क्या उसको फिर बुलावेगी? अबके आनेपर तो..."

इतनेमे सुन्दरजानने उनके एक मित्रके आगे उनकी बुराई कहने रोकनेका इशारा किया। अब बुढिया खबरदार हो गयी और बात फेर कर बोली—"हाँ भई उसका धरम सुनता है मैं नमकहरामी नहीं करूँगी। पहले कुछ अलबत्ते दिया था। लेकिन् उसका सूद साहित—अरे मर कहाँकी बात कहने लगी, क्या कह रही थी। हाँ बाबू साहब! आप उनसे नहीं मिले?"

जीवधन—"वह घर जातेही नहीं मिले कैसे? यहाँसे अड्डा कब उठा है?"

सुन्दरने धीरेसे लम्बी साँस खींचकर कहा—"आज चार दिन हुआ।"

बुढिया सुन्दरकी इस लम्बी साँसका अर्थ समझ सकी या नहीं सो नहीं कह सकते लेकिन् तुरंत गरजकर बोली—"चार दिन हुआ चला गया है कि, मैने उसे खेदा है सो भी क्या सहजही खेदा गया है।"

सुन्दरजान बुढियाको वहाँसे हटानेके लिये बोली—"ऐ मा! नीचे दूध मै उबारे छोड आयी हूँ। जल्दी जा। ढाक आ, नहीं बिल्ली खा जायगी।"

"अरे वाप रे !" कहकर वुढिया तावरतोड नीचे गयी । इधर सुन्दरने आँखोका आँसू पोछकर कहा-"काहे जीवधन वावू! मैं आपसे एक वात पूँछती हूँ । आप सच वतावोगे ?"

जीवधनने मुसकुराकर कहा-"यह तो तुम्हारी अदालत नहीं है कि, झूठ वोलूँगा ।"

सुन्द०-"नहीं वावू साहव ! मैं दिल्लगी नहीं करती ।"

जी०ध०-"अच्छा तुम नहीं तो मैंही करता हूँ। वात तो कहो क्या है ?"

सुन्द०-"आप क्या रामधन वावूके पाससे आते हो ?"

जी० ध०-"इसीसे मालूम होता है पहले तुमने हमे भी देखनेकी तरकीव की थी ?"

सु०-"तो आप जरूर वहींसे आते हो ।"

जी० ध०-"अरे तो अव वुढ़ियाको वुलावेगी या अकेलेही झूँठी झाँटने लगी ।"

सु०-"नही वावू साहव ! सच वतलाओ ।"

जी० ध०-"नहीं सच कहताहूँ । मै रामधनके पाससे तो नहीं एक दूसरे आदमीके पाससे आता हूँ ।"

सु०-"अरे वापरे ! कौनके पाससे वोलो नही"

जी० ध०-"जो वापके मरनेके वादेपर लोगोंको धोखा नहीं देता अपनी कमाईके मारे रुपये पैसेको खाक समझता है उसीके पाससे आता हूँ ।"

सु०-"कितना महीना देगा ?"

जी० ध०-"मै भाई कायस्थका लड़का हूँ । कुछ रंडियोंकी दलालीका रोजगार तो करता नहीं । वह हमारे. एक दोस्त आदमीहै तुम्हारे पास आना चाहते हैं । तुमसे भी हमारी जान पहँचान है । इसीसे आयाहूँ !"

जीवधन मनमें कहते हैं कि, भाई जिस कामको आते थे उसमेंसे एक पाई भी नहीं हुआ। यहां योंही वक्त गया। अब किसीतरह धोखा देकर जान बचाना चाहिये।

सु०—"वह आदमी देखनेमें कैसाहै? उमर कितनी होगी?"

जी० ध०—"भाई देखनेमें जैसे हैं वह आनेहीपर देख लेना। बाकी रही उमरकी बात सो उनकी कुण्डली देखलीजो इन बातोंकी चरचा तो हमसे करो नहीं। ठीक बतलाओ उन्हें लावें कि नहीं?"

सुन्दरजान कुछ देर बाद लम्बी साँस छोड़कर बोली "लाना"।

"तो आज लावेंगे।" कहकर जीवधन बाबू उठ खड़े हुए। और जूता पहनते पहनते फिर बोले—"अगर रामधन मिलेगा तो उससे कुछ कहूंगे?"

सुन्दरजानने उनकी धोती पकडकर कहा—"सुनो बाबू साहब! ऐसी जल्दी क्यों करतेहो। एक चिलम और तम्बाकू पिये विना न जाव हमारे सिरकी कसम।"

जीवधन बाबू खडेही खडे बोले—"अरे कसम वसमकी बात जाने दो हमको एक जरूरी कामकी याद आगयी। अब हम नहीं बैठेंगे तुमको जो कहना हो सो बोलो।"

सुन्दरजान विनती करके बोली—"उनको जिस तरह हो एकबार जरूर, जल्दी भेजदेना लेकिन् खबरदार मा इस बातको न सुने।"

जीवधन बाबू वहां नहीं ठहरे जल्दीसे बाहर आकर मनहीमन बोले—"यह एक नये ढंगकी मुहब्बत है। दोको बुलाती है एकको जाहिरा और दूसरेको छिपकर आनेको कहती है।"

जीवधन बाबू रास्तेपर आतही न जाने क्यों दौडने लगे।

छब्बीसवाँ अध्याय।

दौडते दौडते वह एक दूसरी रण्डीके घर गये वहां भी रामधन बाबूका पता नहीं लगा। अफसोस करते हुए जीवधन बाबू लौट

रहे थे कि, एक आदमीने उनको खबर दी कि, एक नीचप्रकृति रमणीके घरमें तीन दिनसे रामधन वावू टिके हैं। वहीं उनको शराव पीते उसने देखा था। उस रमणीका घरही कई और वद-माश और व्यभिचारिणी स्त्रियोंका अड्डा था।जीवधन वावू चलते चलते वहां पहुँचे।

पास जातेही शोर गुल सुनाइ दिया। उस कोलाहलसे राम-धनका परिचित कंण्ठरवभी जीवधन वावूको सुनाई दिया। धीरे धीरे वह घरमें घुसे पहलेही रामधन वावू नजर आये। रामधनकी उस समयकी विकट मूर्ति देखकर जीवधन वावू वहुत डरे। राम-धन उनको देखतेही ठठाकर एक भयावनी हँसी हँसा। और उसके साथी भी उसीके साथ हँसपडे। जीवधन वावू हालत देख-कर काँपगये। यद्यपि रामधनको उन्होंने कई वार इससे पहले शराव पीनेकी हालतमें देखा था लेकिन् आजसी विकट मूर्ति उनको कभी देखनेमें नहीं आयी थी, साथी और संगिनीगणका रूपभी वडा डरावना था। दो पिशाचिनी रण्डियाँ भी वहीं मौजूद थीं। देखनेसे वह साक्षात् पिशाचीयोनिकी जानपडती थीं। सबने जीवधन वावूकी विकट हँसीसे अभ्यर्थनाकी। इससे और धूम पड़गयी। एकवार नरकी भी यह दृश्य देखकर डरजाता! जीवधनवावू भी सहमे खडे रहे। वह जानते कि, रामधन ऐसी हालतमे है तो कभी यहाँ आनेका साहस न करते।

जीवधन वावू उन्हीमे मिलकर अपने कार्य्य सफल होनेकी इन्तिजारी करनेलगे इधर रामधनका उत्पात पलपलपर वढने लगा। कभी पागलकी तरह ठठाकर हँसता और नाचता था, कभी चिल्लाकर विना सुरतानके गाने लगता था। क्षणभर भी स्थिर नहीं रहता।

ऐसी हालत देखकरभी दो स्त्रियोंका अनुरोध रखनेके लिये यह नरकयंत्रण। सहकरभी ठहरे रहे। जब क्रमशः रामधनके

संगी और संगिनीगण अचेत हो पडे तव जीवधन वावूने मौका पाकर रामधनसे कहा "क्यो भाई अव तो तुम्हारी दशा खराव होरही है । नहालो तो अच्छा है ।

रामधनने जवाव दिया—"जवतक शरीरमें प्राण रहेगा। तवतक तो अव स्नान नहीं होगा । वहुत स्नान कर चुका अव स्नानकी क्या जरूरत है ?"

जीवधन—"तो अव क्या करोगे ?"

रामधन—"जो करता हूँ वही करूँगा । तीन रात तीन दिन वीत गयाहै । अव देखें के दिन कटते है ।"

जीवधन—"अव वहुत दिन नहीं कटेंगे । यह हम निश्चय कहतेहैं । फिर इस तरह प्राण देनेसे क्या फायदा ?"

रामधन—"भाई हम आपसे जीकी वात कहते हैं । इस वक्त हमको वडा दुःख है । वडी ज्वाला है । अव संसारमें हमको कुछ भी आशा भरोसा वा सुख नहीं जिसके लिये इतनी ज्वाला सहें।"

जीवधन—"तो क्या इसीसे इस तरह प्राण दे रहे हो ?"

रामधन हाथ हिला हिलाकर कहने लगा--"प्राण नहीं देते भाई ! प्राणकी ज्वाला निकालते हैं । शराव पीनेसे सव दुःख विसर जाताहै । दुःख भूलनेके लिये इससे वढकर दूसरी दवा नहीं है फिर कई वातोकी याद आ रहीहै । थोडा और पीनेसे ठीक होगा ।"

इतना कहते २ रामधनने एक ग्रास फिर शरावसे भरकर खाली कर डाला । जीवधन लाल उसकी हालत देखकर अवाक् होगये । और थोडी देरवाद वोले—"सुनो रामधन ! तुम शराव और मत पीओ । मैने तुम्हारे शरीरकी ज्वाला दूर करनेकी तदवीर की है । और वही कहनेके वास्ते तुम्हारे पास आये है ।"

राम०--"कौन तदवीर ?"

जीवधन—"तुम घर चलो तुम्हारी बहन सब धन दौलत तुमको देगी और तुम्हारे अधीन रहेगी ।"

रामधन पागलकी तरह चिल्लाकर बोला—"मैं बहनकी खैरात नहीं चाहता ।"

जीवधन—"खैरात कैसे । सब तो तुम्हाराही है ! तुम्हारे रहते तुम्हारी बहन कौन होती है ? "

रामधन फिर अकडकर चिल्लाया और बोल उठा—"मैं तो बाबाका त्याज पुत्र हूँ । "

जीवधनने रामधनबाबूके मुँहकी ओर देखा चेहरेसे हिंसा फूटी पडती थी । इसके सिवाय और कुछ भी दूसरा भाव रामधनके चेहरे पर नहीं देखा । फिर नम्र होकर बोले—"अगर तुम्हारी बहन तुमको दानपत्री लिख दे ? "

रामधनने उसी सुरमें जवाब दिया—"मैं उस दानपर मूत दूंगा।"

जीवधन—"ना भाई ! मैं और क्या तदबीर कर सकता हूँ।"

रामधन विकट हँसी हँसकर बोला—"और किसीको तदबीर करनेकी जरूरत नहीं है । मै खुद करलूँगा अपनेही हाथसे खून करके अपने प्राणका कष्ट दूर करूँगा । "

जीवधनबाबू अबके डरगये । उस भयङ्करमूर्तिसे ऐसी विकट प्रतिज्ञा सुनकर कौन नहीं डरेगा ? एक तुच्छ विषयके लिये क्या मनुष्य इतना नीच हो जाताहै ? जो रामधन अपनी छोटी बहन गिरजाको उतना चाहता था उसको इसतरह खून करने पर उतारू हुआ । बडे भाईकी छोटी बहनपर जो ममता होती है वह क्या हुई ? जीवधनने उस बातको छोड़कर अबके कहा—" अच्छा घर नहीं चलते तो सुन्दरजानके पास चलो वह तुम्हारे वास्ते घबरा रही है । "

फिर उसी विकट हँसीके साथ रामधनने जवाब दिया—"उसको

बोलो वह हमारे वास्ते अब न घबरावे मैं वहां भी पहुँचूँगा । लेकिन् पहले गिरजाका खून करना पीछे सुन्दरजानकी बात है । यही सङ्कल्प करके इस बातको शुरूअ किया है तीन दिन तीन रात बीत गया अबतक पूर्णाहुति नहीं दे पाया । जिस दिन पूर्णाहुति करूँगा उसी दिन घर जाऊँगा । उसी दिन सुन्दरजानको भी देखूँगा यह देखो यही बलिदानका हथियार है । "

इतना कहते २ पागलकी तरह रामधन दौड़कर एक झोपड़ेमें घुसा और तुरंत एक तेज हथियार लेकर बाहर आया । हथियार देखकर जीवधनबाबूका जी सूख गया । और हाँफतेहुए जीवधन बाबू वहां से भागे ।

सताईसवाँ अध्याय ।

गिरजा और जमुना फुआने जीवधनके मुँहसे अपने रामधनका सब हाल सुना । जमुना फुआ रोकर दिन बिताने लगी । किन्तु इस घटनाके बाद गिरजाभी जमुनाकी आँखोंमे खटकने लगी । अब गिरजा पर बडी विपत् पड़ी । न जाने गिरजाने क्या अपराध किया है ? उसपर लगातार विपत्तिही विपत्ति आरही है ! पहले जब सा रेमे थी तभी क्या अपराध किया था कि, सासका रोज गर्जन त..न सुनना पड़ता था । क्या अपने हृदयको बलि देकर स्वामीको व्याहपर राजी किया था यही उसका अपराध था ? अगर इसीको अपराध कहे तो. आत्मविसर्जन किसको कहेंगे ? गिरजाका कसूर अलबत्ते हमलोग ढूंढने पर भी नहीं पाते, लेकिन् कसूर की सजाके लिये हमको खोजना नहीं पड़ेगा । पहली सजा—गिरजाको स्वामीके सुखसे वञ्चित होना । जिस भीत पर गिरजाकी जिन्दगीका महल खड़ा है वही भीत अबकी क्यों खस गयी । फिर ऊपरसे सासका गर्जन तर्जन और तिरस्कार यह किस अपराधका दण्ड है ? खैर कसूर हो या न हो ।

विना गुनाहके भी बडे लोगोंका गर्जन तर्जन और तिरस्कार सहा जा सकता है, लेकिन् विना अपराधके उससे भी सौ गुना सौतका दुःख वह भयङ्कर लाञ्छना क्यों हो रही है? क्या गिरजा सौतको अपनी सहोदर वहनसे भी बढ़के मानती चाहती है वही उसका वडा भारी गुनाह है, जिसकी यह सज़ा हुई? यह तो गिरिजाके सासरेकी वात हुई।

फिर वह कैसी दशामें सासरेसे वापके घर आयी! यह भी हम अपनी आँखोसे देख चुके है। मायके आकर गिरजाका प्राण तो वचगया सही. लेकिन् प्राण क्या इन्ही सव दुःखोंको सहनेके लिये वंचा? इसपर भी क्या दुःख कम था जो दुःखदाताने उसे अतुल सम्पत्तिका अधिकारी वनाकर और महान् दुःखमे डाला। इसीसे कहते हैं—हम यह नहीं जान सकते कि, गिरजाका अपराध क्या है? न गिरजाकी इतनी पीड़ा देखकर ईश्वरकी न्याय-परायणता समर्थनके लियेही कुछ मनप्रवोधकी तदवीर देखते।

हमको सव छोडकर अव यही समझना चाहिये कि, गिरजाके नसीवमे सुख हैही नहीं। फिर उसे सुखी करे कौन? गिरजा अव क्या करै? केवल अकेले वैठकर अपने नसीवपर पछताती है स्वामीने वेगुनाह इस पूरी उमरमे त्याग दिया, भाईके स्नेहसे वाञ्चिता हुई। भाईको सव धन दौलत देकर भी गिरजा भीख माँगके गुजारा करनेपर तैयार है। तौभी भैया नहीं आता! फिर भाईके लिये इससे अधिक और क्या कर सकती है? सौतको स्वामी दान करके दोनोकी सेवा करनेपर तैयार है? किन्तु इस-परभी वह उसे नही चाहते। अव सौतके सम्वन्धमे भी गिरजा इससे अधिक क्या करसकती है? कोई गिरजाका हितचाही हमें वतलावे भाई और सौतको सन्तोष दानके लिये गिरजाको अव क्या करना चाहिये? कौनसा स्वार्थ त्याग करना शेष है? मौत-केलिये भी तो गिरजा वहुत कुछ देवी देव मनाती है लेकिन् मत्र

निष्फल गया । रही एक आत्महत्या सो मनमे आतेही गिरजाका शरीर सिहर उठताहै गिरजाका स्वभाव ऐसा नहीं है । वह आत्म-विसर्जन करसकती है लेकिन् आत्महत्या नहीं करसकती है। एकदिन आधीरातको अपने पलंगपर पडी पडी गिरजा यही सोच रही थी । गरमिके दिन थे । खुली खिड़कियोंमें चाँदनी आकर घरको उजियाला कर रही थी । उसी उजियालेमें घरकी सब चीजें साफ नजर आती थीं । गिरजाको बहुतसी बीती बाते एक एक करके याद आ रही थीं । इतनेमें घरके अन्दरही एक स्थानसे कुछ शब्द हुआ । गिरजाकी आँखें उसी ओर हो रहीं । गिरजाने देखा धीरे धीरे जँगला खोलकर कोई एक आदमी भीतर आरहा है । पहले तो उसे इसतरह आते देख गिरजा डरी, लेकिन् थोड़ीही देरमे उसका डर जाता रहा । रोशनीसे गिरजाने देखा वह आदमी दूसरा कोई नहीं उसका वही बड़ा भाई रामधन है । पहले भी बापके डरसे रामधन को इसतरह आते हुए गिरजाने देखा था इसीसे आज रामधनको देखकर बहुत खुश हुई । लेकिन् यह क्या ! आज रामधनके हाथमे चमचमाता हुआ हथियार कैसा है ? गिरजा झटपट उठकर भाईका स्वागत करनेचली, लेकिन् उसके हाथमे हथियार देखकर उठ न सकी । गिरजाने देखा उसका भाई रामधन विकट मूर्ति धारण किये काँपते हाथसे तेज हथियार लिये पलंगकी ओर आ रहा है गिरजाको बोलनेकी शक्ति नही रही । वह चिल्लाभी नहीं सकी । जब रामधनने बायें हाथसे मसहरी उठाकर दहने हाथसे हथियार सँभाला तब गिरजा चिल्ला-कर बोली—"अरे भैया हमारा खून ?"

वहनकी बात पूरी होनेके पहलही रामधनने वह तेज हथियार गिरजाके पेटमें घुसेड दिया भयानक आर्तनादके साथही राम-धन कूदकर जँगलेसे बाहर होगया । गिरजाके नसीबमे इतना और था ।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

रामधन यहाँसे दौडकर रास्तेपर आया। रातके दो बजे थे। कोई आता जाता नहीं था। सूनसान मार्गपर रामधन अकेला चलने लगा—हाथमें वह रक्तरञ्चित हथियार अवतक मौजूद था। इतने बडे शहरमे जहाँ गली २ चौकीदार पहरा देते फिरते हैं एक आदमीका खून करके हाथमें छूरी लिये रामधन सदर रास्तेसे चला जाताहै पहरेवालोने नहीं पकडा यह वडे अचम्भेकी वातहै।न जाने रामधनसे पहरेवालोकी जान पहँचानथी या क्या?जो हो च-लते२रामधन सुन्दरजानके दरवाजेपर आ खडा हुआ। सुन्दरजानका प्रवेशद्वार अवतक खुला था। उसीमे होकर रामधन भीतर गया। नीचेका मंजिला वहुतही अन्धकारमय था। लेकिन् घरके ताक ताक रामधनके देखे हुए है कडी काठकी गिनती तक मालूम है। अन्धेरेसे रामधनकी गति नहीं रुकी। धीरे २ ऊपर चढा। उसे सुन्दरजानको खोजना नहीं पडा। ऊपर जातेही देखा वरासेदम पलंगपर सुन्दरजान पडी है सारे शरीरपर चाँदनी छिटकी है। भूखा वाघ सामनेही शिकार देखकर जैसे टूटता है वैसेही राम-धन भी सुन्दरजानपर पडा उसी क्षण एक भयंकर चीत्कार हुआ। घरके और लोगभी जागे और चारो ओरसे कोलाहल करने लगे। उस शोर गुलमे सुन्दरजान, रामधन और खून यह तीन शब्द साफ सुनाई देने लगे।

रामधन उस कोलाहलमेभी खडे होकर विकट हँसी हँसता था। हठात् पकडे जानेकी वात उसके जीमे समायी और भागनेकी तदवीर करने लगा। लेकिन् वह तदवीर व्यर्थ गयी। पडोसियों और पुलीसवालोसे वह इतना घिरा था कि, भाग न सका। पासहीकी एक कोठरीमे दौडकर घुस गया। भीतरसे किंवाड वन्द करली। इतनेमे वाहरसे भी एक पुलीस कानिस्टेवलने

रुँकिछ वन्द करके ताला भर दिया जो अवतक रामधनके हाथमें छूरी देखकर दस हाथ दूर महामाया खेलरहा था अब बाघ कठघरेमें पडगया ॥

लेकिन् थोडी ही देर वाद रामधनने अपनी हालत समझली. उसवक्त भी उसकी मुट्ठीमें वह खून लगा हुआ हथियार मौजूद था। न जाने क्या जीमे आया तुरंत वह हथियार अपने आप अपने पेटमें खोस दिया । वाहर शोर मचाथा भीतरका वह हाल किसीको मालूम नहीं हुआ। क्योंकि वहाँ सुन्दरजानको अस्पतालमे जानेका वन्दोवस्त होरहा था। लेकिन् वन्दोवस्त होते होते ही सुन्दरजानका प्राण शरीरसे वाहर होगया। इधर खूनी असामी भी पकडा गया है। अब पुलीसके लोग आनन्दके मारे शरीरमे नहीं समाते। चारों ओर एकत्रित लोगोसे आते भद्रव्यौहार कर रहेथे । इतनेमें रामधन जिस घरमें वन्द था उसीके नर्दमामेसे खूनकी धार निकल कर सुंदरकी रक्त-नदीमे जा मिली। जब देखते २ उस धारका पाट वढने लगा तव हेड्कानिस्टेब्लकी नजर उसपर पडी । चट चिराग लेकर देखा और हुक्म दिया कि, अब जल्द किवाँड तोडो अब तक कोई वडा ऑफिसर वहाँ नहीं पहुँच सकाथा । इसकारण जमा-दार साहवका हुक्म पूरा किया गया.आठ दश लात मारनेपर वह किवॉड टूट पडा, लेकिन् उसवक्त भी घरमे घुसनेकी हिम्मत जमादार साहवको नहीं हुई।फिर हुक्मसे काम चलाने लगे। काँपते काँपते रोशनी हाथमे लिये चार कानिस्टेव्ल उसी कोठरीके दरवाजेपर पहुँचे। लेकिन् दरवाजेहीसे भीतरका दृश्य देखकर वह इतना डरे कि, हाथसे रोशनी गिर गयी । इतनेमे दो तीन आदमियों सहित एक साहव आ पहुँचे. अब जमादार साहव खुद हाथमें रोशनी लेकर उठे पहले साहवको सुन्दरजानकी

लाश दिखायी । और फिर विना कुछ कहे हुए रामधनकी कोठरीकी ओर चले । भीतर जातेही साहब चिल्लाकर बोल उठे "Double Murder" डबल खून ।

इतनेमें दो और साहब पहुँचे और साहबकी आवाज सुनकर उसी कोठरीमे घुस गये । पुलीसके बडे साहबने कहा—"That,s Murder and this is suicide"

उनतीसवाँ अध्याय ।

आज चमेलीकी खुशीका हद नहीं है । सांसारिक दु.ख और रात दिनका कलह विवाद सब भूलगयी है । इतनी खुशीका कारण इतनाही है कि, गिरजा अपने भाईके हाथसे मारीगयी है। एक तौ सौतका मत्युसंवाद, दूसरे मौतसे नहीं भाईके हाथसे। चमेली मारे खुशीके आपेसे वाहर होरही है । इतनेमें रेखा वहाँ आ पहुँची । अब चमेलीका उससे पहलेकी तरह मिलाप नहीं रहा । तौ भी क्या ऐसी खुशीकी खबर चमेली रेखासे कहे विना रहसकती है । चमेलीने पुकारा—"फूआजी ! ए फूआजी !"

अहा ! आज चमेलीकी आवाज कैसी मीठी है ? बहुत दिन बाद इस मीठी आवाजके जवावमे रेखाने भी मीठी आवाजसे कहा—"काहे वेटी !"

चमेली—" अरे सुनीहो कि, नही ?"

रेखा चुप न रहसकी वडे २ पाँचासे दाँत निकालकर ओठ चबुलाती हुई बोली—"हाँ सुनचुकी हूं ।"

चमेलीसे—" तो क्या सच बात है ?"

रेखा—"क्या तू विसवास नहीं करती ? तो भला जो रामप्रसादको बुलाने आया है उसीसे काहे नहीं पूँछलेती ?"

च०—"क्या वहाँसे कोई आया है ?"

रेखा—"हाँ ! वही तो हमसे सब बात कहता था ।"

च०—"तो फूआजी ! काम कब होगा ? अबकी नेवता खाने मैं जाऊँगी । काहे फुआ ! खून होनेपर कामक्रिया होती है कि, नहीं ?"

रेखा—"अरे अभी तो मरी भी नहीं सो तुम कामका भोज खानेकी तैयारी कर रही हो ।"

चमेली—"क्या अबतक मरी नहीं ? अरे सुना तो है कि, भाईने छूरीसे मार डाला है फिर मरी नहीं कैसे ?"

रेखा—"छूरी तो मारा था लेकिन् मरी नही बचगयी है ।"

च०—"तो क्या खूनकी बात सब झूठी है ?"

रेखा—"नहीं खूनकी बात झूठी नहीं है, एक रण्डीका खून किया है और आप भी छूरी मारकर मर गयाहै" इतना रेखासे सुनकर चमेली,चौंक कर बोली—"अरे ! रण्डीको मारडाला,आप मरगया और बहनको नहीं मार सका ?"

रेखा चारो ओर देखकर बोली—"क्या करोगी बेटी ! यह सब हम लोगोका नसीब न है ।"

चमेली अपने नसीबपर कपार पटकने लगी थोडी देर बाद रेखा—"लेकिन् सुनती हूँ बुखार आताहै उससे भी कुछ खाता-नागा हो तो हो सकता है ?"

चमेली अपने कपारपर थप्पर मारकर बोली—"अरे फुआजी ! हमारा नसीब इतना बड़ा कहाँ है ?"

रेखा—"देखो तुम्हारे नसीबमें अब क्या क्या है ? रामप्रसाद तो जाते ही है वहां वह तुम्हारी वैरन सास और झुनिया हई है । हमको बडा डर लगता है । वहाँ तुम्हारी याद थोडे रहेगी । धन दौलत देखकेही रामप्रसाद भूल जायगा ।"

च०—"तो क्या उपाय है फुआजी ?"

रेखा०—"उपाय क्या बेटी ! मै तो सच बात कहती हूँ,

आजकल रामप्रसाद उसी ओर ढरा है। मै तो तुम्हारे डरसे नहीं कहती थी।"

च०--"हाँ फूआजी! यह तो मै भी जानती हूँ लेकिन् इस वक्त अब कोई उपाय है?"

रेखा--"उपाय काहे नहीं है! लेकिन् बेटी अब तो तुम वही नहीं हो कि, हमारेही कहनेपर चलोगी नहीं तो अबतक कभी इसकी तदबीर कर चुकी होती।"

चमेली विनती करके बोली--"नहीं फूआजी! घरके घडवडसे हमारा चित्त ठिकाने नहीं रहता। इसीसे कभी २ तुमको भी दो बात कह देती हूँ नही तो फुआजी! सच पूँछो तो इस संसारमें तुम्हारे जैसा हमारा दूसरा कौन है।"

अन्तकी बात कहते २ चमेलीकी आँखे डबडबा आयीं। बहुरूपिणी रेखाने अपना शिर जालमे फँसाकर मोहिनी मूर्ति धारण की चमेलीकी डबडबायी आँखे देख रेखा की आँखें भी छल छलाने लगीं। मानो स्नेह आँसूका रूप धरकर आँखोमें दीखने लगा। रेखा स्नेहमे बोरे हुए मीठे सुरसे बोली--"हाँ बेटी! तो क्या मैं बेफिकिर बैठीहूँ। बेटी आँसूपोंछ डालो मै जानती हूँ कि, तुम ठीक शरीरमे हमसे झगडा नहीं करती मै जब तुम्हारे वास्ते बेटीजी जानसे हाजिर हूँ! तब तुम कैसे नहीं हमको मानोगी?"

चमेलीका स्वभाव चाहे कितनाही बुरा हो लेकिन् रेखाके आगे वह सदा पीठही दिखाती रहेगी। अबके चमेली रेखाका पाँवं पकडकर रोने और माफी माँगने लगी. रेखा अपने आँचरसे चमेलीका आँसू पोछकर बोली--"अरे रोवो मत बेटी, रोवो मत! मैं तुमको यह चीज देती हूँ पानके साथ रामप्रसादको खिला देना। वह तुरंत तुम्हारे वश होजायगा। और घडीको जहरसा देखेगा। उसका धन दौलत सब देखकर भी नहीं भूलेगा अब बेटी बिना दवाई खिलाये काम नहीं चलेगा।"

चमेलीने मानो डूबतेमें थाह पाया। फिर कुछ देरतक दोनों न जाने क्या सलाह करती रहीं. इतनेमे रामप्रसादने चमेलीको पुकारा। उस वक्त वह रामप्रसादके लिये अधीर हो रही थी। दौड़कर रामप्रसादके पास आयी। रेखाने चारो ओर ताक झॉक-कर एक भयङ्कर संहारकारिणी मूर्ति धरकर कहा—" अब हमारी मनकामना पूरी होगी। "

तीसवाँ अध्याय।

रेखाका मनोरथ पूरा होनेमें देर नहीं है। उसी दिन उसकी दी हुई चीज़ पानमे डालकर रामप्रसादको खिलाई गयी। रामप्रसादने पहली ससुराल गिरजाके मायके जानेकी बात कही। चमेलीने बहुतकुछ उज्र किया लेकिन् जब उज्र मुआजरतसे काम होते नहीं देखा तो चट चमेलीने स्वामीके हाथसे पानमे दवा डालकर देदी। रामप्रसाद पान खागये लेकिन् उसमें कुछ दवा है यह उनको मालूम नहीं हुआ न किसी तरहका कुछ शक हुआ पान खातेही खाते रामप्रसादके शरीरसे पसीना छूटने लगा। सारा अङ्ग शिथिल हो चला। त्रस्त होकर रामप्रसाद बिछौनेपर पड़गये।इसबार भी जो आदमी लेने आया था उसे रामप्रसादने शरीरकी बीमारी बताकर बिदा कर दिया। और दवाका तत्क्षण गुण देखकर चमेली फूआको मनहीमन सराहने और धन्यवाद करने लगी।

सच मुच रामप्रसादका शरीर बहुत खराब हुआ था लेकिन् ऐसा क्यो हुआ सो रामप्रसाद कुछ न समझ सके। तीन चार घंटेतक सेजपर पड़े पड़े रामप्रसाद छटपटाते रहे। सिरमे बड़ी पीड़ा होने लगी। दवाका इस तरह प्रत्यक्ष गुण देखकर चमेली मारे खुशीके घूम रही है। वह रामप्रसादकी कुछ खबर भी नहीं लेती। शामको जब हाथमें चिराग लेकर चमेली उस घरमे आयी तब रामप्रसादको अचेत दशामे देखा। उसकी लाल २ आँख

और इकटक निहारना देखकर चमेली पहले बहुत डरी। फिर जल्दी जल्दी पास आकर बोली—"तुम्हारी आँखे लाल क्योंहैं?"

रामप्रसाद चमेलीकी ओर इकटक निहारने लगे। चमेलीको कुछभी जवाब नहीं मिला, चमेली रामप्रसादका शरीर छूतेही चौंक उठी। सारा अङ्ग इतना जलता था कि, उसपर कुछ देर-तक हाथ रखते नहीं बना। फिर चमेलीने कहा—"क्यों क्या बुखार आया है?"

इस बार भी रामप्रसादने कुछ जवाब नहीं दिया। उसीतरह चुपचाप चमेलीकी ओर देखते रहे। रामप्रसाद बात करना चाहते थे लेकिन् उस वक्त बोलनेकी शक्ति नहीं थी। केवल सिर दिखा दिया, लेकिन् सिरमे क्या पीडा थी सो कह नही सके. थोड़ी देरबाद सिरकी पीडासे इतने व्याकुल हुए कि, सेजपर पड़े भी नही रहसके रामप्रसाद दौडकर घरसे बाहर आये। चमेली भी पीछे २ आयी। रामप्रसाद बीमार है यह बात अब चमेली समझ गयी है। लेकिन् उस बीमारीका सवत्र उसकी वही वश करने-वाली दवा है यह बात अभी उसके मनमें नहीं आयी। रामप्रसा-दको बाहर भागते देख चमेलीने उसे जाकर पकड़ लिया। लेकिन् वह इतने पागल होगये थे कि, चमेली उसे पकड़ नहीं सकी। उसे ठेलपेल कर रामप्रसाद भागगये। रातकी अँधेरी छागयी थी। चमेलीने फिर सँभलकर पकड़ना चाहा। लेकिन् रामप्रसाद उस अँधियारीमें न जाने कहाँ गायब होगये। अब चमेलीको रेखाकी दवापर शक हुआ। लेकिन् उस वक्त रेखा उस घरमे नहीं थी इस कारण कुछ पूँछ न सकी।

अब रेखाका मनोरथ सफल होचुका वह इस घरमे क्यो ठह-रने लगी थी? रेखाको वहां न पाकर चमेलीका शक और बढ़ा अब वह रामप्रसादके लिये बहुत घबरायी। रामप्रसादके मिजाज

बदलनेसे अब घरमें कोई नौकर नौकरानी भी नहीं थी, जिसे उनको खोजनेके लिये चमेली भेजती. थोड़ीदेर बहुत कुछ सोच विचार कर चमेलीने एक पडोसीको बुलाया और इस कामका भार उसीको सौंपा । लेकिन् दश बजे रातके आकर उसने जवाब दिया कि, रामप्रसादका कुछ पता नहीं लगा । अब कोई उपाय न देखकर चमेलीने अपने मायके यह खबर भिजवाई । मायका पासही था उसी रातको उसका भाई तीन चार आदमियोको साथ लेकर पहुँचा । और सारी रात रामप्रसादको घर २ ढूंढते रहे । सवेरा होते २ रामप्रसाद मिले और उनको लेकर सब लोग घर आये ।

लेकिन् यह रामप्रसाद क्या वही रामप्रसाद थे ? जिस हाल-तमें चार आदमियोने काँध चढाकर रामप्रसादको घर पहुँचाया उसे देखतेही चमेलीका जी सूख गया । उसके मनमें जो सन्देह हुआ था, उसपर विश्वास होगया तो क्या रामप्रसाद सचमुच पागल होगये ? उनका काम देखनेसेही यह सुगमतासे समझा जा सकताहै । घरमें पहुँचतेही रामप्रसाद ठठाकर हँसे । वह हँसी रुक नही सकी. कल शामको जब शिर पीडासे व्याकुल होकर रामप्रसाद घरसे भागे थे तब उनको कुछ ज्ञानभी था, लेकिन् अब वह भी नही है लोगोने पहले रामप्रसादको स्नान कराना चाहा । चमेलीसे तेल माँगा तेल लाकर चमेली खडी हुई राम-प्रसादने उसको इनाममे जोरसे एक लात मारा तेलकी कटोरी अलग जापडी । चमेलीभी सख्त चोट खाकर गिरगयी । शिरमें भी बड़ी चोट लगी ।

रेखाके वशीकरणने क्या यही फल लाया ? चमेलीके पापका अब प्रायश्चित्त शुरूअ हुआ अब उसके शिरकी चोटसे हृदयमे अधिक चोट लगी इसवक्त चमेलीके चित्तकी दशा क्या है सो

सहजही समझी जासकतीहै तौभी हमको उससे कहनेकी शक्ति नहीं है। कलकी घटनासेही रामप्रसादकी यह दशा हुई है यह बात चमेलीने अच्छी तरहसे समझली है। लेकिन् उस बातको किसीसे जाहिर नहीं करती। इससे अब चमेलीको और अधिक मानसिक दुःख क्या हो सकता है? एक बात और है चमेलीको पूरा विश्वास था कि, रेखाकी दवासे रामप्रसाद उसके हाथकी कठपुतली होकर रहेंगे। लेकिन् जब उस दवाका यह गुण देखा कि, इतने आदमियोंके सामने इतना जोरसे लात मारनेमे रामप्रसाद नहीं रुके तो अब उसके मनको इससे और अधिक दुःख क्या होगा? जो सदासे पतिकी आदरिणी थी हजारो कसूरपर जिसे स्वामीने एक रूखी बात नहीं कही. उसे बिना अपराधके स्वामीका इसतरह जोरसे पदाघात कितना दुःख दायी होगा, यह सहजही समझा जा सकताहै। लेकिन् मनुष्य मात्रही कर्म फलके अधीन है। जो जैसा करेगा उसका वैसा फल उसे भोगनाही होगा। आज दिनोंके प्रतापसे चमेली ऐसी दशामे पडी कि, स्वामीके पदाघात भी चुपचाप सहना पडा। हम लोग चमेलीका स्वभाव अबतक जितना समझ चुके है उससे कह सकते हैं कि, अगर ऐसी घटना न होती तो वह इस तरहका पदाघात कभी सह नहीं सकती थी। अपमानका बदला ले सकनेसे उसकी गुरुता घट जाती है, किन्तु चमेलीके इस अपमानके बदलेका भी उपाय नहीं है। हमने चमेलीकी दशाका आभासमात्र दिया है। हमारे पाठक पाठिकाओंमें से कोई चमेलीके लिये दुःखी हों तो वे उसके पापकर्मोंका स्मरण करले।

एकतीसवाँ अध्याय।

सचमुच रामप्रसाद पागल होगये हैं. गाँवके लोग इसका मत-

माना कारण बतलाते हैं।कोई कहताहै-रामप्रसाद नौकरी छूट जानेसे पागल होगया है । कोई कहता है-आपका धन दौलत खो जानेसे उसीके सोचमे पागल हुआ है । कोई तीसरा कहता है-ऐसी घरनी जिसके घरमे है वह पागल न होगा तो होगा कौन ? लेकिन् पागल होनेकी सच्ची वजह किसीको मालूम नहीं, मालूम है तो उसी रेखा और चमेलीको । जब वह दोनो इसे छिपाना चाहती है तो असल कारण कैसे जाहिर हो ? इस घटनाके बाद रेखा अब रामप्रसादके घर नहीं आती । चमेलीके बहुत कुछ करनेपर भी जब वह नहीं आती तब समझलिया कि, रेखाने ही उसका यह सब सत्यानाश किया है चमेली रामप्रसादके रोगका कारण जानती है लेकिन् किस उपायसे उनको आराम होगा इसके बारेमे रेखाके सिवाय वह और किसीसे सलाह करना नहीं चाहती । इस कारण रेखासे एकबार मिलना चमेलीको बहुत जरूर हुआ ।

एक दिन रातको चमेली चुपचाप रेखाके घर जा पहुँची । पहले तो रेखा चमेलीको देखकर डरी. फिर वह भाव छिपाकर आदरपूर्व्वक बैठनेके लिये कहा, कोपके मारे चमेलीका शरीर थर्राता था । ऐसी दशामें रेखाका आदर कहाँ अच्छा लगे-चमेली गरज कर बोली-"काहे रे ! हमने तेरा क्या बिगाडा था जो तूने मेरा ऐसा सर्वनाश किया."

चमेलीके रङ्ग ढङ्ग देख और सुर सुनकर रेखा बहुत डरी । लेकिन् मनका भाव छिपाकर सुर फेरनेका अभ्यास रेखाको सदासे थाही चट रङ्गबदलकर बोली-"हाँ बेटी ! हाँ ! अब तो तू जो चाहे सो कहे कह मुझे सभी सहना चाहिये । तेरा नसीबही देखकर मै अचेत होगयी हूँ । जबसे सुना तबसे मरी जाती हूँ । भला ऐसाभी किसीका नसीब देखा है । अच्छा करने जाय तो

बुरा होय। हे भगवान्! इतना कर कराके अब अन्तमे मुझको कलङ्किनी होना पडा।"

अन्तकी बात कहते २ रेखाकी आँखोमें आँसू आया वह आगमे पानी पडनेके समान फल लाया। उसके आंसू देख चमेली कुछ ठण्डी हुई। और बोली—"अच्छा और सब जाने दे अब क्या तदबीर है सो बता।"

इस बातका रेखा क्या जवाब देगी सो स्थिर न करसकी। थोडी देर चुप रहकर बोली—"क्या कहूँ बेटी मै भी तो यही सोच रही हूँ रात दिन इसी विचारमें हूँ कि, क्या करूं।"

चमेलीका एक मात्र अवलम्बन यही रेखा है। किसी काममें एकदम निराश होनेसे आदमी नयी आशाकी सृष्टि करता है। चमेलीको भरोसा था कि जब रेखाकी दवासे रामप्रसाद पागल हुए है तब उसीकी दवासे अच्छे होंगे; लेकिन् उसके मुँहसे ऐसी बाते सुनकर चमेलीको वडी चोट लगी उसका विषण्ण मुख देख कर रेखा बोली—"बेटी! तू इतना सोचती काहेको हो? रामप्रसादका चित्त दवासे बिगड़ा है कि, बहुत सोच फिकर करनेसे बिगडा है सो तो ठीक मालूम नहीं लेकिन् वह ठण्डा होनेसेही आराम होजायँगे। बेटी! तुम उनको ठण्डा करो ठण्डा।"

चमेली लंबी सांस लेकर बोली—"मैं उनको ठण्डा क्या करूंगी मुझे तो देखतेही वह जलकर खाक होजाते हैं। मार खाते २ तो मेरा शरीर नाहीं हो गया! कोई चीज खानेको लेजाती हूं तो जहर खिलाकर मारने आयी कहके चिल्ला उठते है। हमारे हाथकी कोई चीज नही खाते। रात दिन जो मैं भोग रही हूं सो तुमसे क्या कहूँ"

अन्तकी बात कहते २ चमेली रो उठी। रेखा प्रबोध देकर बोली—"ना बेटी रोवो मत! तेरी आँखमें आँसू देखनेसे मेरी छाती फटी जाती है, बेटी! रोवो मत।"

अवकी रेखाभी रोने लगी । इस रोनेका और कुछ फल हो या न हो लेकिन् चमेलीका जी पानी होगया । उसके जीमें रेखाकी ओरसे जो गुस्सा, हिंसा और दुःखकी आग भड़क रही थी सो सब बुझ गयी । फिर चमेली रेखाको अपनी हित-कारिणी समझने लगी, धन्य रेखा मिसराइन धन्य ! धन्य तुम ! धन्य तुम्हारी माया !

चमेली अब रेखाके गलेसे मिलकर जोरसे रोने लगी । बहुत देरतक दोनों गला जोडकर रोती रही । रोनेसे दुःखकी ज्वाला कुछ घटतीहै । इस रोनेसे चमेलीको और कुछ लाभ हो या न हो किन्तु प्राणकी ज्वाला बहुत कुछ घटी । अब चमेलीके वह सुखके दिन नहीं है । स्वामीके सोहागसे सुहागिनी और संसारके आदरकी आदरिणी चमेली अब रास्तेकी भिखारिनी है । अब उसका जीवन सङ्कटमय है एक क्षणके लिये भी उसको सुख नहीं है । आज दुःख उसका देखकर उसके लिये भी बडा कष्ट होता है । हम लोगोंने उसके पापका अन्दाज तो नहीं किया लेकिन् उसका प्रायश्चित्त देखकर सहृदय मात्रको करुणा आती है स्वामीके घर आनेपर जिस चमेलीके ऐश्वर्यकी सीमा नहीं थी, वही चमेली आज भोजन वस्त्रके लिये ललायी फिरती है । जो सास छोटी वहू करके मुँह सुखाती थी और जिसके अनुचित आदरसे चमेलीने इतना सत्यानाश किया आज वही सास उस आदरकी बहूका कुछ समाचार नहीं लेती । जो स्वामी वैसी पतिप्राण गिरजाको भूलकर भी उसका दास गुलाम हो गया था आज उसी स्वामीके जुलमसे चमेलीके प्राणपर सङ्कट हो रहा है । फिर और इससे अधिक प्रायश्चित्त क्या वाकी है ? लेकिन् अब भी वाकी है हम ज्योतिष नहीं जानते तौभी लक्षण देखकर कहते हैं कि, अब भी कुछ वाकी है अगर चमेलीका प्रायश्चित्त पूरा होगया होता तो रेखासे फिर मेलही क्यों होता ।

बत्तीसवाँ अध्याय ।

अब हम इस वक्त गिरजाकी बात कहेंगे जिस हालतमें हम उसको छोड आये हैं उसको याद करके हमारा चित्त गिरजाके वास्ते बहुतही व्याकुल हो रहा है । यद्यपि रामधनकी छूरीसे गिरजाके प्राण नाश न होनेकी खबर हम पाचुके हैं तौभी उसका हाल क्या है जानना चाहिये । अगर गिरजाके बचजानेकी खबर न मिली होती तो हम लोग इतनी देरतक निश्चिन्त न रहते ।

रामधन जब गिरजाको मारने गयाथा तब उसकी ,जो हालत थी वह हम पहले कहचुके हैं । बेगुनाह गिरजाकी हत्या करनेको जाकर रामधनका पत्थरहृदय पसीज गया, यह कुछ आश्चर्यकी बात नहीं और गिरजाके पेटमें छूरी मारनेके लिये रामधनकी बलवान् भुजायें तेजहीन होगईं इस बातपर भी सहजही विश्वास किया जासकता है । जो हो, रामधनकी छूरीसे चोट खानेपर जब गिरजा चिल्लाउठी और आसपासके बहुतसे लोग चिल्लाहट सुनकर दौडे आये तब "किसने यह सत्यानाश किया है" बार २ ऐसा पूँछनेपरभी गिरजाने पुलीसवालेके डरसे और भाईको बचानेके लिये मुँहसे रामधनका नामतक न लिया, लेकिन् एक नौकरने रामधनको उस घरसे भागते हुए देखा था, इसलिये गिरजाके छिपाने परभी बात छिपी नहीं रही लेकिन् उसवक्त वह बात पुलीसवालोंको मालूम नहो इस बातकी तदबीर करनेके लिये गिरजाने बहुत कोशिश की और अपनी चोटका दर्द दिलहीमें सह २ के रहगयी. लेकिन् जब दूसरे दिन सुन्दरजानके मारेजाने और रामधनके आत्मघात करनेकी खबर शहरभरमें फैलगई तब यह सब मामिला रामधनके घरवालोंनेभी सुन लिया । गिरजा और जमुना फूआसे रामधनके मरनेकी बात छिपाई गई और गिरजाकी ठीक तौरसे दवा होनेलगी । दो तीन दिनमें गिरजाको

बहुत आराम होगया तब वह खबर पहलेपहल जमुना फूआको पहुँची। जमुनाने बात सुनतेही गिरजाके कानमे पहुँचाई। गिरजा इस खबरको सुनकर बहुत व्याकुल हुई मानो सिरपर वज्र गिर-पडा। भाईकी छूरीसे घायल होनेपर गिरजाको उतना दुःख नहीं हुआ था, जितना भाईके मरनेकी खबरसे हुआ. बहनके हृदयका ऐसा अतुलित प्रेम है कि, अपने हत्या करनेवाले भाईका मरना सुनकर गिरजाकी आँखोसे आँसूकी नदी बहने लगी। धन्य सती गिरजा! तुम धन्य हो!

गिरजा अब कुछ आराम होचुकी है, भाईका शोकभी बहुत कुछ घट गयाहै। लेकिन् ऐसीही विपत्तिके समय यह भयंकर खबर पहुँची कि, गिरजाके जीवनसर्वस्व स्वामी पागल होग-येहैं। गिरजाका जैसा नसीब है उससे सब कुछ संभव होसकता है। जो गिरजा दुःखसे दुर्बल हो सेजपर पडी रहती थी उसे स्वामीके पागल होनेकी बात सुनकर न जाने कहांसे बल आगया? चटपट उठकर सासके पास पहुँची सासकोभी जब यह खबर मिली तो बहुत दुःखी हुई। हजार हो तो माका प्राणहै बेटेके अमङ्गलकी बात सुनकर कहां स्थिर रह सकतीहै सासको रोते देखकर गिरजाभी रो कर बोली "मा जी! अब सब गुस्सा छोडकर हम लोगोको चलना चाहिये" सासने आँसू पोंछकर कहा "तुम अभी बहुत कमजोर हो इस वक्त तुम्हे कैसे ले चले तुम यहीं रहो मै जाती हूं यहीं लाकर उसकी दवा करूंगी"

गिरजा–"नही! मा मै भी तुम्हारे साथ चलूंगी अब मैं दुर्बल नहीं हूं अगर वह न आने दें तो मैं यहां कैसे रहूं।"

सास–"यहां लाये बिना दवा नहीं होगी।"

गिरजा–"वहांभी दवा हो जायगी इलाहाबादसे बडे २ वैद्य

और कलकत्तेसे कविराज बुलालूंगी रुपयेकी तो कमी है नहीं ।"

सास—"मैं समझतीहूं रुपयेहीकी चिन्तामें उसको हौलदिल हो गया है"

गिरजा—"उनको रुपयेका क्या शोच है यह सब रुपया तो उनहीका है" इतनेमे झुनियां गर्जकर बोली "रुपयेके वास्ते उनको होने दिन नहीं हुआहै इ सब सर्वनाशी रेंखा और नछु-रीका काम है कोई दवाई खिलानेके बहाने कुछ खियांके पांगन कन दिया होगा" झुनियाँकी बात सुनकर गिरजा चौंक उठी और चकित होकर सास और झुनियॉकी तरफ बार २ देखने लगी । सास बोली—"वह सब जो करे सो कठिन नहीं है अब ऐसा करना चाहिये जिससे बच्चेको आराम होजाय"

सीधी साधी गिरजाके मनमे इस बातपर विश्वास न हुआ वह बोली "इस वक्त उस बातको छोडो और जो कुछ लेना देना हो सो लेदो लो मैं गाडी मँगाती हूं अभी चलना होगा" ।

झुना—भिनभिनाकर बोली—"एक सिपाई और दो नौकर हम लोगोंको अपने साथ लेजाना चाहिये ।"

गिरजा—"सिपाही और नौकर लेजानेसे लोग समझेगे कि, बड़वारगी दिखाने आई है उन सब बातोंसे कुछ काम नहीं है ।"

झुना—इस बार झझककर बोली—"हं हो हं मैं बड़वारगी दिखानेके वास्ते करती हूं सिपाही और नोकर बिना उनकी दवा कैसे होगी ।"

एक नीच जातिकी झुनियोकी ऐसी अक्ल देखकर गिरजाको बडा अचम्भा हुआ सचमुच उस करकसा झुनियांका स्वभाव अब बहुत कुछ बदल गयाहै लेकिन् यह सब बदलना सिर्फ गिर-जाके गुणसे हुआ है ।

एक घटेमें सब तैयारी होगई जाते समय सब घर और माल

असबाब जमुना फूआको सौंपने लगी लेकिन् जमुनाको रामधनका शोक अभी भूला नहीं था इसलिये कुछ भी अपने हाथ में नहीं लिया. अंतमें सब भार एक नौकरके ऊपर रखकर गिरजा सास और झूनियोंके साथ चुनारसे रवाना हुई तीनही चार घंटेमें गिरजा सबको साथ लिये हुए सासरे पहुँची. स्टेशनसे गाँवतक जानेमें सबको उसकी आनेकी खबर होगई। जो लोग रामप्रसादके ससुरका बहुतसा धन छोडके मरजाना जानते थे वह सब दलके दल देखनेको आने लगे "धनकी अपारमहिमा है"।

इधर अकस्मात् गिरजाको देखकर चमेली बहुत चकराई। चकरानेका कारण और कुछ नहीं. उसको यह सब बातें असम्भव जान पडती थी. लेकिन् अबके सासको और सवतको देखकर चमेली बहुत खुश हुई. चमेली जो रोज दुःख सहती थी अब इनके आनेसे घटेगा इसी उम्मेदमें वह सबकी खातिर करने लगी। सास और गिरजाकी आँखों मे भी आँसू आया तीनों गला मिलाकर रोने लगी। पडोसियोंने भी रोनेमें योग दिया। उनमेंसे रेखाकी रुदनमात्राही सबसे अधिक थी।

सब तो देखने आये लेकिन् रामप्रसाद कहाँ है ? रामप्रसाद भी देखने आये हैं। आकर माको प्रणाम किया। मा उनका उदास मुँह और दुबला शरीर देखकर रोने लगीं। माताको रोते देख रामप्रसाद हँसने लगा। मा जितना रोती थी बेटा उतनाही हँसता था। वह हँसी देख और भी एक आदमी रोता था। लेकिन् उसके रोनेपर किसीने जवाब नहीं दिया। हँसीका जवाब रोना और रोनेका जवाब हँसना जगत्का यह रहस्य कौन हम लोगोंको बतलावेगा ?

तेतीसवाँ अध्याय ।

पहलेही रामप्रसादकी दवाका बन्दोबस्त हुआ इन दिनों उनके घर नौकरकी कमी नहीं है । गाँवके सब छोटे बडेने रामप्रसादकी बडी स्त्री गिरजाके धन दौलतकी बात सुनी थी । फिर अब रामप्रसादको आदमियोंकी क्या कमी होगी ? उपाध्या, तिवारी और दुबे, चौबे, लालासिंह सबसे रामप्रसादका आज घर भरा हुआ है । सबने मानो रामप्रसादके हितके लिये अपना प्राण दे रक्खा है । सबकी सलाहसे तीन वैद्य लगाये गये और तीनोंकी सलाहसे बडी सावधानीपूर्वक दवा होने लगी । खर्च आदिकी भी कुछ कमी नहीं थी । कमी कैसे हो ? रामप्रसादके लिये गिरजा अपना सब कुछ दे देनेको तैयार है ।

फिर गिरजा चमेलीके सन्तोषको भी कुछ उठा नहीं रखती । रामप्रसादकी दुरवस्थामे चमेलीका प्राण सब गहना नष्ट हो गया था । गिरजा जानती थी कि, वह अतिशय अलंकारप्रिय है । इसी कारण गिरजाने बापका दिया हुआ अपना सब गहना चमेलीको पहना दिया । वस्तुतः गिरजाके ऐसे व्यौहारसे चमेलीका द्वेष बहुत कुछ कम हुआ । किन्तु इन्हीं दिनो रेखाने उसको अकेलेमें बुलाकर कहा—"अरे बेटी ! तू अभी लडकी है यह सब बखेडा तुम समझती नहीं हो । सब शरीरका गहना उतार करके दे दिया सो जानती हो काहे दिया है ?"

चमेली आग्रह करके बोली—"काहे फूआजी ! काहे दिया है?"

रेखा—"तू अभी लडकी है गहना पानेहीसे खुशी होकर चुप चाप बैठ जायगी ।"

चमेली—"तो फूआजी ! गहना पहननेसे दोष क्या है ?"

रेखा—"तू समझती तो है नहीं। इस वक्त तुझे गहना पहननेका मौका है भलो तुझे गहना पहने देखकर दुनिया क्या कहेगी ? यह तुम गहना नहीं पहनती, सारे देहमें निन्दा पहनती हो ।"

चमेली--"हाँ फूआ ! ठीक कहती हो सच बात है। मै फूआ ! सीधी सादी मै इतना तीन पॉच क्या जानूं ?"

रेखा--"यही तो कहती हैं बेटी ! कि, तुम दो चार गहना पानेसेही फूलकर सब भूल जातीहो । लेकिन् भीतरही भीतर क्या हो रहा है सो तुमको खबर नहीं है ।"

चमेली--"मै क्या जानूं फूआ कि, इसके भीतर इतना पेच घुसा है ?"

रेखा--"और कुछ बेटी चाहे समझो या न समझो लेकिन् हमारी यह बात गाँठमे रक्खो कि, सौत कभी अपनी नही हो सकती ।. वह कुछ भलाई भी करे तो उसे बुराई ही समझियो ।"

चमेलीके मनमे रेखाकी सब बाते फिर दृढरूपसे बैठगयीं । जब ऐसी मन्त्र देनेवाली मौजूद है तब गिरजा चाहे जितनी कोशिश करो सौतका द्वेष कहाँ दूर होसकताहै ? रामप्रसादकी मा रेखाको खूब पहुँचान चुकी थी । फिर घरमे रेखाको देखकर बहुत नाराज थी रेखा भी रामप्रसादकी माकी यह नाराजी समझती थी, लेकिन् बाहर कोई जाहिर नहीं करसकती थी ।

रामप्रसादकी मा मुँहपर रेखाको कुछ नहीं कहसकती थीं इसी कारण झुनियासे उसे अपने यहां आनेको मना करना विचारा. झुनिया भी मना करनेको तैयार थी । लेकिन् गिरजाने जब हाल सुना तब सासका चरण धरकर विनती करके कहने लगी । "माजी!आजकल । हमारा दिन खराब है किसीको नाराज करना अच्छा नही हे ।"

गिरजाने अपने गुणोंसे सासको बहुत प्रसन्न करलिया था । और सास भी गिरजाको बहुत कुछ मानती थीं । इसीकारण गिरजाके अनुरोधसे रेखाका रामप्रसादके घर, आना जाना नहीं रोकागया । लेकिन् यह बात झुनियाको बहुत बुरी लगी । घरमे

कुछ और अधिकार दखल न रहते भी रेखाका आना जाना पह-लेहीकी तरह बना रहा।

रामप्रसादकी एक दिनकी बात सुनने लायक है। इन दिनों अब वह सदा पागलही नहीं रहते। कभी २ ऐसी बातें वह कहते है कि, उन्हें पागल समझनेका साहस नहीं होता। रामप्रसादमे पागलपनेकी दोही बाते है एक तो खूब हँसना दूसरे सब आहारी पदार्थोंमे विषका सन्देहभाव। कभी किसीसे बात करनेकी इच्छा नहीं है। सदा निर्जन स्थानमें बैठकर न जाने क्या सोचते रहतेहैं। इन दिनों कोई उन्हे कुछ कहे तो वह नाराज हो उठते हैं। वैद्योंने कहाहै कि, रोग जरूर आराम हो जायगा लेकिन कितने दिनमे आराम होगा सो ठीक नहीं बतलाया है।

सवेरे वैद्योंका दिया हुआ तेल तीन चार घंटे तक चार नौकर मिलकर रामप्रसादके सारे शरीरमें लगाते हैं। एक दिन रामप्र-सादके मनमे आया कि, अब नौकरोंके हाथसे तेल नहीं लग-वावेंगे बात अभी अन्तःपुरहीमे थी। माताने चमेलीकोही बेटेकी प्यारी स्त्री समझकर तेल लगानेके लिये कहा डरती डरती चमेली तेल लगाने आयी।" रामप्रसादने पहले कुछ नहीं कहा चमेलीनेभी साहस करके तेल लगाना शुरूअ किया रामप्रसाद कुछ देरतक चमेलीकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते रहे।

फिर लाल लाल आँख करके बोले—"काहेरे अब जहर मला रही है। जहर खिलाकर मनसा पूरी नहीं हुई अब जहर बद-नमें मलने आयी है?"

चमेली इतनी बात कहाँ सह सकतीहै। ऐसी आदरकी स्त्री चमेली इतने आदममियोके सामने विशेपकर सौतके सामने पतिके मुँहसे ऐसी बात सुनकर बहुत बिगडी और रामप्रसादको कुवाक्य कहा। चमेली की बात सुनकर रामप्रसादको इतना कोप हुआ

कि, मारे गुस्सेके थर थर काँपने लगे । और चमेलीका झोटा पकड़के घसीट २ इतना मारा कि, वेदम करदिया । तीन चार आदमियोने बडी कठिनाईसे छुडाकर चमेलीको अलग किया । मा तेल लगाने चली । तव रामप्रसादने मना करके कहा—"काहे मा ! क्या कोई दूसरा तेल लगानेवाला नहीं है कि, तू तेल लगाने आतीहै ?"

रामप्रसादका गुस्सा अभी गया नही था । ऐसी दशामें गिरजाके सिवाय किसको तेल लगाने जानेकी हिम्मत होगी ? गिरजा डरके मारे वहुधा स्वामीके आगे नहीं जातीथी लेकिन् इस समय उससे नहीं रहा गया । तेल लेकर धीरे २ मलने लगी । गिरजा को देखकर रामप्रसादने कुछ नहीं कहा । चुप चाप बैठे २ ! तीन घंटे तक तेल लगवाते रहे । वहुतसे लोग यह घटना देखरहे थे । उनमे रेखाभी खडी थी । शान्तभावसे अब तेल लगवाते देखकर रेखा चमेलीके पास दौडी हुई गयी । चमेली अपने आँसूसे छाती भिगोरहीथी । रेखाने उसे खुदका कर—"अरे ! छोटी ! उठ उठ ! जल्दी उठ ! एक मजेकी वात देखो तो !"

चमेली चोटके मारे उस वक्तभी दुःखी थी । इस कारण रोती हुई वोली "मै अपनीही विपत्तिसे मरती हूँ मजा क्या देखूँगी ?"

रेखा—"इस मजाके देखनेसे तू मरजायगी तोभी अफसोसकी वात नहीं है ।"

अव भला चमेली कहाँ पडी रह सकती है ? चट उठ वैठी और आँसू पोंछकर वोली—"क्या दिखाती हो ?"

रेखा लम्बी साँस लेकर वोली—"कहीं जाना नहीं होगा इसी घरमें बैठे २ इसी सामनेके जंगलेमेंसे देखलो ।"

चमेली तावरतोड उसी जंगलेके पास जा खडी हुई । लेकिन कुछ देर तक खडी न रह सकी । चमेली क्या स्वप्न देखती है !

या सच है ? पहले उसने स्वप्नही समझा । लेकिन् जहाँसे मार खाकर आयीहै वहाँ सब लोग, अभी ज्योके त्यो खडेहै जो बैठेथे वह बैठे है । या भगवान्! ऐसी घटना दिखानेके पहले तुमने चमेलीको अन्धी क्यो नही करदिया । वह क्या रामप्रसाद् हैं और वह गिरजा ? चमेलीको तो विश्वासही नहीं होता रेखाका काम इतनेहीसे होगया ।

और एक दिनकी बात सुनो रामप्रसाद् भोजनको बैठे है । सामने मा बैठी भोजन करारही हैं । इतनेमे एक ग्लास पानीकी जरूरत पडी माको पुकारकर पानी माँगा । पासही चमेली खडी थी । चटपट ग्लासमें पानी लायी । और रामप्रसाद्के आगे रक्खा । रामप्रसाद्ने उसे देखते ही जहर जहर करके ग्लास उठाया और चमेलीके शिरपर खींचकर मारा । चमेली चक्कर खाकर वहीं गिरपडी । गिरजाने दूसरे ग्लासमे पानी लादिया । रामप्रसाद् उसे पीकर शान्त हुए । चमेलीने पडे २ वह दृश्यभी अपनी आँखोंसे देखा । अब यहाँ चमेली दो चोटमे पडी है । एक तो सिरकी चोट दूसरी हृदयकी चोट. पाठक ! आप विचारले कौनसी चोट अधिक है ?

चौंतीसवाँ अध्याय ।

उसी दिन शामको चमेलीने अकेलेमें रेखाको पुकारा और रो रोकर बोली—"अब तो सहा नही जाता फुआजी ! इसकी कोई तदबीर करो । नही मै जहर खाकर मरजाऊँगी ।"

चमेलीकी ऐसी बात सुनकर रेखियाकी आँखे कबतक सूखी रह सकती हैं वह मनहीमन हँसी, फिर बाहरसे रोकर बोली—"हां बेटी हां तुम्हें तो बडा दुःख है यह दुःख सहनेका नही है मसल कहते हैं कि, भात बाँटा जाता है, लेकिन् भतार नहीं बाँटा जाता । तेरा दुःख देखके बेटी हमारी छाती फटीजाती है !"

इतना कहकर रेखा बडी व्याकुलता दिखाने लगी चमेली फिर रोकर बोली--"फुआजी ! हमको माहुर लादो खाकर मरजाय ।"

रेखाने चमेलीका आँसू पोछकर कहा--"अब मत रो बेटी अब मत रो ! माहुर खाके तेरा बैरी मरे तू काहे को मरेगी ? ऐसा सोनेसा लडका इसको सौतके हाथमे सौंपकर तू मरजायगी?"

चमेली लम्बी साँस लेकर बोली--"अब सहा नहीं जाता ।"

रेखाने भी चारो ओर देखा और दाँतपर दाँत पीसकर बोली- "माहुर खाके मरनेसे बेटी ! माहुर खिलाकर बेखटके होना अच्छा है ।"

क्याही भयङ्कर बात है ? कैसी भयावनी सलाह ? चमेली रेखाके मुँहकी ओर देखकर सिहर उठी ।

रेखाने फिर मोहिनी मूर्तिधरकर कहा--"देखती क्याहै बेटी बैरीके मारने से पाप नहीं होता ! वैद्य लोग कहतेहै दसही पन्द्रह दिनमें रामप्रसादको आराम हो जायगा । ऐसेही अव-सरपर बैरी मारनेसे तेरा दुःख दूर हो सकताहै ।"

चमेलीकी छाती धडक रहीथी तोभी उसके मुँहसें यह बात एकदम निकल पडी--"मैं माहुर पाऊँगी कहाँ ।"

इस दुःखके समय भी रेखाके मनकी हँसी बाहर होपड़ी । रेखा उस हँसीको रोककर बोली--"इसके वास्ते तू फिकिर काहेको करती है ? मेरे घरमें माहुर रक्खा है । मै लाये देती हूँ ।"

इतना कहकर रेखा एकसाँस दौड़कर घर चली । चमेलीके मुँहसे जवाब भी नहीं पाया था कि, आधे घंटे बाद हाँफती हुई रेखा फिर पहुँची पहुँचतेही एक डिबिया चमेलीके हाथमे देकर बोली--"ले बेटी ! इसी डिबियामें जहर है । दूधके साथ खिला-खिलादेनेसे काम बन जायगा। आजही रातको खिला देतो अच्छा होगा। तूही तो सबको दूध बाँटती है आजही दूधमे डालकर दे देना।"

जब चारो ओर ताकझाँक कर रेखा चमेलीके कानमें यह बातें कहरही थी तब न जाने क्यो चमेलीके जीमे धडकन पडी थी। चमेलीके मुँहसे बात नहीं निकलती थी। थोडी देर बाद बोली—"फूआजी! हमको बहुत डर लगता है।"

रेखा मनमे बहुत नाराज़ हुई, लेकिन् वह नाराजी छिपाकर बोली—"नहीं बेटी! डरनेसे काम नहीं चलेगा। यही एक काम कर दो, फिर जिन्दगी भर सुख भोगो कुछ बहुत देरका काम नहीं है।"

अहा! रेखाकी बाते क्याही मीठी है, लेकिन् इन मीठी बातोंसे भी चमेलीका कलेजा तक सूखा जाता है। मुँहसे बात नही निकलती। बडे दुःखसे चमेलीने इतना कहा—"फूआजी! हमसे तो यह नहीं बनेगा?"

फूआकी आशापर पत्थर पडा घबराकर बोली "अच्छा तो हमारे आगे तू दूध बॉटके बडीका कटोरा बतादे मैं आप करलूँगी।"

रेखा जरूर कुछ जादू जानती है नहीं तो उसकी बातोंमें पड-कर वह दूधका भाग लगाने क्यो जाती? हररोज़ जैसे अपने लडकेके लिये बडे कटोरेमे दूध रखकर बाकीमें सबका भाग लगाती थी आज भी वैसाही किया। और रेखाको गिरजाका कटोरा बतादिया।

रेखाने चारो ओर झाँककर गिरजाकी कटोरीमे डिबियाका जहर मिला दिया इतनेमें झुनियाने आकर कहा—"बहूजी! बडी बहूको दूध दो और रसोई घरमे तनक चलो।"

यहाँ चमेलीके मुँहसे, बात नहीं निकली। रेखाकी बातसेही वह डर गयी थी। अब वह थरथराने लगी। लेकिन् रेखाका मुँह बन्द नहीं था। चट जहर मिला हुआ दूध झुनाको दिखा दिया। झुनाने दूध लाकर गिरजाकी थालीके पास रक्खा।

झूनाको उस वक्त कुछ शक नहीं हुआ, क्योंकि उसका ख़याल केवल इसी बातपर था कि, दूध कम तो नहीं है। उस वक्त भी गिरजाके खानेमें देर थी इस कारण दूधकी कटोरी उसकी थालीके पासही रही! इतनेमे रोते हुए नातीको गोदमे लिये हुए रामप्रसादकी मा वहीं आपहुँची उसका रोना सुनकर गिरजा बोली–माजी! "हमारे दूधमेसे बच्चाको खवादो मैं उतना दूध नहीं खाऊँगी।"

रामप्रसादकी माभी रोते हुए नातीको चुपकरानेके लिये उसी दूधमेसे खिलाने लगी। एक दो तीन चार करके छःघोंट दूध पिलादिया गया। लेकिन् तौ भी लड़के का रोना नहीं रुका। आजी सोचने लगी कि, क्या लडकेको भूख नही है! थोडी ही देरमे लडकेका रोना तो थम्ह गया लेकिन् साथही यह क्या सर्वनाश हुआ उसकी दोनों आँखे कपारपर क्यो चढ़गयी। आजी अकचकाकर बोली "ए बडी! अरे यह क्या हुआ! दूध खिलातेही बच्चा ऐसा काहे करता है?"

सुनकर गिरजा वहाँ आयी। लडकेकी दशा देखतेही चिल्ला उठी चिल्लाना सुनकर घरके और लोग दौडे आये। चमेली भी आयी लडकेकी हालत देखी। उसी दूधमेंसे लडकेका दूध खाना सुनकर बाकी दूध झट उठाकर पीगयी। पीनेके साथही जमीनमें गिरपडी। लेकिन् उसवक्त सब लडकेमें लगे थे किसीने इधर खयाल नहीं किया। केवल रेखानेही बचा हुआ दूध चमेलीको पीते देखाथा। चमेलीकी गति खराब देखकर वहाँसे सरकी और एकही साँसमें घर पहुँची। चमेली वहीं पडीरही।

घरमे हडकम्प मचगया। कोई डॉक्टर बुलाने गया कोई वैद्यको दौडा कोई और लोगोंको बुलानेलगा। रामप्रसाद की मा रोते २ आकाश फाडने लगी। और "झुनियाके मनमें ऐसाथा"

कहकर उसे गाली देने लगी। झुनियाके मुँहसे बात नहीं निकलती। उसने दो एक थप्पडतक खाये हैं। तो भी उसने कुछ नहीं कहा। गिरजाने इस वक्त बड़ी बुद्धिमानीका काम किया बच्चे को पानीमे नमक खिला दिया । इसीकारण डॉक्टरके आनेसे पहलेही बच्चेको कय होने लगी। डॉक्टरने आकर देखा और कहा "कुछ डर नहीं है।"

इतनेमे डॉक्टरने बचा हुआ दूध देखनेकी इच्छा जाहिर की। तब सब की नजर उस कटोरेकी ओर गयी लेकिन् कटोरा तो उसवक्त खाली था। न जाने कौन सब चाट गया। अब सब की आँख चमेलीपर पडी डॉक्टरने चमेलीकी हालत देखकर कहा—"अरे! यह क्या? इसने भी जहर खाया है!"

अब वह बचा हुआ दूध कहाँ गया सो सब की समझ मे आगया। बेटेका अमङ्गल जान उसका अमङ्गल होनेके पहलेही माने भी जहर खालिया है । पुत्रस्नेहका ऐसा उज्ज्वल दृष्टान्त अपनी आँखोसे देखकर सबके आँसू आगये। पहले लडकेही को दवा खिलायी गयी। उससे लडकेको बहुत लाभ हुआ। इतनेमे माको भी दवा आपहुँची। डॉक्टर उसे भी खिलाने चले तब चमेली बोली "मै दवा नहीं खाऊँगी जिसतरह बने हमारे बचेको दवा देकर बचावो मैंने जैसा काम किया उसका ठीक२फल भी पाया है।"

चमेलीकी बात सुनकर सब एक दूसरेका मुँह निहारने लगे। किसीसे कुछ कहते नहीं बना. इतनेमें रामप्रसादकी माने कहा— "तो क्या तू वडीके दूधमे जहर देकर उसे मारना चाहती थी।"

इतना सुनकर सब विस्मित हुए। चमेली फिर कहने लगी— "मैं तो नहीं। मैं तो जहर खाकर मरना चाहती थी सो रेखा फुआने मेरी सौतको मार डालनेके वास्ते उनके दूधमें जहर मिला दिया इसीसे यह सब सर्वनाश हुआ है। इसीने हमारे स्वामीको भी दवा खिलाकर पागल किया था।"

सवलोग चमेलीकी वात सुनकर अवाक् होगये । उसवक्त रेखाकी खोज होनेलगी चारों ओर आदमी छूटे लेकिन् कहीं उसका पता नहीं मिला । झूना उस रातको रेखाके घरतक गयीथी । डॉक्टरने कहा—"खैर लडकेकी कोई चिन्ता नहीं वह तो अव जानो आराम होगया । लेकिन् तुम दवा. खाव नहीं तो हम लोग तुम्हे वचा नहीं सकेंगे ।"

इतना कहकर डॉक्टरने जबरदस्ती करके दवा खिलादी । लेकिन् रोगी वारवार बेहोश होने लगा तव डॉक्टर वावूने एक आदमीको लक्ष्य करके कहा—"वावू साहेव ! आप तहसीलदार साहवको बुला लीजिये मरीजकी हालत अच्छी नहीं है । मरनेके वक्तका इजहार "dying declaration" लिख लेना ठीकहै ।

रोगीकी दशा ऐसीही थी कि, फिर वात दुहराही नहीं गयी आदमी भेजा गया तहसीलदार साहव आये । और बडी कठिनतासे इजहार लिख लिया गया । इसके वाद चमेलीने गिरजाको वुलाकर माफी माँगी । और अपने वचेको उसकी गोदमें देकर रोती हुई जन्मभरके लिये विदा हुई । एकवार रामप्रसादको भी देखनेका इरादा किया । लेकिन् जव रामप्रसाद उसके आगे आकर खडे हुए तव चमेली जीतीथी या नहीं सो कोई पहँचान नहीं सका ।

पैंतीसवाँ अध्याय ।

गाँवमे तहलका पडगया । पुलीसके छोटे और वडे हुजूर रामप्रसादके घर पहुँच गये । लालपगडी—वालोंसे घर घिर गया । पहले थानेवालोंने रेखाको गिरफ्तार किया पुलीसवाले इतनी सुगमतासे रेखाको नहीं पकड पाते अगर उसी रातको झूना उसके घर न पहुँचती । झुनियाने रातको रेखाके घर जाकर देखा तो आधी रातको

भी चिराग जल रहा था। इतनी रातको चिराग जलाकर वह क्या कररहीहै!झुनियाँने जँगलेके पास जाकर देखा।जो कुछ अच्छी और मूल्यवान चीजे हैं उन्हे एक गठरीमे बाँधकर रखरही है। वह भागनेकी फिकरमे है, यह बात जानना झुनियाँको बाकी नहीं रहा। उस वक्त झुनियाँने बडी चालाकी की, धीरेसे दरवाजेकी साँकल बन्द,करदी। ऊपरसे ताला भी लगा दिया था।

अब जङ्गलेके पास मुँह करके बोली--"अरे काहे हो ? इतनी रातको चिराग जलाके क्या कर रही हो ?"

झुनियाकी आवाज सुनकर रेखा चौंक उठी। पहले बहुत डरी, फिर माया छिपाकर बोली--"का करूं बेटी दाँतकी व्यथासे बहुत दुःखी हूँ। कहीं गूलरका दूध नहीं मिलता इसीसे बैठी २ दवा लगा रही हूँ"।

रेखाकी बात सुनकर झुनिया हँसपडी। उसका वह यंत्रणा-सूचक स्वर सुनकर कोई बिना हँसे नहीं रहेगा। झुनियाँ हँसकर बोली--"और वह गठरीं कांहेके बन्हातां ?"

रेखाने मलीन वदन होकर कहा--"इसी गठरीमे तो बेटी दवा रक्खी थी।"

झुनिया फिर हंसकर बोली--"अच्छांतो बैठीं २ दवाई लगाओं पुंआं ! मै घरं जांवीं हूँ।"

झुनियाका हँसना रेखाको अच्छा नहीं लगा तो भी विषण्ण मुँह एक बार प्रसन्न करके बोली--"बेटी इतनी रातको कहाँ आयी थी?"

खिल खिलाकर झुनिया हँसपडी और बोली--"जो मनमें सोचकर आई थीं फुंआजीं ! सो कांम होगे आं। अंव जांतीं हूँ।"

रेखाने फिर पूछा--"क्या सोचकर आयी थी ?"

झुनिया अब नहीं हँसती। हँकडकर बोली--"काम ? यहीं था तेरा संराध करना।"

रेखाका प्राण उड़गया लेकिन् फिर सॅभलकर बोली-"काहे? मैंने क्या किया है?"

झूना अबके गरजकर बोली-"अरे तूने जहर खवाके आदमीको मार डाला है। सीधे सादे आदमीको दवाई खिलाकर पागल किया है। अभी करनेको बाकीही है?"

रेखाने रास्ता नही छोडा फिर करुणास्वरसे बोली--"परमेश्वर जानता है मैं एकमे भी दोषी नहीं हूँ।"

झुनियाँ फिर गरजी--"अरे तू भगवान्का नाम किस मुँहसे लेती है। तेरे ऐसी कुकर्मी दुनियाँमे कौन होगी। जिसका खाती है उसीका सर्वनाश करती है। तेरी ही कुमंत्रणासे तो हमारे मालिकका घर मिट्टी हुआ है?"

थोडी देरतक रेखा जाने क्या सोचती रही। अबतक उसने समझा नही था कि, दरवाजे पर ताला वन्द है। न जाने एक व एक उसके मनमें क्या आया? चिल्लाकर बोली--"अरे विपत मारी! इतनी रातको तू हमसे झगड़ा करने आयी है रे!, दूर हो हमारे दरवाजेसे नहीं अभी झाड़ू मारके सब जहर उतार दूँगी।"

रेखाने अब अपना रूप प्रगट किया है। लेकिन् झुनिया डरनेवाली नहीं है। वह मीठी भाषामें भूत झाडनेका जोगाड करने लगी। कोपके मारे कॉपती हुई रेखा वाहर होनेको चली। देखा तो दरवाजा वाहर से वन्द था। अब रेखाको होश आया। मारे डरके जीव सूख गया। अपनेको विकट जालमें फॅसा देख झुनियासे बिनती करके कहने लगी--"जान दे बेटी जान दे! मेरा मुँह जरे! न जाने कैसी जीभ है बेकाम गुस्सेमे आके तुम्हें कितनी बातें कह गयी। बेटी अब माफकर। दरवाजा खोलकर भीतर आ। इतनी रातको कहाँ जायगी? बेटी यहीं आके सो रह!"

झुनिया जब कोपमें आयी है तब भला वह जल्द कहाँ ठण्डी

होने वाली है । उसीतरह दाँत पीसकर बोली—"मै काहेको दर-वाजा खोलूँ थानेवाले आके दरवाजा खोलेंगे। आज तूने बडा ढंग किया था मेरेही हाथमे हथकडी डलवाना चाहती थी । दूधमें जहर देकर हमारेही हाथसे बडीको खिलाकर मारनेका मतलब था ! काहे ? सो अब चमेली ने सब बात जाहिर कर दी है । अब जा फॉसीके काठपर लटक ! बडी २ बाते मारती फिरती थी और इतना करके भीतरही भीतर सबको हैरान करती थी । अब भी देखो बदमाशीकी बात नहीं भूलती, कहती है दरवाजा खोलो बाहरआवे । हम दरवाजा खोले और तू बाहर आवे और धोखा-देकर भागजाय कि, सब बोझा हम पर पडे । "

यह कहकर झुनिया वहाँसे चली गयी । रेखा अब निराश हो गयी । उसकी सब चालाकी भूल गयी। कठघरेमें बन्द बाघिनकी तरह घरहीमे इधर उधर छटपटाने लगी । अब उसके भागनेकी तदवीर नहीं है, रेखा अपना शिर अपने हाथसे पीटती है ।

रेखाने लात मारकर दरवाजा तोडना चाहा लेकिन् तोड न सकी । जङ्गला पकडकर खींचना चाहा वह भी नहीं बना अब कोई उपाय बाकी नहीं रहा. थोडीही देरमें पुसीलवाले पकड लेंगे इस चिन्तासे वह मरीजाने लगी । अचके रेखा चिल्ला उठी।

इस सूनसान रातमे रेखाका वह विकट गर्जन वह बिकट चीत्कार बडाही भयङ्कर था । लेकिन् इस अवस्थामें वह बहुत देरतक न रहसकी. इतनेमे पुलीसवालोने आकर दरवाजा खोला और रेखाको पकडा । उसकी हालत देखकर सबने उसके अपरा-धकी गम्भीरता समझली । सबेरे जब पुलीसवालोंसे पकडी जाकर रेखा गॉवसे होकर थानेमे जा रही थी तब गाँवके छोटे बडे बूढे जवान मर्द औरत सब उसको धिक्कारने लगे। अबतक रेखासे सब डरते थे।कोई उसको एक बात कहनेका साहस नहीं करता था।

लेकिन् आज अब उससे कोई नहीं डरता। रेखा विषदन्तहीन सॉपकी तरह फुफुआती जा रही थी ॥

पुलीसने मुकद्दमेकी चालान इलाहाबादको करदी। रामप्रसाद अबतक अच्छी तरह आराम नहीं हुए थे। इस कारण पडोसियोंकी पैरवी होने लगी सरकार मुदई हुई। रामप्रसादका लडका आराम होगया, इस कारण खून करनेके उद्योगका अपराध लगाकर मुकद्दमेका विचार होने लगा। गवाहोंके इजहारपर मुकद्दमा सेशनमें गया। बयानसे रेखाका अपराध साबित हुआ। जजने जिन्दगी भरको कालेपानीकी आज्ञा दी. इस पिशाचिनीका मुकद्दमा देखनेके लिये हर पेशीको कचहरीमें भीड लगी रहती थी। हम लोगभी आज रेखाको पहँचान नहीं सके। मुकद्दमेके विचारके समय उसको दो महीने तक हवालातमें रहना पडा था। इससे उसका चेहरा बहुत कुछ बदल गया था। ब्राह्मणकन्या रेखाकी हवालातहीमे मृत्यु क्यो न होगयी? लेकिन् हो कैसे? अभी उसके पापका प्रायश्चित्त थोडे पूरा हुआहै? उसका अवशेष जीवन कैदमे काटे विना धर्मपथभ्रष्ट होने विना और उसको दूसरे जन्ममे क्या होगा? अनन्त नरक।

छत्तीसवाँ अध्याय।

रामप्रसाद अब अच्छीतरह आराम होचुके है। लेकिन् और तेलका अवतक वैसेही व्यौहार होता जाता है। वैद्य लोग कहते हैं कि, अभी एकवर्ष तक उन्हें इसी नियमसे रहना चाहिये। चमेलीकी अकाल मृत्युके साथ रामप्रसादकी आरोग्यताका कुछ सम्बन्ध है या नहीं सो हम नहीं जानते। लेकिन् चमेलीके मरते समय जब रामप्रसाद उसके पास आकर खडे हुए थे तभीसे उनका चित्त ठिकाने होने लगा था। कुछ देर तक खडे रहकर

रामप्रसाद चमेलीका मृत शरीर देखते रहे और मरनेकी कथा उसकी आदिसे अन्त तक सुनी फिर धीरे धीरे वहांसे बाहर आये।

बाहर आकर रामप्रसादने पुलीसवालोसे जो जो बाते की वह सुनकर सब लोग अचम्भित हुए।थानेके दारोगाने जब पूँछा-"आपकी छोटी स्त्रीके जहर खाकर मरनेका समाचार आप कुछ जानते है?" तब रामप्रसादने उसी वक्त कहा—"दूधमे जहर देकर हमारी बडी स्त्रीको मार डालनेके लिये रेखाने तदवीर की थीं लेकिन् संयोगकी बात है कि, वह उसे नहीं खासकी छोटीके लडकेने उसमेसे थोडासा खाया और अचेतहो पडा । इस दूधमे जहर डालनेकी बात हमारी छोटी स्त्रीके सिवाय और किसीको मालूम न थी. जब छोटी स्त्रीने वहाँ जाकर सब हाल सुना और लडकेके बचनेका भरोसा नही देखा तब बचाहुआ दूध आपभी पीगयी लडका डॉक्टरकी दवासे बचगया।वह उसी जहरसे मरगयी जो दूसरेकी बुराई करता है उसकी बुराई पहले होती है। किसीने कहाभी तो है। "खाड खनै जो औरको ताको कूप तैयार।"

रामप्रसादको पागलपनमे भी कभी कभी होश आजाता था। लेकिन् इस घटनाके बाद वह पुलीसके सामने इतनी बातें कह सकेंगे यह किसीको भरोसा नहीं था। इस समय थानेदार साहबने कहा कि, "इस लाशको हम चालान करेंगे। विना डाक्टरकी जाँच हुए आप लोग इसका सत्कार नहीं करने पावेगे।"

रामप्रसाद-"आप इस लाशको लेकर जो चाहे करें हमको कुछ उज्र नहीं है।"

"लेकिन् गाँवके लोगोने लाशकी चालान नही होने दी। जरूर इसके लिये पुलीसको खुश करना पडा था। लाश जलानेका हुक्म होने पीछे और लोगोंके साथ रामप्रसादभी श्मशानमे गये

थे । वहाँ खुद उन्हींके हाथसे दाहकर्म हुआ लेकिन् कोई पागल-पनका चिह्न नहीं देखा गया ।"

दाहकर्म समाप्त हुआ । सबके साथ रामप्रसाद घर आये। आनेपर एक पडोसीने रामप्रसादको समझाना शुरूअ किया--"नसीवमें जिसके जो होता है उसको वह भोगनाही पडता है। तुम इसके वास्ते कुछ सोच मत करना" ।

रामप्रसाद मुसकुराकर बोले--"मैं उसके लिये कुछ नहीं सोचता । अब अपने बारेमें सोचता हूँ । मैं किस गुणसे भूला था यही मुझे सोच है किस कारणसे घरकी लक्ष्मीको लात मारकर मैंने आजतक पिशाच्चिनीकी पूजा की यही विचारता हूँ।"

जब रामप्रसादको अपने बारेमें इतना सोचने विचारनेकी चिन्ता हुई तब सबने समझ लिया कि, रामप्रसाद अब आराम होगये । इसीसे हमने कहाथा कि, चमेलीकी अकालमृत्युके साथ रामप्रसादके आराम होनेका कुछ सम्बन्ध है या नहीं. जो हो लेकिन् उसकी दूसरी रातको गिरजा और रामप्रसादसे जो बातें हुई थीं सो सुनिये।

रामप्रसादने पहलेही कहा--"प्यारी ! मैं इतनेदिनतक पिशाच्चिनीकी मायामें भूलाहुआ था । मेरी सुधि बुधि जाती रही थी। अब वह पिशाच्चिनी नहीं है न उसकी माया है । अब मुझे ज्ञान हुआ है" ।

गिरजा लम्बी साँस लेकर बोली--"वह तो सती लक्ष्मी भाग्यवती थी,उसको पिशाच्चिनी न कहो । नाथ ! जो तुम्हारे जैसे स्वामी और एक मात्र पुत्रको रखके मरी है उसकी ऐसी भाग्यवती कौन होगी ?"

रामप्र०--"उसका व्यौहार ऐसा था कि,उसे पिशाच्चिनी कहन

चाहिये । उसने तुम्हारे साथ क्या क्या किया सो विचारो तो ?"

गिरजा--"वह अब स्वर्गको गयी है । हमारी बात सुनने नहीं आवेगी लेकिन् मैंने आजतक उसका कुछ कुसूर नहीं देखा । वह अभी अबोध लडकी थी । जिसने जो बताया उसने वैसाही किया, इसमें उसका कुछ दोष नहीं है ।"

राम०--"अगर इसमें उसका दोष नहीं है तो सब दोष हमारा है।"

गिरजा अबकी गरज उठी और बोली--"तुम्हारा दोष ! कौन कहताहै ? ऐसा जो कहेगा, उसको नरकमे भी जगह नहीं मिलेगी। तुम्हारे समान स्वामीका कुछ दोष होही नहीं-सकता ।"

धन्य गिरजा ! तुम धन्य हो !!

रामप्रसाद स्थिरदृष्टिसे गिरजाके मुँहकी शोभा देखते थे । हठात् उनके मुँहसे निकल गया--"तो फिर किस का दोष था?"

गिरजा बोली--"सब हमारे नसीबका दोष था । नसीब बिगडे बिना तुम्हारे समान स्वामी पाकर भी स्वामीके सुखसे वञ्चित कैसे होसकती थी ?"

रामप्रसादने लम्बी साँस लेकर कहा--"तुम नसीबको दोष देकर हमको सन्तोष देना चाहती हो, लेकिन् ऐसा नहीं होगा । अब मैं पागल नहीं हूँ मैने सब समझ लिया है । सबके पापकी सजा तो हो चुकी लेकिन् हमारे पापका अभी कुछभी प्रायश्चित्त नहीं हुआ है।"

गिरजा विस्मित होकर बोली--"तुम्हारा पाप क्या ?"

"अगर प्यारी तुम माफ करो । हमको माफ करो" कहते कहते रामप्रसाद रो उठे गिरजा अपने अञ्चलसे रामप्रसादकी आँखें पूँछकर बोली--"नाथ ! अगर तुमपर हमारे विश्वासमे जराभी कमी हुई हो तो भगवान् करे मैं दूसरे जन्ममें तुमसे वञ्चित होऊँ । इससे भला और कसम क्या होगा ?"

इतना कहते कहते गिरजाके गालोंपर भी आँसू दीखपडा। रामप्रसादने तुरंत अपने हाथसे आँसू पोछ दिया। गिरजा फिर बोली-"नाथ! इसमें तुम्हारा क्या दोष है? मैंनेही तो तुमको दूसरा व्याह करनेको कहा था क्या मुझको वह बातें याद नहीं हैं। मैंने ही तो कहा था कि, तुम्हारी सैकडोंमे मैं एक दासी होनेपर भी अपनेको धन्य मानूँगी। इसमें तुम्हारा क्या पाप है?मैं ही इसमें तो पापिनी हूँ। नहीं तो उस समय तुम्हे सुख होनेसे मैं भी सुखी क्यों न हुई?"

रामप्रसादने लम्बी साँस लेकर कहा-"तुमको भूलकर प्यारी मैं क्या सुखी हुआथा? मैं तो एक दिनभी सुखसे नहीं बितासका। हमको तो वह सब बातें सपनेसी याद आ रही हैं। माने लडका लडका करके यह सब सत्यानाश किया था. अब लडका पाकरही मै चतुर्भुज हुआ हूँ"

गिरजा-"माका कुछ दोष नहीं है सब मा ऐसाही करती हैं और सुनते भी हैं कि, व्याह लडकेही बच्चेके लिये कियाजाता है"

राम०-"और रेखियाने सच पूँछो तो हमारा सब घर मिट्टी करदिया। अबकी वह अपने कर्मका खूब फल भोगेगी।"

गिरजा-"मै तो प्रभू! किसीको दोष नही देती प्रारब्धही सबकी जड है जो नसीबमें लिखा है उसको कोई मिटा नहीं सकता. फुआका भी कुछ कसूर नहीं. वह बेचारी इस वक्त बडी विपत्तिमे पडी है परमेश्वर उसकी रक्षा करे।"

रामप्रसाद मानो पागलकी तरह बोल उठे अरे! तुममे इतना गुण है! दुश्मनपर भी इतनी दया! मै बडा नराधम हूँ। नहीं तो उस कुलाङ्गारिनीकी मायामें कैसे भूलता? और तुम

जैसी लक्ष्मीको क्यों भुला देता ? मैं तुम्हारा इतना अनादर करता ? अब मैं यही आशीर्वाद करताहूँ--"

रामप्रसाद वेगवान् हृदयका वेग नहीं रोक सके आशीर्वादके बदले गिरजाको आलिङ्गन करके उसका मुँह चूमने लगे और गिरजा स्वामीके आदरसे गद्गद होकर प्रार्थना करने लगी--"नाथ ! तुम मुझे यही असीस दो कि, मैं जैसे तुम्हारे आदरसे सुखी होती हूँ वैसेही तुम्हारे निरादर करनेसे भी सुखी होऊं. इससे बढकर हमारे लिये और आशीर्वाद नहीं है ।"

रामप्रसादने मनहींमन क्या आशीर्वाद किया सो हम नहीं जानते । लेकिन् फिर गिरजाका मुखचुम्बन करते हमने अलबत्ते देखा था ।

सैंतीसवाँ अध्याय ।

रामप्रसादके लडकेका नाम सुबोधसिंह है. सुबोध इस समय पाँच बरसका है, लेकिन् सुबोध यथार्थमे सुबोध है । ऐसा धीर और शांत लडका देखनेमे नही आता । सुबोध मा बाप और पितामहीका जीवनस्वरूप था । विशेषतः गिरजा यदि क्षणभर भी सुबोधको नही देखती तो चारों ओर अन्धेरा छा जाता था । सुबोध भी "मा मा" कहकर अज्ञान होपडता था। पुत्रपर माताका स्नेह जो सबसे अधिक होता है उसके अनेक उदाहरण मिले है । लेकिन् सौतेली मा (मयभा) सौतके लडकेको इतना प्यार करती हुई नहीं देखी गयी ।

रामप्रसादके घरमे अब आनन्दकी सीमा नहीं है. गिरजाके बापकी दी हुई धन सम्पत्ति सब अब रामप्रसादके हाथ आयी है। रामप्रसादने उसकी आमदनीसे और जगह जमीन खरीद ली है।

अब रामप्रसाद् धनमे एक बहुत बडे आदमी होगये हैं। फिर जिस घरमे गिरजासी लक्ष्मी घरनी है उस घरमे लक्ष्मीका टिकना तो अवश्यही है। रामप्रसाद्की माका स्वभाव भी अब बदल गया है. अब वह पहलेकी तरह झगडा कलह और क्रोध नहीं करती. अब वह जिस तरह अपने घरकी मालिकी करती हैं उसी तरह अपने वैरी पर भी कर्तृत्व करती हैं और रामप्रसाद्के घरमें आनन्द्का एकमात्र आधार सुबोधसिंह है। सुखमे जिस बातका अभाव होता है उसकी पूर्ति यही सुबोध करता है, धन्य शिशु सुबोध! धन्य तुम्हारी क्षमता ! !

एक दिन रामप्रसाद्ने गिरजासे कहा—"क्यों प्यारी! आजकल तो तुम्हे नौकर नौकरानीकी कमी नहीं है फिर तुम खुद इतनी मिहनत करके अपना शरीर क्यों मिट्टी कररही हो ?"

गिरजाने मुसकुराकर जवाब दिया—"मिहनत करनेसे तो शरीर मिट्टी नहीं होता शरीर और अच्छा रहताहै।"

रामप्रसाद् फिर कहने लगे—"इतनी मिहनत करनेसे शरीर अच्छा थोडे रहता है तुमको इतनी मिहनतका क्या जरूर है ?"

गिरजा फिर हँसकर बोली—"मुझे सब काम अपने हाथसे किये बिना सन्तोषही नहीं होता"।

रामप्रसाद् -"यह ठीक है,लेकिन् रोज रोज इतनी मिहनत ठीक नहीं है उसपरसे रोटी पानी करनेकी मिहनत ......"

गिरजा--"दूसरेके हाथका बनाया भोजन तुम्हें खिलाना हमें अच्छा नहीं लगता इसीसे अपने हाथसे बनाती हूं फिर तुमको भोजन करानेसे जो मुझे आनन्द मिलता है उससे अधिक सुबोधको खिलानेसे मिलता है। मैं अपने सिवाय किसीके हाथसे सुबो-

थको खिलाना पसन्द नहीं करती और तो औरही है मै माजीका भी विश्वास नहीं करती ।"

इतनेमे रामप्रसादके मनमें कौनसी वात याद आयी मुसकुराकर वोले "अच्छा यह तो वतावो ! तुम हमको अधिक प्यार करती हो कि, सुवोधको ?"

गिरजा इसका तुरंत कुछ जवाव न देसकी लेकिन् कुछ देरतक सोचकर वोली—"दोनों आदमियोको वरावर प्यार करती हूँ" ।

राम०—"वरावर ! कुछभी कमवेस नही ?"

रामप्रसादकी मुसकुराहटके साथ इस वातको सुनकर गिरजा वडे असमञ्जसमे पडी एक वातके विचार करनेसे रामप्रसादका प्यार अधिक होता है दूसरी वातसे सुवोधका पलडा भारी होता है । अव गिरजा क्या जवाव देगी ? लेकिन् रामप्रसाद किसी तरह माननेवाले नहीं है । वह विना जवाव लिये नहीं छोडते लाचार होकर गिरजाको जवाव देनाही पडा । "तुम्हींसे तो सुवोध मिले हैं इस कारण तुम जड हो और सुवोध डाल(टहनी) हैं । अगर तुम्हारा खानापीना एक दिन मैं न देखूं तो दुःख नहीं होगा । लेकिन् सुवोधको एक वक्तभी अगर अपने हाथसे मै न खिलाऊं तो जानपडता है आज मेरे बच्चाका भोजनही नहीं हुआ । तुम वहुतसे काम काजमें वाहर वहुत रहते हो । तुमको देखनेके लिये हमारा मन वहुत व्याकुल होता है सही; लेकिन् जव सुवोध वाहर खेलने जाता है और आनेमे कुछ देर होती है तो मेरा कलेजा फटने लगता है अकुलाहटके मारे कुछ सूझता नही है ।

गिरजाका जवाव सुनकर रामप्रसादके आनन्दकी सीमा नहीं रही । इस जगत्मे मनुष्य सवकी हिंसा करताहै, किन्तु पुत्रकी हिंसा कोई नहीं करता. सव लोग चाहते है कि, हमारा लडका

इससे भी बुद्धिमान्, विद्वान् और बडा हो। रामप्रसाद आनन्दके मारे अधीर होकर मुखचुम्बन करने लगे। गिरजाका आनन्दसागर और उथल उठा। दोनोंके आनन्द वेग थम्हनेके पहलेही सुबोध वहाँ आ पहुँचा। गिरजाने दौडकर सुबोधको गोदमें लेलिया। और स्वामीका मुँह चुम्बन करके स्वामीके चुम्बन का पलटा लेने लगी। लेकिन् यह क्या ! आज सुबोधका मुँह इतना उदास क्योंहै? जो सुबोध माकी गोदमें आतेही आनन्दके मारे वडे शत्रुको भी मोहित करलेता था। आज उसकी हँसी कहां गयी ? आँखें क्यों डबवायीं हैं। गालोंसे आँसू क्यों ढरक रहे हैं ! ऐसी हालतमें गिरजा क्या स्थिर रह सकती है ?

पुत्रका यह हाल देखकर गिरजाका प्राण सूख गया उसके मुहँसे बात नहीं निकली। रामप्रसादने व्यग्र होकर पूँछा–"क्यों बेटा ! क्या हुआ ?"

सुबोध आपकी बातका जवाब न देसका। माता का गला पकडकर रोने लगा। रामप्रसाद और व्यग्र हुए। अपने हाथसे सुबोधके आँसू पोंछकर बोले–"क्यो बेटा ! क्या हुआ है ? बोलो क्यो नहीं ? किसीने तुमको मारा है या गाली दिया है ? "

अबके बडे दुःखसे गिरजा बोली–"नहीं ! हमारा सुबोध ऐसा नहीं है किसीने सुबोधको मारा नहीं न गाली दिया है ! हमारा जी बहुत घबराता है न जाने बचाको क्या हुआ है ?"

बापके मनमें इस तरह की कुछ शंका नहीं थी किन्तु माका प्राण पुत्रकी पीडासे सदा शंकित रहता है गिरजाकी बात सुनकर रामप्रसादका चित्त और व्याकुल हुआ। घबराकर बोले–"काहे बेटा ! तुम्हारा शरीर कैसा है ?"

मा बापके वाह्याकारसे उनके मनकी दशा बालकको भी सम-

इनेसे बाकी नहीं रही । सुबोध रोकर बोला--"नहीं मा ! रोवो मत मेरा शरीर अच्छा है ।"

बेटेकी बातसे मा बापका चित्त कुछ स्थिर हुआ गिरजा सुबोधका मुँह चूमकर बोली--"तो क्या किसीने तुमको कुछ कहा है?"

माकी बात सुनकर बालककी आँखे फिर डबडबा आयीं । रामप्रसादने आग्रह करके कहा--"काहे बेटा ! किसने तुमको क्या कहाहै ?" सुबोधने अबके आँसू पोछते २ कहा--"नहीं बाबू रामनेवाज और गोपालके साथ मैं खेलरहा था । जाने माके वास्ते कैसाजी होने लगा मैं खेल छोडकर चला आता था । वह सब बोले कि, अभी मतजाव मैंने कहा अब मैंनहीं खेलूँगा । माके वास्ते न जाने कैसाजी हो रहा है । तब वह बोले कि, तेरी मा तो मरगयी । जिसको मा कहता है वह तो तेरी मयभा है । काहे मा ! तू मेरी मा नहीं है मयभा है ?"

अन्तकी बात कहकर सुबोध डबडबायी आँखोसे माकी ओर देखने लगा. गिरजाका सिर इस बातसे चक्कर खाने लगा. रामप्रसादने चटबेटेकी बातका जवाब दिया--"नही बेटा ! नेवाज और गोपाल झूठ कहते हैं । जो मरगयी वह तुम्हारी मा नहीं वही मयभाथी यही तुम्हारी मा है" ।

बालकका मुँह प्रफुल्ल हो आया । हँसते मुँहसे बोला--"बाबूजी ! मयभा कौन कहाती है ?"

रामप्रसादने कहा--"माके वैरीको मयभा कहते हैं"

बालकका आनन्द चौगुना बढगया । अबके सुबोध हँसकर बोला "तो मा ! मैं नेवाज और गोपालको यह बात कह आऊँ ?"

किन्तु माने बालकको नहीं जाने दिया ! स्नेहपूर्व्वक पुत्रका मुख चुम्बन किया ।

रामप्रसादका दिन सुखसे बीतने लगा घरसे कुमति और विपत्ति दूर हुई । आनन्दही आनन्द चारो ओर बरसने लगा । गिरजा स्वामी और पुत्रके प्यार तथा सासकी सेवामे दिन विताने लगी । रामप्रसादकी माका समय नित्य स्नान ध्यान पूजापाठ और व्रतादि शुभकर्म्मों में बीतने लगा । रामप्रसादका उजडा हुआ घर फिर वसा । गयी हुई शोभा फिर पलट आयी और पहलेसे भी यह गहगहा उठी । परमेश्वरने जैसे उनका दिन फेरा वैसे सब का फेरे ।

डबल बीबी समाप्त.

पुस्तक मिलनेका पता–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.